



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 145]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 3, 2006/आषाढ़ 12, 1928

No. 145]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 3, 2006/ASADHA 12, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

( वाणिज्य विभाग )

( पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय )

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 जुलाई, 2006

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण., चीनी ताइपेई, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और कोरिया गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नायलोन फिलामेंट यार्न के आयातों से संबंधित ।

सं. 14/5/2005-डीजीएडी.-1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:-

क. प्रक्रिया

1. नीचे उल्लिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :-

(i) दिनांक 4 जुलाई, 2005 को, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) ने, उपर्युक्त नियमावली के अंतर्गत, चीन जन.गण., चीनी ताईपेई, मलेशिया, इंडोनेशिया थाईलैंड और कोरिया गणराज्य (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नायलोन फिलामेंट यार्न के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत के बारे में भारत के राजपत्र में एक सार्वजनिक सूचना (जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना) घोषित की थी । पाटनरोधी जांच घरेलू उद्योग की ओर से मै. मोदीपोन लिमिटेड मोदीनगर, जेसीटी लि., होशियारपुर, श्री सिंथेटिक्स

लिमिटेड उज्जैन और गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कंपनी लि. वडोदरा (आवेदक) जिनका उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन का प्रमुख हिस्सा है से प्राप्त आवेदन के अनुसार की गई थी। आवेदन के साथ उक्त उत्पाद के पाटन और इससे हुई वास्तविक क्षति के साक्ष्य थे जिन्हें जांच शुरू करने का औचित्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त समझा गया था।

(ii) जांच शुरूआत से पहले; प्राधिकारी ने संबंधित नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले आवेदक द्वारा किए गए पूर्ण दस्तावेज युक्त आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को अधिसूचित किया था।

(iii) संबंधित नियम 6 के उप-नियम (2) के अनुसार प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रतियां ज्ञात निर्यातक उत्पादकों, आयातकों, औद्योगिक एसोसिएशनों संबंधित देशों की एजेंसियों और आवेदकों को अग्रेषित की और उन्हें लिखित रूप में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।

(iv) उपर्युक्त नियम 6 के उप नियम-3 के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन की एक-एक प्रति उपलब्ध कराई थी। उपर्युक्त नियम 6 के उप नियम (4) के अनुसार प्राधिकारी ने संगत प्रश्नावली की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई। नई दिल्ली में संबद्ध देश के दूतावासों को भी जांच की शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने का अनुरोध करने के लिए कहा गया था।

(V) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों से संगत सूचना प्राप्त करने के लिए प्रश्नावलियां भेजी थी :-

#### इंडोनेशिया:

पी.टी. कोलोन आईएनए  
इंडोनेशिया

पी टी जी टी पेट्रोकेम. इंडस्ट्रीज टीबीके  
जकार्ता, इंडोनेशिया

पीटी एवरसाइनीटेक्स  
इंडोनेशिया 10250

पीटी जेमा न्यूसा परकासा  
इंडोनेशिया

पीटी टोरे इंडस्ट्रीज इंडोनेशिया (टीआईएन)  
61-62, जकार्ता 12069  
इंडोनेशिया

शिता नायलोन उतामा  
इंडोनेशिया

थाइलैंड  
सियाम टायर कोर्ड कं. लि.  
थाइलैंड

थाई बरोदा इंडस्ट्रीज लि.  
थाइलैंड

एशिया फाइबर पब्लिक कंपनी लि.  
वैकाक  
थाइलैंड

थाई टफिटा कंपनी लि.  
वैकाक, 10110 थाइलैंड

चीन जन.गण.

कोलोन कार्पोरेशन  
वीजिंग, चीन

कोलोन नेनजिंग कं. लि.  
जियांगशू प्रोविन्स, चीन

झियामेन टॉग्लून इंडस्ट्रीयल कं. लि.  
जियामेन 361100  
चीन जन.गण.

यू जियांग हेंग यू टैक्सटाइल कं. लि.  
जियांगशू प्रोविंगस  
चीन

जिनान जुडा फाइबर कं. लि.  
जिनान शेनडांग 250100  
चीन

ग्वांगडोंग जिनहुई मीडा यायलोन कं. लि.  
ग्वांगडोंग 529100  
चीन जन.गण.

शेनडोंग डाचेंग कैमिकल इंडस्ट्री ग्रुप कं. लि.  
26 जिबो शेनडोंग  
चीन

बीएसएफ-हुआ युआन नायलोन कं. लि.  
चीन

क्विंगडाओ जोंगटाय ग्रुप कंपनी  
चीन

गाओयाओ हुआजिन ग्रुप कं. लि.  
ग्वांगडोंग  
चीन

ताइवान

फारमोसा कं. लि.  
640 ताइवान आरओसी

एसीलोन कैमिकल्स एंड फाइबर कं. लि.  
ताइवान

चुंग शींग टैक्सटाइल कं. लि.  
ताइवान

जिंग शेन्ग इंडस्ट्रियल कं. लि.  
ताइपेई, ताइवान

फू-टा टेक्सटाइल कं. लि.  
ताइचुंग हिसिन ताइवान

### मलेशिया

आलोन कार्पोरेशन  
मलेशिया 50200

### कोरिया आरपी

ह्योसंग कार्पोरेशन  
सियोल 100-110, दक्षिण कोरिया

कोहापा कार्पोरेशन  
कोरिया आर.पी.

(vi) आठ निर्यातकों/उत्पादकों ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर पर्याप्त रूप से और जांच शुरुआत की सूचना के अनुसार दिया है :-

1. मै. जिन्ना जुडा फाइबर कं. लि.  
जिनान शेनडोंग 250100  
चीन जन.गण.
2. मै. टीकेआई, कोरिया आर.पी.
3. ह्योसंग कार्पोरेशन, कोरिया आर.पी.
4. हुआलोन कार्पोरेशन  
मलेशिया 50200
5. मै. सुनटैक्स, ताइवान
6. मै. ली पेंग एंटरप्राइज कं., ताइवान
7. मै. एशिया फाइबर्स  
थाईलैंड
8. मै. थाई टाफेटा कं. लि.  
बैंकांक, 10110 थाईलैंड

उपर्युक्त के अलावा, मै. कोलोन इंडस्ट्रीज कोरिया और मै. थाई सिंथेटिक फाइबर मैन्युफेक्चरर्स एसो., थाईलैंड ने जांच शुरुआत संबंधी सूचना का उत्तर प्रस्तुत किया है ।



- (vii) आयातक की प्रश्नावली के साथ जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति आवेदन में सूचीबद्ध विभिन्न आयातकों को भी भेजी गई थीं। तथापि आयातकों की प्रश्नावली की पद्धति एवं तरीके के अनुसार केवल मै. स्काई इंडस्ट्रीज, मुंबई, मै. डोरीवाला इंडस्ट्रीज, सूरत और मै. स्पाइका इलास्टिक प्रा.लि., पुणे तथा अन्य से उत्तर प्राप्त हुआ है। तथापि, स्मरण पत्र दिए जाने के बावजूद अत्यंत कम आवेदकों ने बार-बार जांच में भाग लिया।
- (VIII) प्राधिकारी ने चीन जनगण, चीनी ताइपेई, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड तथा कोरिया जन.गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित नाइलोन फिलामेंट यार्न के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच के संबंध में अपनी 3 फरवरी, 2006 की अधिसूचना द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए थे तथा हितबद्ध पक्षकारों से इसके प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में उनके विचार बताने का अनुरोध किया था। प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों जिन्होंने प्रारंभिक जांच परिणाम पर अपने विचार, यदि कोई हों, को प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था। उन्हें पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रारंभिक जांच परिणाम की एक प्रति प्रेषित की। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम की प्रति हितबद्ध देशों/क्षेत्रों के दूतावासों को प्रारंभिक जांच परिणामों पर उनके विचार जानने का अनुरोध करते हुए प्रेषित की। आयातकों में से किसी ने भी चाहे गए ब्यौरे के अनुरूप आयातक प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया था। तथापि, कुछ आयातक तथा प्रयोक्ता संघ नामतः एफआईएसडब्ल्यूआई, गुजरात ने जांच शुरूआत अधिसूचना का जवाब दिया तथा कुछ टिप्पणियां प्रस्तुत की थीं जिन्हें जांच में उनके संगत होने की दशा में ध्यान में लिया जाएगा।
- (IX) प्राधिकारी ने उसके द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा;
- (X) प्राधिकारी ने 20 मार्च, 2006 को एक सार्वजनिक सुनवाई हितबद्ध पक्षों को मौखिक रूप से सुनने के लिए आयोजित की जिसमें घरेलू उद्योग तथा हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में इस प्रकार हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर विचार किया है। प्रारंभिक जांच परिणाम की घोषणा के पूर्व हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों, जिन्हें पूर्ववर्ती अधिसूचित प्रारंभिक जांच परिणाम में सामने लाया गया है, उन्हें संक्षिप्तता के लिए यहां दोहराया नहीं गया है। तथापि, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों पर अंतिम जांच परिणाम में उपयुक्त रूप से विचार किया गया है। प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की है। क्षति के संबंध में अतिरिक्त ब्यौरे आवेदकों

से मांगे गए थे जो प्राप्त भी हो गए थे । प्राधिकारी ने चीन गण. से मै. जिनान जूडा को छोड़कर संबद्ध देशों से अतिरिक्त सूचना तथा उनका सहयोग मिलने के पश्चात निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना की मौके पर जांच की । यह नोट किया जा सकता है कि मै. जिनान ने प्रस्तुत की गई सूचना की जांच के अपने प्रस्ताव को तब वापस ले लिया था जब प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों से उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के सत्यापन के लिए उनकी इच्छा व्यक्त करने के लिए कहा था । बाद में, उन्होंने अपने निर्णय को फिर बदला तथा प्राधिकारी से आंकड़ों की जांच करने का अनुरोध किया लेकिन इस बात पर विचार करते हुए कि पाटनरोधी जांचों समयबद्ध प्रकृति की होती हैं, तब तक काफी देर हो चुकी थी ।

- (XI) \*\*\* यह चिह्न इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई और प्राधिकारी द्वारा नियमों के अंतर्गत वैसी ही मानी गई सूचना का द्योतक है । उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्य/आधार ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को 15 जून, 2006 को प्रकट किए गए थे तथा इन पर प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है । पाटन एवं क्षति की जांच अवधि 1 जनवरी, 2004 से 31 दिसंबर, 2004 (जिसे जांच अवधि या पीओआई कहा जाता है) तक की है । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में रूझानों की जांच अवधि 1 अप्रैल, 2001 से जांच अवधि के अंत तक की है (जिसे क्षति अवधि भी कहा जाता है;)
- (XII) प्राधिकारी ने पाटन और परिणामी क्षति के प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी जाने वाली संपूर्ण सूचना मंगाई एवं इसका सत्यापन किया । प्राधिकारी ने आवश्यक सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की थी । घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण सर्वोत्तम उत्पादन लागत तथा याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना पर आधारित सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत की गणना करने के लिए किया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम का पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है तो वह घरेलू उद्योग की हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- (XIII) जांच शुरुआत संबंधी सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सीआईआई, एसोचैम आदि को भी भेजी गई थी ।

### ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद नायलोन के सिंथेटिक फिलामेंट यार्न है जिन्हें पोलीमाइड यार्न (जिन्हें आगे नायलोन फिलामेंट यार्न और संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) । नायलोन फिलामेंट यार्न एक कृत्रिम फिलामेंट यार्न है जिसका उत्पादन आर्गेनिक मोनोमर्स के पोलीमराइजेशन द्वारा किया जाता है ।

3. फेडरेशन आफ इंडियन आर्ट सिल्क वीविंग इंडस्ट्री (एफआईएसडब्ल्यूआई), मुंबई ने यह प्रस्तुत किया है कि आवेदन में उत्पाद सूचना, कीमत प्रभाव, पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन के संबंध में अपर्याप्त सूचना दी गई है। आगे यह भी प्रस्तुत किया गया है कि सीमाशुल्क उपशीर्ष 5402.10 के तहत वर्गीकृत नाइलोन के उच्च दृढ़ता यार्न तथा मानव निर्मित सभी फिलामेंट यार्न जिनमें नाइलोन पोली माइड्स नहीं हैं, को विचाराधीन उत्पाद के दायरे में शामिल नहीं किया जाना चाहिए तथा उनके आयात आंकड़े आयातित वस्तु की मात्रा तथा मूल्य में शामिल नहीं किए जाने चाहिए। यह प्रस्तुत किया गया है कि घरेलू उद्योग एनएफवाई के एनएफवाई आयातों के सभी प्रकारों का विनिर्माण नहीं करती है जिसमें नाइलोन 66 के आयात शामिल हैं जो देश में उत्पादित नहीं किया जाता। यह प्रस्तुत किया गया कि नाइलोन मुख्यतः दो विभिन्न तरीकों से संश्लेषित किया जाता है जिनमें दो भिन्न विधियां नामतः— नाइलोन 66 का उत्पादन करने के लिए हेक्सामेथीलीन डायमीन तथा एडीपीस अम्ल का प्रयोग करना तथा एकल घटक अर्थात् एमीनों अम्ल द्वारा उत्पादित नाइलोन 6, तथा नाइलोन 6 तथा नाइलोन 66 के भौतिक तथा रासायनिक गुण अलग-अलग हैं। यह भी उल्लेख किया गया है कि भारत में केवल नाइलोन 6 का उत्पादन होता है जबकि यूएसए तथा अन्य विकसित देशों में नाइलोन 66 का उत्पादन किया जाता है। चूंकि नाइलोन 66 का भारत में विनिर्माण नहीं किया जाता अतः इसका आयात किया जा रहा है तथा इसीलिए इसे एनएफवाई के आयातों से पृथक किया जाना चाहिए। नाइलोन 6 तथा 66 सभी पहलुओं पर ध्यान देते हुए एक-दूसरे के बदले प्रयुक्त नहीं किए जा सकते क्योंकि इन दोनों प्रकारों में कुछ भेद हैं जो उत्पादित किए जाने वाले अंतिम उत्पाद पर निर्भर हैं। इसलिए नाइलोन 6 के लिए जांच की सीमा निर्धारित करना उपयुक्त है। यह भी बताया गया कि हुक तथा लूम टेप (वेल्को टेप) के विनिर्माण में प्रयुक्त एनएफवाई, पीयूसी के तहत नहीं आना चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग इसका उत्पादन नहीं करती। यह भी जोड़ा गया कि नाइलोन 66 की कीमतें, नाइलोन 6 की कीमतों से अधिक हैं जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन की लागत, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन में विकृति आएगी। यहां तक कि यदि इसे संपूर्णतः पृथक असमान वस्तु की तरह पृथक नहीं किया जाता तब भी इसे पाटन मार्जिन तथा क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ पृथक किया जा सकता। निर्दिष्ट प्राधिकारी को द्वितीयक गुणों को संयुक्त उत्पाद अथवा सह-उत्पाद के रूप में विचार करना चाहिए। डोनियर को मिलाना गलत तथा विकृतिकारी है क्योंकि विभिन्न डोनियर संख्याओं के भार में पर्याप्त अंतर है जो विभिन्न कच्चे माल की अपेक्षाओं तथा विभिन्न परिवर्तन अनुपात का संकेतक है।

दूसरी ओर, घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया है कि मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद नाइलोन का संश्लेषित फिलामेंट यार्न है जिसे पालीएमाइड यार्न के रूप में भी जाना जाता है। नाइलोन फिलामेंट यार्न एक संश्लेषित फिलामेंट यार्न है जो कार्बनिक मोनोमर के बहुलकीकरण के द्वारा उत्पादित

किया जाता है। नाइलोन के फिलामेंट यार्न का जनरिक रसायनिक नाम पालीएमाइड यार्न है। उत्पाद को पालीएमाइड यार्न के रूप में भी व्यापक तौर पर जाना जाता है। इसे भारत तथा व्यापार प्रथाओं/शब्दावली में नाइलोन फिलामेंट यार्न कहा जाता है। नाइलोन (NYLON) यार्न शब्द का प्रयोग किया जाता है क्योंकि इसका आविष्कार न्यूयार्क (NY) में तथा वाणिज्यीकरण लंदन (London) में हुआ था। घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए विचाराधीन उत्पाद में सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 5402 के अधीन अध्याय 54 के भीतर वर्गीकरण योग्य फ्लेट यार्न-ट्विस्टेड, तथा/अथवा अनट्विस्टेड, पूर्णतः खींचे गए यार्न (एफडीवाई), स्पिन ड्रान यार्न (एस डी वाई), पूर्णतः ओरिएंटेड यार्न (एफओवाई), हाई ओरिएण्टेड यार्न (एच ओ वाई), आंशिक ओरिएंटेड यार्न (पीओवाई), टेक्सचर्ड यार्न-ट्विस्टेड अथवा अनट्विस्टेड, तथा रंजित यार्न, एकल, दुहरे, बहुल, फोल्डेड अथवा केबल, जैसे सिलाई के धागों से इतर नाइलोन अथवा पालीएमाइड के सभी प्रकार के संश्लेषित फिलामेंट यार्न शामिल हैं लेकिन नाइलोन तथा अन्य पालीएमाइड के अन्य दृढ़ता वाले यार्न शामिल नहीं हैं।

5. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि एनएफवाई के विभिन्न प्रकार समान उत्पादन प्रौद्योगिकी, विनिर्माण प्रक्रियाओं, कच्चे माल, संयंत्र तथा उपस्कर से उत्पादित किए जाते हैं तथा समान सामान्य उद्देश्यों को पूरा करते हैं। एनएफवाई के विभिन्न प्रकारों के बीच अत्यधिक प्रतिस्थापनीयता है। यह प्रस्तुत किया गया है कि केवल मूल्यवर्धन से उत्पाद की विशेषताओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं होता। प्रमुख उत्पाद विशेषताएं सामान्य नाइलोन फिलामेंट यार्न की ही तरह समान बनी रहती है। नाइलोन फिलामेंट यार्न को चमकदार, अर्ध-द्युतिहीन, पूर्ण-द्युतिहीन जैसी विभिन्न आभा में उत्पादित किया जाता है। यह भूरे रूप में अथवा रंगीन हो सकता है। एनएफवाई के संबंध में उत्पाद की विभिन्न विशेषताओं का विभिन्न आभा से कोई अंतर नहीं है तथापि, भौतिक प्रतीति तथा संबद्ध लागतें तथा कीमतें आभा के साथ-साथ बदलती हैं। घरेलू उद्योग ने आगे यह प्रस्तुत किया है कि समान भौतिक तथा रसायन विशेषताओं के मद्देनजर नाइलोन 6 तथा नाइलोन 66 एक समान उत्पाद हैं। वस्तुतः किर्क अथमर द्वारा रसायन प्रौद्योगिकी विश्वकोष में एनएफवाई के संबंध में समान भौतिक तथा रसायनिक विशेषताएं परिभाषित की गई हैं। आगे यह जोड़ा जाता है कि नाइलोन 6 तथा 66 दोनों "पालीएनाइड" हैं तथा सतत फिलामेंट के रूप में विनिर्मित किए जाते हैं। यह भी जोड़ा जाता है कि नाइलोन 6 के प्रोलेक्टम से प्राप्त किया गया है जबकि नाइलोन 66 हेमसामेथीलीन डाइएमीन तथा एडीपिक अम्ल से प्राप्त किया जाता है तथा केवल कच्चे माल में अंतर से दोनों को असमान उत्पाद नहीं कहा जा सकता है। दोनों के समान कार्य तथा उपयोग हैं तथा लाइलोन 66 के साथ नाइलोन 6 से अधिक उपयोग में आता है। जबकि कभी-कभी नाइलोन 66 महंगा होता है (जैसा कि 2004 में), नाइलोन 6 भी नाइलोन 66 के मुकाबले महंगा हो सकता है (जैसा कि 2005 में)। तथापि, 10-15

वर्षों की लम्बी अवधि में नाइलोन-6 तथा 66 की कीमतें एक समान बेंड में रही हैं। घरेलू उद्योग ने निर्दिष्ट प्राधिकारी तथा साथ ही साथ इस संबंध में अन्य जांचकर्ता प्राधिकारियों के विभिन्न निर्णयों पर विश्वास जताया है। कच्चे माल या विनिर्माण प्रक्रिया में अंतर दो उत्पादों को असमान नहीं बनाता। घरेलू उद्योग द्वारा यह भी कहा गया है कि जब तक दोनों उत्पादों के अतिव्यापित अनुप्रयोग हैं तब तक यह बात पर्याप्त रूप से विधि सम्मत है कि इन्हें एक समान उत्पाद माना जाए। पालीएस्टर फिल्मों के विभिन्न छोरों पर अनुप्रयोग, बीओपीपी फिल्मों का संदर्भ लिया गया है तथा उन पर निर्भर रहा गया है। गुणता अंतर के संबंध में यह कहा गया है कि गुणता में अंतर का दावा किया जा सकता है तथा इसकी अनुमति निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा दी जा सकती है यदि वास्तविक पाया जाता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्व में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा वास्तविकीकरण के बाद गुणता में अंतर के आधार पर समायोजित उपलब्ध कराया था। गुणता में अंतर का आशय विभिन्न तथा समान वस्तु नहीं है। ईपीडीएम से संबंधित मामलों में सीईएसटीएटी के निर्णय पर विश्वास किया गया है। घरेलू उद्योग का यह कहना है कि नाइलोन 6 तथा 66 के भौतिक तथा रासायनिक गुण समान अथवा एक जैसे हैं।

6. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के विचारों पर ध्यान दिया है। अपनी जांच में प्राधिकारी मानते हैं कि एनएफवाई के विभिन्न प्रकार समान उत्पादन प्रौद्योगिकी, विनिर्माण प्रक्रिया, कच्चे माल, संयंत्र तथा उपस्कर से उत्पादित होते हैं तथा समान व्यापक प्रयोजनों को पूरा करते हैं। एनएफवाई के विभिन्न प्रकारों के बीच अत्यधिक प्रतिस्थापनीयता है। यहां तक कि उत्पाद को डेनियर, फिलामेंट, आभा, रंग, ओरिएंटेशन आदि अमूर्त प्रकारों में समूहीकृत किया गया है तब भी ये विशिष्ट गुण एनएफवाई के विभिन्न प्रकारों को केवल विभेदीकृत करते हैं। तथापि विभिन्न प्रकारों में एनएफवाई के समान आधारभूत गुण रहते हैं। नाइलोन 66 को विदेशी समान उत्पाद के रूप में शामिल करने तथा विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र में लाने के संबंध में यह नोट किया जाता है कि नाइलोन 6 तथा नाइलोन 66 दोनों के आवश्यक रूप से समान अथवा एक-जैसे भौतिक तथा रासायनिक गुण हैं तथा नाइलोन 6 तथा 66 दोनों "पीलाएसाइड" हैं तथा इन्हें सतत फिलामेंट के रूप में बनाया जाता है। इसके अलावा, आवश्यक रूप से सभी पालीएमाइड गलाकर बुने जाते हैं तथा इस परिधि के नाइलोन 6 तथा नाइलोन 66 के लिए विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी को समान माना जाना चाहिए। जहां तक कार्य तथा अनुप्रयोगों का संबंध है अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि नाइलोन 66 के कुछ अतिरिक्त अनुप्रयोग हैं। तथापि कुछ अतिरिक्त अनुप्रयोगों से दोनों उत्पादों को असमान नहीं कहा जा सकता। सीमाशुल्क वर्गीकरण के संबंध में, यह कहा जा सकता है कि नाइलोन 6 तथा 66 दोनों को "नाइलोन के संश्लेषित फिलामेंट यार्न" के रूप में समान वर्गीकरण के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। विस्तृत जांच के पश्चात, प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि वर्तमान जांच

में विचाराधीन उत्पाद नाइलोन के संश्लेषित फिलामेंट यार्न हैं जिसे पालीएमाइड यार्न (नाइलोन फिलामेंट यार्न के रूप में भी वर्णित तथा संबद्ध वस्तुओं के रूप में संदर्भित भी) के नाम से भी जाना जाता है। नाइलोन फिलामेंट यार्न कार्बनिक मोनोमा के बहुलकीकरण से उत्पादित संश्लेषित फिलामेंट यार्न है। विचाराधीन उत्पाद में सिलाई के धागे को छोड़कर नायलोन या पोलीयामाइड्स के सिंथेटिक फिलामेंट यार्न, की सभी किस्में जैसे फ्लैट यार्न - ट्विस्टेड और/या अन ट्विस्टेड पूर्णतः ड्रान यार्न (एफडीवाई), स्पिन ड्रान यार्न (एसडीवाई), पूर्णतः ओरिएंटेड यार्न (एफओवाई) हाई ओरिएंटेड यार्न (एचओवाई), पार्शियली ओरिएंटेड यार्न (पीओवाई) टेक्सचर्ड यार्न इ ट्विस्टेड और/या अनट्विस्टेड, और डाइड यार्न, सिंगल, डबल, मल्टिपल, मुड़े हुए या केबल तथा सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 5402 के अध्याय 54 के अंतर्गत वर्गीकरण योग्य शामिल हैं, किन्तु इसमें नायलोन के उच्च दृढ़ता वाले यार्न शामिल नहीं हैं। उत्पादन में नायलोन फिलामेंट यार्न या पोलीयामाइड यार्नों की सभी किस्में शामिल हैं जैसे फ्लैट/टेक्सचर्ड/ट्विस्टेड/अनाट्विस्टेड, चमकीला/सेमीन्डल/पूर्णतः - डल (या इसकी किस्में), सलेटी /रंगीन/रंजित (या इसकी किस्में) सिंगल/डबल/मल्टिपल/फोल्डेड/केबल्ड (या उनकी किस्में), सही आकार में हो अथवा नहीं लेकिन इसमें सीमाशुल्क उप शीर्ष 5402.10 के अंतर्गत वर्गीकरणीय नायलोन के उच्च दृढ़ता वाले यार्न शामिल नहीं हैं। प्राधिकारी सीमाशुल्क वर्गीकरण सं. 5402.10 के अंतर्गत वर्गीकरणीय फिशनेट यार्न को संबद्ध वस्तुओं के दायरे से बाहर रखना उचित समझते हैं क्योंकि ये उच्च दृढ़ता वाले यार्न हैं। तदनुसार उच्च दृढ़ता वाले नायलोन फिलामेंट यार्न की सभी किस्में, जो सीमाशुल्क वर्गीकरण सं. 5402.10 के अंतर्गत वर्गीकरणीय हैं अगली जांच तक वर्तमान जांच के दायरे से बाहर हैं। तथापि यह सीमाशुल्क वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और यह वर्तमान जांच कार्यक्षेत्र पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है। एसोसिएशन (एफआईएसडब्ल्यूआई) के इस दावे के संबंध में कि कुछ किस्म के यार्न भारत में उत्पादित नहीं किए जाते हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस प्रकार के सभी उच्च दृढ़ता वाले यार्न विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर है। यह तर्क दिया गया है कि उत्पाद प्रकार में से कुछ का उत्पादन भारत में नहीं किया जाता है तथा इन्हें विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर किया ही जाना चाहिए। इस संबंध में उद्धृत उत्पाद प्रकारों में से कुछ में नाइलोन ज्वाला अवरोधक यार्न, एयर टेक्सचराइज्ड यार्न आदि हैं। इस मामले की जांच की गई थी तथा यह नोट किया गया था कि जेसीटी की वेबसाइट [www.jctsfid.com](http://www.jctsfid.com) में प्रथम पृष्ठ पर यह लिखा है कि वे ज्वाला अवरोधी यार्न का विनिर्माण कर रहे हैं। यह भी नोट किया गया कि यूवी स्टेबलाइज्ड यार्न उत्पादन में सिर्फ यूवी स्टेबलाइजर डालकर किसी भी विनिर्माता द्वारा आसानी से उत्पादित किया जा सकता है। इसके अलावा ये यार्न मै. सेंचुरी इनके द्वारा प्रस्तावित है। यह भी नोट किया गया था कि एयर टेक्सटराइज्ड यार्न, टेक्सचराइजिंग का केवल एक दूसरा तरीका है तथा यह सूचित किया गया था कि यहां तक कि

जेसीटी अल्प मांग के कारण टेक्सचराइजिंग का पूर्ण उपयोग में समर्थ नहीं है । इसलिए प्राधिकारी इन प्रकारों में किसी को भी विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर नहीं करते हैं ।

7. नायलोन फिलामेंट यार्न का वस्त्र अनुप्रयोगों में व्यापक रूप से प्रयोग होता है इनमें शामिल हैं :- साड़ी, दुपट्टा, महिलाओं की परिधान सामग्री/फैशन परिधान, फेन्सी कैजुअल, बुनाई परिधान, स्टाकिंग्स एवं स्टाक्स, आंतरिक परिधान एवं मूल वस्त्र, लिंगरी एवं नाइट वियर, ब्रिफ्स, पेंटीज, स्लिप्स, बच्चों के कपड़े, खेल परिधान एवं एक्टिवियर विचार, तैराकी परिधान एवं बीचवियर, बाहरी परिधान, बाइंड वियर, फैशन की अनुषंगी सामग्री, इलास्टिक टेप शो/फुटवियर लाइनिंग्स, लेसेस/फैसी टेप्स, टाई/स्काटर्स, फैदर यार्न, रिबन/सोटिन रिबन आदि । कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई इन अभ्युक्तियों के बारे में कि नायलोन 66 से निर्मित नायलोन फिलामेंट यार्न पर विचार नहीं किया जाए क्योंकि इसमें कथित रूप से अलग विशेषताएं हैं, प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस संबंध में उपलब्ध कराई गई समस्त संगत सूचना पर विचार किया है कि नायलोन 6 और नायलोन 66 समान उत्पाद हैं अथवा नहीं और यह नोट करते हैं कि नायलोन 66 को विचाराधीन उत्पाद के दायरे में शामिल करना सही है । प्राधिकारी नायलोन 6 और नायलोन 66 मानदंडों जैसे भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, प्रौद्योगिकी, विनिर्माण प्रक्रिया, कच्ची सामग्रियों, कार्य एवं प्रयोगों, टैरिफ वर्गीकरण आदि पर विचार करते हुए आगे की जांचों तक एक समान वस्तु मानते हैं । अतः नायलोन 66 वर्तमान जांच के दायरे में आता है ।

#### ग. समान वस्तु

8. याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएं संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के समान वस्तु हैं । याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तुओं में कोई खास अंतर नहीं है । घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि भारत में उत्पादित संबद्ध वस्तुएं तथा संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुएं समान वस्तुएं हैं । आवेदन का प्रतिवाद करते हुए विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित नाइलोन 6 उपर्युक्त वर्णित विभिन्न भौतिक, रासायनिक गुणों तथा उपयोगों के कारण संबद्ध देशों से भारत को निर्यातित विनिर्मित नाइलोन 66 की तुलना में घरेलू समान उत्पाद नहीं है । यह भी उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग नाइलोन 66 का विनिर्माण नहीं करता है तथा इसीलिए घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित तथा बिक्री किए गए एनएफवाई, संबद्ध देशों से उत्पादित तथा निर्यातित नाइलोन 66 के समान घरेलू उत्पाद नहीं है । साथ ही, यह कहा गया है कि समान वस्तु की जांच उत्पाद के डेनियर, आभा, रंग, ओरिएंटेशन

आदि के आधार पर होनी चाहिए । दूसरी ओर, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि सामान्य रूप से भारतीय उद्योग तथा विशेष रूप से घरेलू उद्योग तथा संबद्ध देशों द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है । प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की तथा वे यह पाते हैं कि नियम 2(घ) स्पष्ट करता है कि समान वस्तु का अभिप्राय ऐसी वस्तु से है जो जांचाधीन वस्तु से सभी प्रकार से समान या समरूप हो या ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में वह वस्तु जिसमें जांचाधीन वस्तु से बिल्कुल मिलती-जुलती विशेषताएं हों । यह सिद्ध करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है, प्राधिकारी ने विशेषताओं जैसे तकनीकी विनिर्देशन, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं प्रयोगों और टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया है । यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु, संबद्ध देशों से आयातित तथा निर्यातक देशों के बाजार में बिक्री की गई वस्तुओं के समान है । इसलिए ये दोनों नियमावली के अनुरूप समान वस्तुएं हैं । यह भी नोट किया गया है कि एनएफवाई के विभिन्न प्रकारों को समान उत्पाद प्रौद्योगिकी विनिर्माण प्रक्रिया, कच्चे माल, संयंत्र तथा उपस्कर से उत्पादित किया जाता है तथा वे समान व्यापक प्रयोजनों को संपन्न करते हैं । तथापि विभिन्न प्रकारों में एनएफवाई की समान आधारभूत विशेषताएं मौजूद हैं । विपक्षी हितबद्ध पक्षकारों ने यह दावा किया है कि यार्न के कतिपय प्रकारों का भारत में उत्पादन नहीं किया जाता । इस संबंध में, जांच के बाद यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग से उसी वस्तु के अभाव में समान वस्तु के उत्पादन की अपेक्षा की जाती है जो संबद्ध देशों द्वारा निर्यात की जा रही है । विस्तृत जांच के बाद यह नोट किया गया है कि उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू बाजार में बिक्री की गई वस्तुएं, संबद्ध देशों द्वारा उत्पादित तथा भारत को बिक्री की गई वस्तु के समान उत्पाद हैं ।

#### घ. घरेलू उत्पाद:

9. यह याचिका मै. मोदीपोन लि., मोदीनगर, जेसीटी लि., होशियारपुर, श्री सिंथेटिक्स लि., उज्जैन और गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कं. लि., वडोदरा द्वारा संयुक्त रूप से दायर की गई है । इन उत्पादकों ने वर्तमान जांच से संगत सूचना प्रस्तुत की है और प्रस्ताव जांच में हिस्सा लेने में सहमति व्यक्त की है ।
10. आवेदन का विरोध करने वाले विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने यह उल्लेख किया है कि आवेदक नियम 2(ख) की अपेक्षाओं के अनुरूप घरेलू उद्योग नहीं है । यह भी उल्लेख किया गया है कि संबद्ध वस्तु का आयात, आयातक/उत्पादक को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर कर सकता है तथा न कि करेगा । इसलिए प्राधिकारी को सर्वप्रथम यह निर्णय लेना होगा कि क्या यह उत्पादकों, जो घरेलू उद्योग के दायरे में आयातक भी हो सकते हैं को शामिल करेगा अथवा बहिर्गत करेगा । केवल इस जांच/निर्णय के बाद ही आवेदकों की



स्थिति का निर्धारण किया जा सकता है । यह भी दावा किया गया है कि सार्वजनिक फाइल में यह दर्शाने के लिए कोई सामग्री नहीं है कि यह कार्रवाई घरेलू उद्योग की स्थिति के निर्धारण के लिए की गई है । यह भी प्रस्तुत किया गया है कि प्राधिकारी सीओपी तथा अगोपनीय सारांश के साथ सेंचुरी इनका तथा बड़ोदा रेयान के निष्पादन आंकड़े, दोनों के ऐसे आंकड़े तथा साथ ही इस पर प्राधिकारी की कार्रवाई तथा जांच अवधि में इन कंपनियों के तत्संबंधी निष्पादन तथा आवेदक के निष्पादन के बीच कोई अंतर की मांग कर सकते हैं, प्राप्त तथा विश्लेषण कर सकते हैं । यह अर्थपूर्ण क्षतिनिर्धारण तथा साथ ही साथ कारणात्मक संबंध निर्धारण दोनों के लिए अपेक्षित होगा ।

11. दूसरी ओर, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि याचिका संयुक्त रूप से मै. मोदीपोन लिमिटेड, मोदीनगर, जेसीटी लि. होशियारपुर, श्री सिंथेटिक्स लि., उज्जैन तथा गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कंपनी लि., वडोदरा द्वारा दायर की गई है तथा इन उत्पादकों ने वर्तमान जांच से प्रासंगिक सूचना उपलब्ध कराई है तथा प्रस्तावित जांच में भाग लेने की सहमति प्रदान की है । इन आवेदक कंपनियों का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन का 50% से अधिक बनता है । इसके अलावा मै. सेंचुरी एन्का और मै. बड़ोदा रेयान कार्पोरेशन लि. समान वस्तु के अन्य उत्पादक हैं । मै. सेंचुरी एन्का ने वर्तमान आवेदन का समर्थन किया है । प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि चार याचिकाकर्ता कंपनियों का भारतीय उत्पादन में बड़ा हिस्सा है ।
12. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षों की दलीलों की जांच की है तथा जांच के पश्चात यह नोट किया गया है कि याचिका मै. मोदीपोन लि. मोदीनगर, जेसीटी लिमिटेड, होशियारपुर, श्री सिंथेटिक्स लि., उज्जैन तथा गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कंपनी लि., वडोदरा द्वारा संयुक्त रूप से दायर की गई है । इन उत्पादकों ने वर्तमान जांच के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना के सत्यापन का प्रस्ताव किया है । कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि सेंचुरी इनका का असहयोग इस कारण से है कि कंपनी को कोई क्षति नहीं है । इसके पश्चात कंपनी (मै. सेंचुरी इनका) ने जांच से प्रासंगिक संपूर्ण सूचना प्रस्तुत की जिसका निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया । समर्थनकारी कंपनी सेंचुरी इनका सहित इन याचिकाकर्ता कंपनियों का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक बनता है । मै. बड़ोदा रेयान कार्पोरेशन लि., समान वस्तु के दूसरे उत्पादक हैं । इसलिए प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि (क) चार याचिकाकर्ता कंपनियों का भारतीय उत्पादन में बड़ा हिस्सा है; (ख) आवेदन का स्पष्ट रूप से समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के कुल उत्पादन

के 50% से अधिक का उत्पादन करते हैं; और (ग) यह आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा या उनकी ओर से प्रस्तुत किया गया है ।

13. अतः यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता नियम 2(ख) और 2(घ) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का निर्माण करते हैं और यह याचिका उपर्युक्त नियमावली के नियम 5 के अनुसार योग्यता संबंधी मानदंडों को पूरा करती हैं ।

#### ड पाटन:

14. सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 9क (1) (ग) के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :-

सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या

जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो :-

निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु के उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि; या

उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत;

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश से उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा ।

15. प्राधिकारी ने धारा 9क(1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी थी। संबद्ध देशों के निम्नलिखित निर्यातकों ने प्राधिकारी को उत्तर दिया है :-

1. मै. जिन्ना जुडा फाइबर कं. लि. (जिनान) चीन जन.गण.
2. ढीकवेंग इंडस्ट्रीयल कं. लि. (टीकेआई), कोरिया जन.गण
3. ह्योसंग कार्पोरेशन, (ह्योसंग) कोरिया गणराज्य
4. हुआलोन कार्पोरेशन, (हुआलोन), मलेशिया
5. सनटैक्स फाइबर कं. लि. (सनटैक्स), चीनी ताईपेई
6. ली पेंग एंटरप्राइज कं. लि. (लीपेंग) चीनी ताईपेई
7. एशिया फाइबर्स पब्लिक कं. लि. (एशिया फाइबर), थाईलैंड
8. थाई टाफेटा कं. लि. (थाई टाफेटा); थाईलैंड

16. आवेदकों ने संबद्ध वस्तुओं के भिन्न-भिन्न मानदंडों के रूप में डेनियर, लस्टर, फिलामेंट्स, श्रेणी, रंग, क्रास सेक्शन, पैकिंग और ग्रेड को अभिज्ञात किया था। निर्यातकों ने भी अपने उत्तर में उपर्युक्त मानदंडों में से कुछ को अभिज्ञात किया है। इसके अलावा, कुछ निर्यातकों ने कुछ और मानदंड भी अभिज्ञात किए हैं। प्राधिकारी स्मरण करते हैं कि प्रारंभिक जांच परिणाम के दौरान यह विचार किया गया था कि डेनियर, लस्टर श्रेणी (टेक्सचर्ड, आंशिक रूप से ओरिएंटेड यार्न, ड्राटिविस्टेव, पूर्णतः ओरिएंटेड यार्न, पूर्णतः ड्रान यार्न) को आगे जांच लंबित रहने पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच तुलना करने के प्रयोजनार्थ आवश्यक उत्पाद मानदंडों के रूप में मानते हैं। ऐसा इसलिए किया गया था, क्योंकि किसी भी निर्यातक ने डेनियर, आभा, फिलामेंट, ग्रेड, पैकिंग, टाइप, श्रेणी, रंजन आदि के रूप में पीसीएन वार सूचना देकर निर्यातक प्रश्नावली के रूप तथा तरीके से सूचना प्रदान नहीं की थी। कुछेक निर्यातकों ने यद्यपि जांच शुरुआत के पहचान अनेक मानदंडों के संबंध में विस्तृत सूचना उपलब्ध तो कराई थी लेकिन प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत नहीं की गई तथा प्राधिकारी आंकड़ों का विश्लेषण तथा सभी मानदंडों के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं कर सके। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणाम तथा तत्पश्चात सत्यापन के बाद सहयोग निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रारूप के रूप में तथा तरीके से अपेक्षित जानकारी उपलब्ध कराई (तथा जिसका प्राधिकारी द्वारा विश्लेषण किया जा सकता है)।

#### ड (1) चीन जन.गण.

#### चीन के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण

17. चीन जन.गण., जो वर्तमान कार्यवाहियों में वर्तमान जांच के तहत एक संबद्ध देश है, एक गेर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है और इसलिए उनके सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 और 8 के अनुसार किया जाना चाहिए।

## भारत में विधिक प्रावधान

दिनांक 15 जुलाई, 1999 की अधिसूचना सं. 44/99-सी शु (एनटी) द्वारा नियमावली के अनुबंध-1 में पैरा 7 को शामिल किया गया है। अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार :-

7 गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के मामले में, उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए भारत में समान उत्पादन के लिए वास्तविक रूप से भुगतान किया गया अथवा भुगतान योग्य आवश्यकतानुसार पूर्णतया समायोजित कीमत सहित, सामान्य मूल्य का निर्धारण तीसरे देश के बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत अथवा परिकल्पित मूल्य के आधार पर अथवा भारत सहित ऐसे किसी तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव नहीं है, या किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा।

## बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी)

अनुबंध-1 के पैरा 8-4/01/2002 को संशोधित

- (1) "गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश" वाक्यांश का अर्थ है कि कोई देश जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी लागत अथवा कीमत ढांचे के बाजार सिद्धांतों को लागू नहीं करने वाले के रूप में मानते हैं। जिसके कारण ऐसे देश में पण्य वस्तुओं की बिक्रियों उप पैराग्राफ (3) में निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार वस्तुओं के सही मूल्य को नहीं दर्शाते हैं।"
- (2) यह कहना परिकल्पना होगी कि कोई देश जिसे जांच के पूर्ववर्ती तीन वर्षों के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यू.टी.ओ. के किसी सदस्य के सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश निर्धारित अथवा माना गया है, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है।

तथापि गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश या ऐसे देश से संबंधित फर्म निर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना तथा साक्ष्य उपलब्ध कराकर इस परिकल्पना को समाप्त कर सकते हैं जो यह साबित करता हो कि ऐसा देश उप पैरा (3) में निर्दिष्ट "मानदंड" के आधार पर एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

- (3) निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रत्येक मामले में निम्नलिखित मानदंड पर विचार करेंगे कि क्या:-

(क) ऐसे देश में कच्ची सामग्रियों प्रौद्योगिकी लागत और श्रम, उत्पादन, बिक्रियों तथा निवेश सहित कीमतों, लागतों तथा निवेशों के संबंध में संबंधित फर्म का निर्णय आपूर्ति तथा मांग को दर्शाने वाले बाजार संकेतों तथा इस संबंध में किसी विशिष्ट राज्य हस्तक्षेप के बिना होता है और यह कि क्या मुख्य निवेशों की लागतें वास्तविक रूप से बाजार मूल्यों को दर्शाती हैं;

(ख). ऐसे फर्मों, की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से उठाए गए विशिष्ट विरूपणों के अधीन होती है। खासकर ऋणों की प्रतिपूर्ति द्वारा परिसंपत्तियों के ह्रास, अन्य राइट ऑफ, वस्तु विनिमय व्यापार तथा ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए तथा भुगतान के संबंध में;

(ग) ऐसी फर्म दिवालिया तथा संपत्ति कानून के अधीन होती है जो कि फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता तथा स्थयित्व की गारंटी देता है; तथा

(घ) विनिमय दर के परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं :-

तथापि, जहां इस पैराग्राफ में निर्दिष्ट मानदंड के आधार पर लिखित रूप में पर्याप्त साक्ष्य दर्शाया जाता है कि पाटनरोधी जांच के अधीन एक अथवा ऐसे अधिक फर्मों के लिए बाजार स्थितियां लागू होती हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी पैरा 7 तथा इस पैरा में निर्दिष्ट सिद्धांतों के पैरा 1 से 6 में निर्दिष्ट सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं।

दिनांक 10 मार्च, 2003 की अधिसूचना के अनुसार नियमावली में आगे और संशोधन किया गया है, जो निम्नानुसार है :-

(4) "उप-पैराग्राफ (2) में निहित किसी बात के होते हुए भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे किसी देश को बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मान सकते हैं जिसे उप-पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों सहित संगत मानदंडों के नवीनतम विस्तृत मूल्यांकन के आधार पर किसी सरकारी दस्तावेज में ऐसे मूल्यांकन के प्रकाशन द्वारा किसी ऐसे देश जो "विश्व व्यापार संगठन" का सदस्य है, ने पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है अथवा ऐसा मानने के लिए निर्धारित किया है।"

18. चीन के एक निर्यातक/उत्पादन के अतिरिक्त, किसी भी निर्यातक/उत्पादन ने प्राधिकारी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। याचिकाकर्ताओं ने चीन में सामान्य मूल्य के परिकलन के प्रयोजनार्थ उचित प्रतिनिधि देश के रूप में अमरीका का नाम प्रस्तावित किया है और जून-दिसंबर, 2004 की अवधि के दौरान अमरीका में संबद्ध वस्तुओं की कीमत के विषय में कुछेक साक्ष्य उपलब्ध कराए हैं। प्रारंभिक जांच अधिसूचना के आधार पर चाइना चैम्बर ऑफ कॉमर्स फॉर इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ऑफ टैक्सटाइल्स ने समानांतर देश के रूप में अमरीका के नाम के प्रस्ताप का विरोध किया है और यह अनुरोध किया है कि उसके स्थान पर चीन जन.गण. अथवा किसी अन्य एशियाई देशों का चयन किया जाना चाहिए क्योंकि उनमें बहुत सी चीजें एक समान होती हैं। इसके अतिरिक्त चीन से चाइना चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अलावा चीन या किसी और देश के पक्षकार ने उचित प्रतिनिधि देश के रूप में अमरीका का विरोध नहीं किया है और चीन के सामान्य मूल्य के परिकलन के प्रयोजनार्थ किसी कोई विश्वस्त साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया

है । यह भी नोट किया गया था कि किसी भी हितबद्ध पार्टी ने कोई अन्य टिप्पणी नहीं की है और ऐसे समानांतर देश के उत्पादकों/निर्यातकों के नाम नहीं दिए हैं जो इस संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों को भेजे गए पत्र के बावजूद निर्दिष्ट प्राधिकारी को आंकड़े प्रस्तुत करना चाहेंगे । तत्पश्चात् प्राधिकारी ने अमरीका में संबद्ध उत्पादों के उन उत्पादकों से अनुरोध किया था जिनका उल्लेख घरेलू उद्योग द्वारा याचिका में किया गया है और उनसे उनके देश में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री के संबंध में विवरण प्रस्तुत करने के लिए कहा और निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष अपेक्षित आंकड़े प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था । तथापि, चुने हुए समानांतर देश के किसी उत्पादक ने आज की तारीख का कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया ।

### क. सहयोग

19. चीन के एक उत्पादक/निर्यातक अर्थात् मै. जिनान जुडा ने जांच प्रक्रिया के दौरान स्वयं को ज्ञात बना लिया है और उन्होंने बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे और निर्यातकों की प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों से संबंधित प्रश्नावली के संबंध में सूचना देते हुए निर्यातकों की प्रश्नावली का जवाब दिया है । तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् उन्होंने उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना के सत्यापन हेतु प्राधिकारी के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया । निर्यातक ने प्राधिकारी को दोबारा सूचित किया कि वे उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना का कोई सत्यापन प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं होंगे । उसके मद्देनजर प्राधिकारी निर्यातक को असहयोगी मानते हैं । यह नोट किया जाता है कि उक्त निर्यातक ने सत्यापन की पेशकश उस समय की जब सत्यापन दल पहले ही सक्षम प्राधिकारी से आवश्यक अनुमोदन पुनः प्राप्त करने के पश्चात् अन्य देशों के निर्यातकों से संबंधी सूचना सत्यापन कर चुका था अथवा सत्यापित करने की प्रक्रिया में था । तथापि, जांच के समयबद्ध स्वरूप के कारण निर्यातक के प्रस्ताव को देरी से किया गया प्रस्ताव माना गया था और देर से किया गया संशोधित प्रस्ताव प्राधिकारी द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था ।

### ख. सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत:

20. मै. जिनान जुडा द्वारा दाखिल किए गए जवाबों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि उनके जवाबों में उन प्रासंगिक तथ्यों के साथ कोई वास्तविक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए गए हैं जिनसे वे पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 और उनकी कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा प्रदान करने के संबंध में भेजी गई गैर बाजार प्रश्नावली में यथा उल्लिखित धारणाओं का खंडन करना चाहते हैं । उपर्युक्त तथ्य को देखते हुए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है । उनकी निर्यात कीमतों के संबंध में यह नोट किया गया था कि उनकी निर्यात कीमतें तब भी सरकारी आंकड़ों में उल्लिखित कीमतों से

अत्यधिक मेल खाती थीं जब उनकी मात्राएं तथा निर्यातों की तारीख निर्यातक आंकड़ों से मेल खाती थीं । चूंकि निर्यातक की आयात कीमतों एवं सरकारी आंकड़ों में अत्यधिक विसंगति है, इसलिए प्राधिकारी ने अनंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ पाटन मार्जिन एवं कीमत कटौती के निर्धारणार्थ निर्यातक की कीमत पर विचार नहीं किया था । इसके बजाय प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सरकारी आंकड़ों में बतायी गई कीमत पर विचार किया । विस्तृत जांच करने के बाद (उन संबंधित सीमाशुल्क पत्तनों से मात्रा और कीमत के लिहाज से सूचना प्राप्त करने के पश्चात जहां इन आयातित संबद्ध वस्तुओं का आंकलन किया गया है) यह नोट किया जाता है कि मै. जिनान जुडा द्वारा निर्यातित संबद्ध वस्तुओं का मूल्य उन सीमाशुल्क पत्तन आंकड़ों से बताए गए और उनसे सत्यापित किए गए इकाई मूल्यों से अत्यधिक भिन्न है जहां इन वस्तुओं को उतारा गया है और आंकलन किया गया है । उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक की संबद्ध वस्तुओं की इकाई कीमतों को लिया है जिसे पत्तन आंकड़ों से प्राप्त सूचना के साथ समायोजित किया गया है ।

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश (इस जांच में अमरीका) में कीमत अथवा निर्मित मूल्य का साक्ष्य प्रदान किया था । चीन के उत्पादों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार देने के घरेलू उद्योग के दावे का खंडन करते समय चीन के उत्पादकों अथवा आयातकों या अन्य किसी हितबद्ध पक्षकार ने किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत के संबंध में अथवा निर्मित मूल्य के संबंध में न तो किसी दावे का सबूत दिया था और न ही कोई प्रमाणित साक्ष्य प्रस्तुत किया था । प्राधिकारी द्वारा भेजी गई निर्यातक प्रश्नावली के जवाब में अमरीका के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है । इन परिस्थितियों के अंतर्गत प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि समान उत्पाद के लिए भारत में प्रदत्त अथवा देय वास्तविक कीमत पर विचार करके सामान्य मूल्य का निर्धारण करना है जिसे एक उचित लाभ शामिल करने के लिए विधिवत रूप से समायोजित किया गया है । भारत में वास्तविक रूप से भुगतान की गई कीमत पर इस कारण से विचार नहीं किया गया है कि यह कीमत मंद रही है । अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन भारत में उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर किया है जिसे कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों एवं इष्टतम परिवर्तन लागतों, बिक्री, सामान्य एवं प्रशासकीय व्ययों और तर्कसंगत लाभ को प्रतिबिंबित करने के लिए विधिवत रूप से समायोजित किया गया है । प्रारंभिक जांच परिणामों में यह नोट किया गया था कि जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ती है तो प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण प्रयोजनार्थ किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की उपयुक्तता के संबंध में जांच करना जारी रखेंगे यदि प्राधिकारी द्वारा उनकी कीमत अथवा निर्मित मूल्य के बारे में सूचना के साथ-साथ उनकी

उपयुक्तता के संबंध में सूचना प्राप्त की जाती है। चूंकि कोई संगत प्राप्त नहीं हुई है इसलिए प्राधिकारी प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का भारत में उत्पादन लागत के रूप में निर्धारण करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों एवं इष्टतम परिवर्तन लागतों, बिक्री, सामान्य एवं प्रशासकीय व्ययों तथा तर्कसंगत लाभ को प्रतिबिंबित करने के लिए विधिवत रूप से समायोजित किया गया है।

## च (2) चीन जन.गण. से अन्य उत्पादक/निर्यातक

22. किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने जांच शुरूआत के पश्चात बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली और निर्यातक की प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों के संबंध में सूचना देकर निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। चूंकि चीन जन.गण. मै. जिनान जुडा से इतर किसी भी निर्यातक/उत्पादक से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है, इसलिए प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है जैसा कि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उल्लेख किया गया है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश (इस मामले में तुल्य देश अमरीका है) में कीमत अथवा परिकलित कीमत या किसी ऐसे तीसरे देश से अन्य देशों को कीमत के संबंध में प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं करायी गई है। चूंकि कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इसलिए प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन भारत में उत्पादन लागत पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य के आधार पर किया है जिसे बिक्री, सामान्य और प्रशासकीय ऊपरी खर्चों और उचित लाभ सहित विधिवत रूप से समायोजित किया गया है। निर्यात कीमत का निर्धारण संबद्ध वस्तुओं के लिए सरकारी आंकड़ों से उपलब्ध सूचना से एकत्र किए गए आयातों के सौदावार आंकड़ों के आधार पर किया गया है।

## ड 3 बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों के मामले में सामान्य मूल्य

### प्रतिवादी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन का परिकलन करने की प्रणाली

23. प्रथमतः यह निर्धारण किया गया था कि क्या संबद्ध देश में उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं की उनके पीसीएन (उत्पाद नियंत्रण नामावली) के संबंध में की गई सकल घरेलू बिक्रियां प्रतिनिधि थीं जब उनकी निर्यातक देश में बेची गई संबंधित संबद्ध वस्तुओं (उसी पीसीएन के लिए) की कुल बिक्रियों से तुलना की गई थी तत्पश्चात, यह जांच की गई थी कि क्या उनकी बिक्रियां (पीसीएन-वार) पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के नियम 2 के अनुसार व्यापार की साधारण प्रक्रिया के अंतर्गत की गई हैं। उत्पादकों ने घरेलू बाजार में की गई बिक्रियों का सौदे-वार ब्यौरा उपलब्ध करवाया है। घरेलू बाजार में बेची गई एनएफवाई के डेनियर, श्रेणी, क्रास-सेक्शन, रंगाई,



पैकिंग, ग्रेड एवं चमक पर विचार करते हुए एनएफवाई की प्रत्येक किस्म के लिए पृथक भारत औसत बिक्री कीमत निर्धारित करने के लिए इस सूचना पर विश्वास किया गया है। यदि घरेलू बाजार में एनएफवाई की किसी विशेष किस्म की बिक्री मात्रा भारत को किए गए निर्यातों से 5% अधिक है तो घरेलू कीमत पर विचार किया गया है। अन्य मामलों में उचित लाभ मार्जिन को जोड़ने के पश्चात सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए प्राधिकारी द्वारा परिशिष्ट-8 के अनुसार निर्यातक आंकड़ों के आधार पर निर्धारित उत्पादन लागत का प्रयोग किया गया है। निर्यातकों द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत को समुचित आशोधन (प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात और सत्यापन दौरे के दौरान) के पश्चात स्वीकार कर लिया गया है। यह भी उल्लेख किया जा सकता है कि संबद्ध वस्तु की पृथक विनिर्माण लागतें केवल ग्रेड के रूप में प्राधिकारी द्वारा स्वीकार नहीं की गई थी और इसलिए निर्यातक ने परिशिष्ट 8 के अनुसार इस सूचना में संशोधन किया है। इसके अलावा, जहां कहीं प्रतिवादी निर्यातक द्वारा उत्पादक की पृथक लागत प्रस्तुत नहीं की गई है, प्राधिकारी ने निकटतम डेनियर/ग्रेड/किस्म/फिलामेंट की उत्पादन लागतों का प्रयोग किया है। उन संबंधित पीसीएन (भारत को निर्यातित के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए जिन्हें भारतीय बाजार में नहीं बेचा गया था) प्राधिकारी ने विभिन्न पीसीएनएस की लाभप्रद बिक्रियों के लाभ मार्जिन का परिकलन किया और इन्हें उन बिक्रियों की उत्पादन लागत में जोड़ दिया गया है जिन्हें भारतीय बाजार में नहीं लिया गया था (समान पीसीएन के संबंध में भारत को की गई बिक्रियों के अनुरूप)।

24. प्रत्येक पीसीएन की बिक्री कीमत की उसी पीसीएन की उत्पादन लागत के साथ तुलना की गई है। उन मामलों में जहां ऐसी कीमतें पीसीएन-वार उत्पादन लागत से कम थीं, वहां लाभ हेतु उचित योग (जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है) के साथ उत्पादन लागत पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विचार किया गया है। जहां कहीं ऐसी बिक्री कीमतें समान पीसीएन की उत्पादन लागत से अधिक थीं, वहां सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए ऐसी बिक्री कीमतों पर विचार किया गया है।
25. व्यापार की साधारण प्रक्रिया संबंधी परीक्षण के निर्धारणार्थ उत्पादक द्वारा बनाए रखे गए रिकार्डों के संदर्भ में संबंधित उत्पाद की उत्पादन लागत की जांच की गई थी। इसके अलावा, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की साधारण प्रक्रिया में की गई थी अथवा नहीं, सभी घरेलू बिक्री सौदों की संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के संदर्भ में जांच की गई थी। अतः सहयोगी निर्यातक हेतु सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए केवल

लाभप्रद सौदों पर विचार किया गया है जहां लागत से कम बिक्रियां 20% से अधिक हैं। प्रकटन पश्चात विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई टिप्पणियों के संबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत को निर्यात न किए गए उत्पाद किस्मों को पाटन मार्जिन के निर्धारण में शामिल नहीं किया है। तथापि, घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री से कंपनी को हुए लाभ के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इन्हें शामिल किया गया है। तथापि, कुछेक हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क को कि जहां कहीं भी पाटन-मार्जिन न्यूनतम से कम हो, उस पीसीएन को छोड़ दिया जाए, प्राधिकारी द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है क्योंकि उन्होंने शून्यीकरण किए बिना विचाराधीन उत्पाद के लिए एक भारत औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है।

### चीनी ताईपेई

#### ड 4 मै. सनटेक्स फाइबर्स :

#### सामान्य मूल्य:

26. अनंतिम जांच परिणामों के दौरान प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक के लिए उत्पादन लागत संबंधी आंकड़े स्वीकार नहीं किए थे क्योंकि अपेक्षित आंकड़े प्राधिकारी द्वारा निर्यातक को भेजे गए प्रपत्र में नहीं थे और निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़े अपूर्ण थे। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात और सत्यापन के दौरान निर्यातक ने नाइलॉन-66 की घरेलू बिक्री आंकड़े और उत्पादन लागत प्रस्तुत किए थे। तदनुसार उत्पादन लागत संबंधी आंकड़ों में भी संशोधन किया गया था। यह स्मरण किया जाता है कि प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल तीन मापदंडों को ध्यान में रखा है क्योंकि निर्यातकों ने उत्पादन नियंत्रण संस्था (डोनियर, फिलामेंट, क्रास सेक्शन, चपल, ग्रेड, रंग एवं पैकिंग) को ध्यान में रखते हुए पीसीएन अथवा उत्पाद वर्णन हेतु समस्त सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। संशोधित आंकड़ों के साथ यह निर्धारण करने के लिए कि क्या समान पीसीएन हेतु भारत को की गई निर्यात बिक्रियों की तुलना में घरेलू बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में थी, पीसीएन-वार अपर्याप्तता परीक्षण किया गया था। तत्पश्चात, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की साधारण प्रक्रिया में थीं अथवा नहीं, 18-20 परीक्षण किए गए थे। इसके पश्चात घरेलू बिक्री कीमत के प्रयोजनार्थ जहां कहीं 80% से अधिक बिक्रिया समान पीसीएन की उत्पादन लागत से मात्रा द्वारा अधिक थीं, दिए गए पीसीएन के लिए समूची घरेलू बिक्रियां स्वीकार की गई थीं। जहां जहां कहीं

लाभप्रद बिक्रियां बेची गई कुल मात्रा के 10% से 80% के बीच थीं वहां समान पीसीएन के लिए घरेलू बिक्री कीमत का परिकलन करने के लिए केवल लाभप्रद बिक्रियों पर ही विचार किया गया है न कि बिक्रियों की समूची मात्रा और कीमत पर । जहां पीसीएनएस के लिए उत्पादन लागत नहीं दी गई थी वहां प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत निकटतम डेनियर-वार उत्पादन लागत की उत्पादन लागत को अपनाया है । अतः प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पीसीएन-वार किया गया था ।

### निर्यात कीमत

27. एनएफवाई की प्रत्येक किस्म के लिए पृथक भारित औसत भारत को निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है, कीमत समायोजनों का दावा, भाड़े, बीमा, वारंटी जैसे समायोजनों के आधार पर किया गया है जिनका प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया था । भारत को निर्यात कीमत के लिए प्राधिकारी ने लदान संबंधी सूचना, लदान बिल, भुगतान वसूली एवं बीजकों जैसे विभिन्न दस्तावेजों के अनुसार निर्यात बिक्रियों का सत्यापन किया है । पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए भारत को औसत पीसीएन-वार निर्यात बिक्रियों (निर्यातक द्वारा दावा किए गए और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सभी समायोजनों का निवल) की औसत पीसीएन-वार घरेलू बिक्रियों के साथ तुलना की गई थी । जहां भारत को निर्यातित समान पीसीएन की घरेलू बिक्री कीमत उपलब्ध नहीं थी, प्राधिकारी ने उत्पादन लागत और एक उचित लाभ मार्जिन को ध्यान में रखते हुए इन पीसीएनएस के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया । लाभ मार्जिन का परिकलन लाभप्रद बिक्री सौदों के लाभ को ध्यान में रखकर किया गया है हिन्हे कुल लाभप्रद बिक्री सौदों से विभाजित किया गया है । प्रतिवादी निर्यातक के लिए एक ही पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए इन अलग-अलग पीसीएन हेतु पाटन मार्जिन को भारित औसत बनाया गया था । निर्यातक के आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात पाटन मार्जिन का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉलर अथवा 8% के रूप में किया गया है ।

### ड 5 मे. ली पेंग

#### सामान्य मूल्य

28. सामान्य मूल्य का निर्धारण चीनी टाईपेई में निर्यातक की संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर पूर्व के पैराग्राफों में उल्लिखित विधि के अनुसार

किया गया है । यह स्मरण किया जाता है कि प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल तीन मापदंडों को ध्यान में रखा है क्योंकि निर्यातकों ने उत्पादन नियंत्रण संस्था (डोनियर, फिलामेंट, क्रास सेक्शन, चपल, ग्रेड, रंग एवं पैकिंग) को ध्यान में रखते हुए पीसीएन अथवा उत्पाद वर्णन हेतु समस्त सूचना प्रस्तुत नहीं की थी । संशोधित आंकड़ों के साथ यह निर्धारण करने के लिए कि क्या समान पीसीएन हेतु भारत को की गई निर्यात बिक्रियों की तुलना में घरेलू बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में थी, पीसीएन-वार अपर्याप्तता परीक्षण किया गया था । तत्पश्चात्, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की साधारण प्रक्रिया में थीं अथवा नहीं, 18-20 परीक्षण किए गए थे । इसके पश्चात् घरेलू बिक्री कीमत के प्रयोजनार्थ जहां कहीं 80% से अधिक बिक्रिया समान पीसीएन की उत्पादन लागत से मात्रा द्वारा अधिक थीं, दिए गए पीसीएन के लिए समूची घरेलू बिक्रियां स्वीकार की गई थीं । जहां जहां कहीं लाभप्रद बिक्रियां बेची गई कुल मात्रा के 10% से 80% के बीच थीं वहां समान पीसीएन के लिए घरेलू बिक्री कीमत का परिकलन करने के लिए केवल लाभप्रद बिक्रियों पर ही विचार किया गया है न कि बिक्रियों की समूची मात्रा और कीमत पर । जहां पीसीएनएस के लिए उत्पादन लागत नहीं दी गई थी वहां प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत निकटतम डेनियर-वार उत्पादन लागत की उत्पादन लागत को अपनाया है । अतः प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पीसीएन-वार किया गया था ।

### निर्यात कीमत

29. मै. लीपेंग ने जांच अवधि के दौरान भारत को \*\*\*\*एनटीडी कीमत पर \*\*\*\* किग्रा. संबद्ध वस्तुएं निर्यात किया है । ये आंकड़े मात्रा और तारीखों के साथ आयातकों के नाम के संबंध में सरकारी आंकड़ों के साथ मेल खाते हैं । तथापि, उनके द्वारा वसूल की गई कीमतें बहुत अधिक भिन्न हैं और उनके परिशिष्ट 2 के अनुसार जांच अवधि के दौरान \*\*\*\* एनटीडी कीमत की तुलना में सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत औसत सीआईएफ कीमत केवल एनटीडी \*\*\*\* है । अतः प्रतिवादी निर्यातक द्वारा बतायी गई कीमत और सीमाशुल्क विभाग को वास्तविक रूप से रिपोर्ट की गई कीमत में विशाल अंतर है ।
30. एनएफवाई की प्रत्येक किस्म के लिए पृथक भारत औसत भारत को निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है, कीमत समायोजनों का दावा, भाड़े, बीमा, वारंटी जैसे समायोजनों के आधार पर

किया गया है जिनका प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया था । भारत को निर्यात कीमत के लिए प्राधिकारी ने लदान संबंधी सूचना, लदान बिल, भुगतान वसूली एवं बीजकों जैसे विभिन्न दस्तावेजों के अनुसार निर्यात बिक्रियों का सत्यापन किया है । पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए भारत को औसत पीसीएन-वार निर्यात बिक्रियों (निर्यातक द्वारा दावा किए गए और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सभी समायोजनों का निवल) की औसत पीसीएन-वार घरेलू बिक्रियों के साथ तुलना की गई थी । जहां भारत को निर्यातित समान पीसीएन की घरेलू बिक्री कीमत उपलब्ध नहीं थी, प्राधिकारी ने उत्पादन लागत और एक उचित लाभ मार्जिन को ध्यान में रखते हुए इन पीसीएनएस के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया । लाभ मार्जिन का परिकलन लाभप्रद बिक्री सौदों के लाभ को ध्यान में रखकर किया गया है हिन्हें कुल लाभप्रद बिक्री सौदों से विभाजित किया गया है । प्रतिवादी निर्यातक के लिए एक ही पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए इन अलग-अलग पीसीएन हेतु पाटन मार्जिन को भारत औसत बनाया गया था । प्रकटन के पश्चात निर्यातक द्वारा की गई टिप्पणियों के अनुसरण में प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के परिकलन में छोटी-छोटी त्रुटियों को सही किया है । निर्यातक के आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात पाटन मार्जिन का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉलर अथवा 35.50% के रूप में किया गया है ।

### दक्षिण कोरिया

#### उ-6 मै. हयोसुग-कोरिया गणराज्य

#### सामान्य मूल्य

31. सामान्य मूल्य का निर्धारण कोरिया गणराज्य में निर्यातक की संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर पूर्व के पैराग्राफों में उल्लिखित विधि के अनुसार किया गया है । अनंतिम जांच परिणामों के दौरान प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक हेतु उत्पादन लागत संबंधी आंकड़ों को स्वीकार नहीं किया था क्योंकि अपेक्षित आंकड़े प्राधिकारी द्वारा निर्यातक को भेजे गए प्रपत्र में नहीं थे और निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़े अपूर्ण थे । प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात और सत्यापन के दौरान प्राधिकारी ने घरेलू बिक्री आंकड़ों का निर्यातक द्वारा रखे गए रिकार्डों के साथ सत्यापन किया था । यह स्मरण किया जाता है कि प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल तीन मापदंडों पर विचार किया है क्योंकि निर्यातकों ने उत्पाद नियंत्रण संख्या (डेनियर, फिलामेंट, क्रास-सेक्शन चमक, ग्रेड, रंग एवं

पैकिंग को ध्यान में रखते हुए पीसीएन अथवा उत्पाद वर्णन) के लिए समूची सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। संशोधित आंकड़ों के साथ यह निर्धारण करने के लिए कि क्या समान पीसीएन हेतु भारत को की गई निर्यात बिक्रियों की तुलना में घरेलू बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में थी, पीसीएन-वार अपर्याप्तता परीक्षण किया गया था। तत्पश्चात, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की साधारण प्रक्रिया में थीं अथवा नहीं, 18-20 परीक्षण किए गए थे। इसके पश्चात घरेलू बिक्री कीमत के प्रयोजनार्थ जहां कहीं 80% से अधिक बिक्रिया मात्रा द्वारा समान पीसीएन की उत्पादन लागत से अधिक थीं, दिए गए पीसीएन के लिए समूची घरेलू बिक्रियां स्वीकार की गई थीं। जहां 10% से 80% के बीच थीं वहां समान पीसीएन के लिए केवल लाभप्रद बिक्रियों पर ही विचार किया गया है न कि बिक्रियों की समूची मात्रा और कीमत पर। जहां पीसीएनएस के लिए उत्पादन लागत नहीं दी गई थी वहां प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत निकटतम डेनियर-वार उत्पादन लागत की उत्पादन लागत को अपनाया है। अतः प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पीसीएन-वार किया गया था।

32. यह स्मरण किया जाता है कि प्राधिकारी ने सूचना की प्राधिकारी द्वारा विस्तृत जांच और सत्यापन हो जाने तक प्रारंभिक जांच द्वारा परिणाम के दौरान प्रतिवादी निर्यातक की निर्यात कीमत स्वीकार की थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात यह नोट किया गया था कि निर्यातक भारत को सीधे और विभिन्न व्यापारियों के जरिए भी निर्यात कर रहा है। अप्रत्यक्ष निर्यातों के लिए निर्यातक दूसरे व्यापारी पर बीजक उठा रहा था जो कीमत रूप से और परिणामस्वरूप भारत को निर्यात कर रहा था। तथापि, सत्यापन के दौरान आयातक द्वारा किसी निर्यात कीमत अथवा भुगतान अथवा व्यापारी द्वारा कमीशन का कोई साक्ष्य प्राधिकारी को प्रस्तुत नहीं किया गया था। जवाब दाखिल करने के दौरान इन व्यापारियों ने भारत में कीमतों और ग्राहकों के अनुसार प्राधिकारी को सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान यह निवेदन किया गया था संबद्ध वस्तुएं समुद्री जहाज से सीधे भारत आयी थी, तथापि, संबद्ध वस्तु के निर्यातकों ने कीमतों और भारतीय ग्राहकों को उनके निर्यात में विभिन्न समायोजनों के संबंध में कोई सूचना प्रदान नहीं की थी। यद्यपि मै. हयोसुंग ने इन व्यापारियों द्वारा भारत को भेजे गए प्रेषण की कुछेक फैक्स प्रतियां अवश्य उपलब्ध करायी थीं, लेकिन यह साक्ष्य के साथ इस बात को साबित नहीं कर सका कि ये संबद्ध वस्तुएं भारत में एक दी गई कीमत पर भेजी गई थीं। उसके पश्चात प्राधिकारी ने भारत को निर्यात कीमत का परिकलन करने के लिए मै. हयोसुंग द्वारा भारतीय ग्राहकों को किए गए प्रत्यक्ष निर्यातों पर ही विचार किया है। एनएफवाई की प्रत्येक

किस्म के लिए भारत को पृथक भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है। कीमत समायोजनों का दावा भाड़े, बीमा, वारंटी जैसे समायोजनों के कारण किया गया है। भारत को निर्यात बिक्रियों के लिए प्राधिकारी ने विभिन्न दस्तावेजों जैसे लदान संबंधी सूचना, लदान बिल, भुगतान वसूली और बीजकों के अनुसार निर्यात बिक्रियों का दावा किया है। भारत को औसत पीसीएन-वार निर्यात बिक्रियों (निर्यातक द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सभी समायोजनों का निवल) की पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए औसत पीसीएन-वार निर्यात बिक्रियों के साथ तुलना की गई थी। जहां कहीं भारत को निर्यातित समान पीसीएन की घरेलू बिक्री कीमत उपलब्ध नहीं थी वहां प्राधिकारी ने उत्पादन लागत और एक उचित लाभ मार्जिन को ध्यान में रखते हुए इन पीसीएनएस के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। लाभ मार्जिन का परिकलन लाभप्रद बिक्री सौदों के लाभ को ध्यान में रखते हुए किया गया है जिसको कुल लाभप्रद बिक्री सौदों से विभाजित किया गया है। प्रतिवादी निर्यातक के लिए एक एकल पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु अलग-अलग पीसीएन के लिए ये पाटन मार्जिन भारत औसत किए गए थे। निर्यातक के आंकड़ों के विश्लेषण के दौरान पाटन मार्जिन का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉलर अथवा 47.47% के रूप में किया गया है।

#### ड 7 मै. टेइकवांग (टी के आई) - कोरिया

##### सामान्य मूल्य

33. घरेलू बाजार में वास्तविक बिक्रियों का दावा गैर-मुख्य सामग्री के रूप में किया गया है और गैर-मुख्य ग्रेड की उत्पादन लागत मुख्य उत्पाद की उत्पादन लागत से अत्यधिक कम होने का दावा किया गया था। तथापि, प्राधिकारी ने गैर-मुख्य ग्रेड के लिए उत्पादन की कम लागत को स्वीकार नहीं किया था और इसे मुख्य ग्रेड की उत्पादन लागत के समान लिया था। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात और सत्यापन के दौरान प्राधिकारी ने घरेलू बिक्री आंकड़ों का निर्यातक द्वारा रखे गए रिकार्डों के साथ सत्यापन किया था। यह स्मरण किया जाता है कि प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल तीन मापदंडों पर विचार किया है क्योंकि निर्यातकों ने उत्पाद नियंत्रण संख्या (डेनियर, फिलामेंट, क्रास-सेक्शन चमक, ग्रेड, रंग एवं पैकिंग को ध्यान में रखते हुए पीसीएन अथवा उत्पाद वर्णन) के लिए समूची सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। संशोधित आंकड़ों के साथ यह निर्धारण करने के लिए कि क्या समान पीसीएन हेतु भारत को की गई निर्यात बिक्रियों की तुलना में घरेलू बिक्रियां पर्याप्त मात्रा में थी, पीसीएन-वार अपर्याप्तता परीक्षण

किया गया था । तत्पश्चात्, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की साधारण प्रक्रिया में थीं अथवा नहीं, 18-20 परीक्षण किए गए थे । इसके पश्चात् घरेलू बिक्री कीमत के प्रयोजनार्थ जहां कहीं 80% से अधिक बिक्रिया मात्रा द्वारा समान पीसीएन की उत्पादन लागत से अधिक थीं, दिए गए पीसीएन के लिए समूची घरेलू बिक्रियां स्वीकार की गई थीं । जहां 10% से 80% के बीच थीं वहां समान पीसीएन के लिए केवल लाभप्रद बिक्रियों पर ही विचार किया गया है न कि बिक्रियों की समूची मात्रा और कीमत पर । जहां पीसीएनएस के लिए उत्पादन लागत नहीं दी गई थी वहां प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत निकटतम डेनियर-वार उत्पादन लागत की उत्पादन लागत को अपनाया है । अतः प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पीसीएन-वार किया गया था ।

### निर्यात कीमत

34. सत्यापन के दौरान, निर्यातक ने इस बात की पुष्टि की कि उसने उस राशि के लिए वाणिज्यिक बीजक जारी किया था जो उसने टी-टी के जरिए भुगतान और शेष एल/सी भुगतान के रूप में प्राप्त की थी । निर्यातकों ने यह भी अनुरोध किया था कि उन्होंने उक्त बीजक के लिए भारत को किए गए पोतलदानों के बारे में पूर्ण भुगतान प्राप्त कर लिया है । तथापि, डीजीसीआईएंड एस द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना (भारत में उसके ग्राहकों से मिलान करके) से यह पता चलता है कि निर्यातकों ने उतनी ही मात्रा के लिए अपेक्षाकृत कम मूल्य के प्रविष्टि बिल दायर किए हैं जिससे संबद्ध सौदों की पहुंच कीमत निर्यातक के दावे से काफी कम हो गई है । वस्तुतः कुछ ही मामलों में डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों के अनुसार सौदा राशि भारतीय आयातकों द्वारा एल/सी के जरिए भुगतान की गई राशि से मेल खाती है । सत्यापन प्रक्रिया के दौरान निर्यातक को यह सूचित किया गया था कि भारतीय सीमाशुल्क द्वारा दर्ज निर्यात कीमत बीजक की वास्तविक कीमत तथा निर्यातक द्वारा भारतीय आयातक को पोतलदान की कीमत से संबंधित है और इस प्रकार निर्यात कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ केवल एल/सी भुगतान के जरिए प्राप्त भुगतान तथा भारतीय आयातक द्वारा या वाणिज्यिक बीजक में उल्लिखित मूल्य के भुगतान को ही ध्यान में रखा गया था । इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने निर्यातक के दावे के अनुसार निर्यात कीमत को हिसाब में लिया है और उसे उक्त सौदों के लिए डीजीसीआईएंड एस/पत्तन आंकड़ों में सूचित कीमत में जहां कहीं अंतर दिखाई दिया है, में समायोजित किया गया है । उपर्युक्त स्पष्टीकरण के अनुसार एनएफवाई के प्रत्येक प्रकार के लिए भारत हेतु पृथक् भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया



है। अंतर्देशीय भाड़े, बीमा, ऋण लागत, शुल्क प्रति अदायगी आदि के लिए कीमत समायोजनों का दावा किया गया है जिनका प्राधिकारी ने सत्यापन किया है। भारत को निर्यात बिक्री के लिए प्राधिकारी ने नौवहन सूचना, उत्तराई बिल, भुगतान प्राप्ति और बीजक जैसे विभिन्न दस्तावेजों के अनुसार निर्यात बिक्री का सत्यापन किया। भारत को औसत पीसीएन वार निर्यात बिक्री (निर्यातक द्वारा दावा किए गए और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित समस्त समायोजनों को छोड़कर) की तुलना पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु औसत पीसीएन-वार घरेलू बिक्री के साथ की गई थी। जहां कहीं भारत को निर्यातित तदनुरूपी पीसीएन की घरेलू बिक्री कीमत उपलब्ध नहीं थी वहां प्राधिकारी ने उत्पादन लागत तथा उचित लाभ मार्जिन को ध्यान में रखते हुए इन पीसीएन के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया था। लाभ मार्जिन की गणना लाभ वाले बिक्री सौदे को कुल लाभ वाली बिक्री कीमतों द्वारा विभाजित कर की गई थी। अलग-अलग पीसीएन के लिए यह पाटन मार्जिन प्रतिवादी निर्यातक के लिए एकल पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु भारत औसत था। निर्यातक के आंकड़ों के विश्लेषण के दौरान पाटन मार्जिन \*\*\*\* अम.डा. या 49.9% बनता है।

### मलेशिया

#### ड 8 मै. हुआलोन कार्पोरेशन

#### सामान्य मूल्य

35. प्रारंभिक जांच परिणामों के दौरान यह नोट किया गया था कि निर्यातक ने अलग-अलग डेनियरों तथा अन्य मापदंडों के लिए पीसीएन-वार पृथक उत्पादन लागत उपलब्ध नहीं की थी। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद और सत्यापन के दौरान प्रतिवादी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के प्रपत्र में और ढंग से तथा पीसीएन वार अपेक्षित सूचना प्रस्तुत की थी। प्राधिकारी ने घरेलू बिक्री के आंकड़ों का सत्यापन निर्यातक के रिकार्डों के साथ किया था। यह स्मरणीय है कि प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल तीन मापदंडों को ध्यान में रखा है क्योंकि निर्यातकों ने उत्पाद नियंत्रण संख्या (पीसीएन) या डेनियर के अनुसार उत्पाद विवरण, फिलामेंट, क्रॉस सैक्शन, चमक, ग्रेड, रंग और पैकिंग के बारे में समग्र सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। तथापि प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद और सत्यापन के दौरान निर्यातक ने प्राधिकारी द्वारा संशोधित पीसीएन के अनुसार संशोधित परिशिष्टें प्रस्तुत की थीं। संशोधित आंकड़ों के कारण यह निर्धारित करने के लिए पीसीएन-वार पर्याप्ततः जांच की गई थी कि क्या घरेलू बिक्री तदनुरूपी पीसीएन की भारत को निर्यात बिक्री की तुलना में

पर्याप्त मात्रा में की गई थी। तत्पश्चात्, यह निर्धारित करने के लिए 80-20 जांच की गई थी कि क्या घरेलू बिक्री व्यापार की सामान प्रक्रिया में की गई थी अथवा नहीं। इसके बाद उल्लिखित पीसीएन की समूची घरेलू बिक्री को घरेलू बिक्री कीमत के प्रयोजनार्थ स्वीकार किया गया था। जहां मात्रा के अनुसार 80% से अधिक बिक्री उसी पीसीएन की उत्पादन लागत से अधिक कीमत पर हुई थी। जहां कहीं लाभ वाली बिक्री बेची गई कुल मात्रा के 10% और 80% के बीच रही थी वहां तदनुरूपी पीसीएन की घरेलू बिक्री कीमत निकालने के लिए केवल लाभ वाली बिक्री को ध्यान में रखा गया था न कि बिक्री की कुल मात्रा और कीमत को। इस प्रकार, प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य पीसीएन-वार निर्धारित किया गया था।

### निर्यात कीमत

36. यह स्मरणीय है कि प्राधिकारी ने विस्तृत जांच और उसके द्वारा सूचना के सत्यापन के अधीन प्रारंभिक जांच परिणाम के दौरान प्रतिवादी निर्यातक की निर्यात कीमत स्वीकार की थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद यह नोट किया गया था कि निर्यातक सीधे और विभिन्न व्यापारियों के जरिए भी भारत में निर्यात कर रहा है। अप्रत्यक्ष निर्यातों के लिए निर्यातक अन्य व्यापारी से संबंधित माल सूची उठा रहा था जो कठित रूप में और बाद में भारत को निर्यात कर रहा था। तथापि, किसी निर्यात कीमत अथवा व्यापारी द्वारा कमीशन अथवा आयातक द्वारा भुगतान का कोई साक्ष्य जांच के दौरान प्राधिकारी को प्रस्तुत नहीं किया गया था। उत्तर प्रस्तुत करते समय इन व्यापारियों ने भारत में कीमतों और ग्राहकों के अनुसार प्राधिकारी को सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। जांच प्रक्रिया के दौरान यह निवेदन किया गया था कि संबद्ध वस्तु भारत को सीधे ही प्रदान की गई थी। तथापि, संबद्ध वस्तु के निर्यातकों ने भारतीय ग्राहकों को अपने निर्यात में कीमतों पर विभिन्न समायोजनों के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई थी। मैसर्स वालन साक्ष्य के साथ यह साबित नहीं कर सका कि संबद्ध वस्तु भारत को किसी दी गई कीमत पर भेजी गई थी। तत्पश्चात्, प्राधिकारी ने भारत को निर्यात कीमत की गणना करने हेतु मैसर्स वॉलन द्वारा भारतीय ग्राहकों को किए गए केवल सीधे निर्यातों की गणना में लिया है। भारत को अलग भारित औसत निर्यात कीमत एनएफवाई की प्रत्येक किस्म के लिए निर्धारित की गई है जैसा कि उपरोक्त स्पष्ट किया गया है। भाड़े, बीमे, वारंटी जैसे समायोजनों के कारण कीमत समायोजनों का दावा किया है। भारत को निर्यात बिक्रियों के लिए प्राधिकारी ने लागान सूचना, लगान बिल, भुगतान वसूली और माल सूचियों जैसे विभिन्न दस्तावेजों के अनुसार निर्यात बिक्रियों की जांच की थी।

भारत को औसत पीसीएनवार निर्यात बिक्रियों (निर्यातक द्वारा दावा किए गए सभी निवल समायोजनों और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित) की तुलना पाटन मार्जिन निर्धारित करने हेतु औसत पीसीएन-वार घरेलू बिक्रियों के साथ की गई थी। जहां कहीं भारत को निर्यातित समनुरूपी पीसीएन की घरेलू बिक्री कीमत उपलब्ध नहीं हुई थी, प्राधिकारी ने उत्पादन लागत और उचित लाभ मार्जिन को गणना में लेकर इन पीसीएन का सामान्य मूल्य परिकलित किया था। लाभ मार्जिन की गणना लाभकारी बिक्री सौदों के लाभ को समस्त लाभकारी बिक्री कीमतों से भाग देकर उसे गणना में लेते हुए पारिकलित किया गया था। अलग-अलग पीसीएन के लिए पाटन मार्जिन उत्तरदाता के लिए एकल पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु भारत औसत थी। निर्यातकों के आंकड़ों का विश्लेषण करते समय पाटन मार्जिन \_\_\_\_\_ अम.डॉ. अथवा 3.9% परिकलित किया गया था।

### थाइलैंड

#### ड 9 मै. थाई थाफेटा:-

प्रारंभिक जांच परिणामों के दौरान यह नोट किया गया था कि निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के विभिन्न परिशिष्टों के संबंध में पूर्ण सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के दौरान यह भी नोट किया गया था कि निर्यातक ने विभिन्न डेनियरों तथा अन्य मापदंडों के लिए निर्धारित प्रपत्र ने पी सी एन वार अलग-अलग उत्पादन लागत प्रस्तुत नहीं की थी। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् और सत्यापन के दौरान निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली पत्र के रूप एवं पद्धति में तथा पी सी एन वार अपेक्षित सूचना प्रस्तुत की थी प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् तथा सत्यापन के दौरान प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा रखे गए रिकार्ड से घरेलू बिक्री के आंकड़ों का सत्यापन किया। यह स्मरण किया जाता है कि प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल तीन मापदंडों पर विचार किया था क्योंकि निर्यातकों ने उत्पाद नियंत्रण संख्या (पी सी एन अथवा डेनियर, फिलामेंट, क्रॉस सेक्शन, लस्टर, श्रेणियों, रंग एवं पैकिंग पर विचार करते हुए उत्पाद विवरण) के लिए समग्र सूचना प्रस्तुत नहीं की थी। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् और सत्यापन के दौरान निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा संशोधित पीसी एन के अनुरूप संशोधित परिशिष्ट प्रस्तुत किए। संशोधित आंकड़ों के साथ यह निर्धारित करने के लिए पी सी एन वार पर्याप्तता जांच की गई थी कि क्या संबंधित पी सी एन के लिए भारत में निर्यात बिक्रियों के साथ तुलना किए जाने पर घरेलू बिक्रियाँ पर्याप्त मात्रा में थीं। इसके पश्चात् यह निर्धारित करने के लिए 80-20 जांच की गई थी कि क्या घरेलू बिक्रियाँ व्यापार के सामान्य प्रक्रिया में थी अथवा नहीं। इसके

पश्चात् जहाँ कहीं भी एक ही पी सी एन के लिए मात्रा के रूप में 80% से अधिक बिक्रियाँ उत्पादन लागत से अधिक थीं, वहाँ घरेलू बिक्री कीमत के प्रयोजनार्थ उस पी सी एन के लिए समग्र घरेलू बिक्रियों को स्वीकार कर लिया गया था। जहाँ कहीं भी लाभप्रद बिक्रियाँ कुल बिक्री की गई मात्रा के 10% से 80% के बीच थीं, वहाँ उस पी सी एन के लिए घरेलू बिक्री कीमत के परिकलन हेतु केवल लाभप्रद बिक्रियों पर और न कि कुल बिक्री मात्रा एवं कीमत पर विचार किया गया था। इस प्रकार, उत्तर देने वाले निर्यातक के लिए पी सी एन वार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया था।

### निर्यात कीमत

- 38 जैसा कि उपर स्पष्ट किया गया है कि भारत को निर्यात किए गए एन एफ वाई के प्रत्येक प्रकार के लिए भारत औसत निर्यात कीमत का अलग-अलग निर्धारण किया गया है। कीमत समायोजनों का दावा भाड़े, ऋण लागत, सीमाशुल्क निकासी, पैकिंग इत्यादि के आधार पर किया गया है, जिनका सत्यापन कर लिया गया है। सत्यापन के दौरान, निर्यातक ने इस बात की पुष्टि की कि उसने एक निश्चित राशि के लिए जो उसे टी-टी के माध्यम से भुगतान के रूप में प्राप्त हुई थी और बकाया एल/सी भुगतान के लिए वाणिज्यिक बीजक में वृद्धि की थी। निर्यातकों द्वारा यह निवेदन भी किया गया था कि उन्होंने उक्त बीजक के लिए भारत को भेजे गए लदानों के संबंध में पूर्ण भुगतान प्राप्त कर लिया है। तथापि, डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए आंकड़ों (भारत में अपने ग्राहकों के साथ सहसम्बद्धता करके) से यह पता चलता है कि, आयातकों ने एक मात्रा के लिए उससे कम मूल्य के प्रविष्टि बिल प्रस्तुत किए हैं जिसके कारण संबंधित सौदों का पहुंच मूल्य, निर्यातक द्वारा दावा की गई कीमत से काफी कम था। तथ्यतः कुछ मामलों में डीजीसीआईएस आंकड़ों के अनुसार सौदा राशि, भारतीय आयातकों द्वारा एल/सी के जरिए भुगतान की गई राशि से मेल खाती है। सत्यापन प्रक्रिया के दौरान निर्यातक को यह सूचना दी गई थी कि भारतीय सीमा शुल्क प्राधिकारियों द्वारा दर्ज की गई निर्यात कीमत, भारतीय आयातकों को निर्यातक द्वारा वास्तविक बीजक के अनुसार भेजी गई खेपों की कीमतों से संबंधित है और इसलिए निर्यात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ वाणिज्यिक बीजक में दी गई केवल उस कीमत, जिसके लिए साक्ष्य दिया गया है और एल/सी भुगतान द्वारा किया गया भुगतान अथवा वाणिज्यिक बीजक में दिए गए मूल्य के लिए भारतीय आयातक द्वारा किए गए भुगतान पर विचार किया है। इसके प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा दावा की गई निर्यात कीमत जिसको उक्त सौदों के लिए डीजीसीआईएस/पत्तन आंकड़े में सूचित कीमत के साथ समायोजित किया गया है, पर विचार किया है परंतु, उसमें भिन्नता प्रदर्शित हुई थी। निर्यातक द्वारा

अंतरदेशीय भाड़े, कमीशन, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा और अन्य प्रभारों के आधार पर दावा किए गए समायोजनों के सत्यापन के पश्चात् अनुमति दे दी गई है। जैसा कि ऊ स्पष्ट किया गया है कि भारत को निर्यात किए गए एन एफ वाई के प्रत्येक प्रकार के लिए भारित औसत निर्यात कीमत का अलग-अलग निर्धारण किया है। कीमत समायोजनों का दावा भाड़े, बीमा, वारंटी जैसे समायोजनों के आधार पर किया गया है। भारत को निर्यात बिक्री के लिए प्राधिकारी ने नौवहन संबंधी सूचना, लदान बिल भुगतान वसूली और बीजकों जैसे विभिन्न दस्तावेजों के संदर्भ में निर्यात बिक्री का सत्यापन किया है। पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए भारत को औसत पी सी एन वार निर्यात बिक्री निर्यातकों द्वारा दावा किए गए और प्राधिकारी दावा सत्यापित समायोजनों के पश्चात् शेष राशि की तुलना औसत पी सी एन वार घरेलू बिक्री से की गई थी। जहां कहीं भी भारत को निर्यातित तदनुरूपी पी सी एन की घरेलू बिक्री कीमत उपलब्ध नहीं थी, प्राधिकारी ने इन पी सी एन्स के लिए उत्पादन लागत और उचित लाभ मार्जिन पर विचार करते हुए परिकल्पित सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। लाभ मार्जिन का निर्धारण लाभकारी बिक्री सौदों को कुल लाभकारी कीमत से विभाजित करके किया गया है, दावा निर्यातक के लिए एक मात्र पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु अलग-अलग पाटन मार्जिन का भारित औसत निकाला गया था। निर्यातक के आंकड़ों के विश्लेषण के दौरान, पाटन मार्जिन \*\*\*\* अम. डॉ. अथवा 25.74% बनता है।

#### ड. मे0 एशिया फाइबर

##### सामान्य मूल्य

- 39 सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में, प्रारंभिक जांच परिणाम के दौरान यह नोट किया गया था कि निर्यातक ने केवल एक उत्पाद की लागत उपलब्ध कराई है जो भारत को निर्यात किया जाता है और घरेलू बाजार में बेचा भी जाता है। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् और सत्यापन के दौरान, उत्तर देने वाले निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के स्वरूप और पद्धति में और पी सी एन वार, अपेक्षित सूचना प्रस्तुत की थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् और सत्यापन के दौरान, प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा रखे गए रिकॉर्डों के साथ घरेलू बिक्री आंकड़ों का सत्यापन किया। यह स्मरण किया जाता है कि चूंकि निर्यातकों ने उत्पाद नियंत्रण संख्या (पी सी एन) के संबंध में अथवा डेनियर, फिलामेंट, क्रॉस सेक्शन, चमक, ग्रेडों, रंग और पैकिंग के संबंध में उत्पाद विवरण के विषय में पूर्ण सूचना उपलब्ध नहीं कराई थी इसलिए प्राधिकारी ने सभी निर्यातकों को पाटन मार्जिन के निर्धारित के प्रायोजनार्थ केवल तीन मानदंडों पर विचार किया है। तथापि प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् और सत्यापन के दौरान निर्यातकों

ने प्राधिकारी द्वारा संशोधित पी सी एन्स के संदर्भ में संशोधित परिशिष्ट प्रस्तुत किए हैं। संशोधित आंकड़ों के साथ यह निर्धारित करने के लिए कि क्या तदनुरूपी पी सी एन के लिए भारत को निर्यात बिक्री की तुलना में घरेलू बिक्री पर्याप्त रूप से की गई है, पर्याप्तता जांच पी सी एन वार की गई है। उक्त सौदा पर्याप्त मात्रा में हुआ था। तत्पश्चात् सामान्य मूल्य का निर्धारण, उसी घरेलू बाजार में, जो भारत को निर्यात करता था, बेचे गए उसी पी सी एन की घरेलू बिक्री कीमत पर विचार करके किया गया था।

### निर्यात कीमत

40. मै. एशिया फाइबर ने भारत की 9404 कि.ग्रा. मात्रा का 1.85 अम.डॉ./कि.ग्रा. के सी आई एफ स्तर पर सकल बिक्री कीमत प्रति कि.ग्रा. पर निर्यात किया है। अंतिम जांच के प्रयोजनार्थ और इस मामले में सत्यापन के पश्चात् उत्तरदाता निर्यातक द्वारा पैकिंग अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा और नौवहन प्रभार के आधार पर दावा किए गए समायोजनों की दावे के अनुसार अनुमति प्रदान की गई है। निर्यातक के आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् प्रस्तावित पाटन मार्जिन \*\*\*\* अम. डॉ. 31% है।

### इंडोनेशिया

41. चूंकि इंडोनेशिया से किसी भी उत्पादक/निर्यातक से कोई सहयोग प्राप्त नहीं हुआ था अतः सामान्य मूल्य का परिकलन सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर किया गया है। भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण आई बी आई एस आंकड़ों के आधार पर किया गया है। जांच के पश्चात् पाटन मार्जिन \*\*\*\* अम. डॉ. अथवा 118% बनता है।

### (ग) तुलना और पाटन मार्जिन

42. संबंधित पैराग्राफी में उल्लिखित सामान्य मूल्य अथवा (निर्मित सामान्य मूल्य) तथा कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ, कीमतों तथा कीमत तुलनात्मकता को प्रभावित करने वाले अंतरों के लिए अनंतिम निर्धारण के पश्चात् उनके सत्यापन के अध्यक्षीन समायोजनों के रूप में समुचित अनुमति दी गई है। संबद्ध देश के अन्य उत्पादकों तथा निर्यातकों के लिए, जिन्होंने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है तथा जिन्होंने उनकी निर्यातक प्रश्नावलियों को प्रस्तुत नहीं किया है, सामान्य मूल्य उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है जबकि निर्यात कीमत का

निर्धारण अधिकारिक सांख्यिकी में उपलब्ध कीमत के आधार पर किया गया है। प्राधिकारी ने कारखाना द्वार कीमत पर अलग-अलग पी सी एन्स के लिए सामान्य मूल्यों और निर्यात कीमत के बीच तुलना करते हुए प्रत्येक पी सी एन्स (डेनियर, फिलामेन्ट क्रॉस-सेक्शन, चमक, ग्रेडों, रंग और पैकिंग के आधार पर पी सी एन और उत्पाद विवरण) के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है। यह तुलना उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा विनिर्मित तथा जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के प्रत्येक पी सी एन की भारित औसत बिक्री कीमत पर आधारित थी जिसके लिए तुलनीय प्रकार की संबद्ध वस्तुएं मौजूद हो। अतः भारित औसत समग्र पाटन मार्जिन का निर्धारण प्रत्येक प्रकार पर पाए गए ऋणात्मक पाटन को शून्य बनाए बिना पाटन का परिकलन करके किया है। इस तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं के पाटन की मौजूदगी प्रदर्शित होती है। भारित औसत पाटन मार्जिन, जिसे निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया है, का निर्धारण किया गया है।

देश	उत्पादन/निर्यातक	पाटन मार्जिन अम.डा.	पाटन मार्जिन%
चीन जन.गण	मै. जीनन जूडा फाइबर कं. लि.	****	83
	अन्य	****	83
कोरिया गणराज्य	टेक्वांग इंडस्ट्रीयल कं. लि.	****	49.9
	ह्योसंग कार्पोरेशन	****	47.47
	अन्य	****	74
मलेशिया	हुआलॉन कार्पोरेशन	****	3.9
	अन्य	****	53.7
चीनी ताइपेई	सन्टेक्स फाइबर कं. लि.	****	8
	लिपेंग एंटरप्राइजेज कं. लि.	****	35.5
	अन्य	****	68
थाइलैंड	एशिया फाइबर पब्लिक कंपनी लि.	****	31
	थाई टफेटा कं. लि.	****	25.74
	अन्य	****	59.45
इंडोनेशिया	सभी उत्पादक/निर्यातक	****	110

### घ. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

#### क्षति निर्धारण की पद्धति एवं कारणात्मक संबंध की जांच

##### घ. 1 निर्यातकों, आयातकों, प्रयोक्ताओं आदि के विचार

43. घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है, क्षति यदि कोई हो, तो वह कथित पाटन के कारण नहीं है। घरेलू उद्योग का परस्पर कीमत निर्धारण एवं बाजार का विश्लेषण यह निर्धारित करने के लिए किया जाना चाहिए कि क्या औरों को घाटा हो रहा है और कुल प्रभाव से घरेलू उत्पादों को घाटा प्रदर्शित होता है। यह भी निवेदन किया गया है कि न तो मात्रात्मक क्षति हुई है और न ही कीमत संबंधी क्षति। यद्यपि पाटन को अस्वीकार किया गया है, तथापि यह प्रश्न सतत

है कि यदि वर्षों से पाटन हो रहा था तो केवल जांच अवधि के दौरान ही क्षति कैसे हुई, जो यह भी इंगित करता है कि जांच अवधि के दौरान हुई क्षति पाटन से इतर कारणों से है। घरेलू उद्योग का बढ़ा हुआ उत्पादन उसके व्यापार के आकर्षण को दर्शाता है। यह भी निवेदन किया गया है कि मांग के साथ-साथ बिक्री, आयात में भी वृद्धि हुई। चूंकि सेंचुरी एंका ने इसका समर्थन किया है और बड़ौदा रेयॉन ने इसका विरोध नहीं किया है अतः समग्र रूप से उद्योग के आंकड़ों पर विचार करते हुए मात्रात्मक प्रभाव की जांच की जानी चाहिए। घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि किसी प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव की अनुपस्थिति को दर्शाती है। बिक्री, आयात आदि में वृद्धि संबंधित उत्पाद की मांग में वृद्धि के साथ हुई है। घरेलू उद्योग की तुलना में अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री में अत्यधिक वृद्धि हुई है जो प्रथम दृष्टया यह दर्शाती है कि कथित पाटन से इतर कारणों के कारण अन्य उत्पादकों द्वारा वृद्धि के अनुरूप आवेदक की बिक्री बढ़ाने की क्षमता में बाधा आई है। यह भी कहा गया है कि आवेदक भारत में उत्पाद की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने में असमर्थ थे जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता आयात करने के लिए बाध्य हुए। जांच अवधि में आयात मात्राओं एवं कीमतों में कथित परिवर्तन, आवेदक के रोजगार स्तरों में कथित अकस्मात गिरावट से कम था। आवेदकों ने उत्पादकता लाभों को स्वीकार किया है। प्राधिकारी को आवेदकों के इस आरोप को सावधानीपूर्वक लेना चाहिए और उन्हें श्रमिक संबंधी समस्याओं को देखना चाहिए तथा उनके निष्पादन की तुलना अन्य घरेलू उत्पादकों से करनी चाहिए। सभी घरेलू उत्पादकों, आयातकों एवं प्रयोक्ताओं के समग्र रोजगार में वृद्धि होने की संभावना है। कोई कीमत कटौती नहीं हुई है जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि आवेदकों की निवल बिक्री प्राप्ति में वृद्धि हुई जबकि संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य में कथित रूप से गिरावट आई। आवेदकों ने लगभग 17 रु./- की निवल बिक्री प्राप्ति को अप्रत्यक्ष रूप से माना है और उससे अस्वीकार नहीं किया है। यह भी निवेदन किया गया है कि माल सूची में गिरावट आई है। चूंकि अन्य उत्पादकों के उत्पादन, उपयोग एवं बिक्रियों में अत्यधिक वृद्धि हुई है अतः आवेदक के पाटन को बहुत सावधानी से लेना चाहिए। आवेदकों तथा अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री में अत्यधिक वृद्धि हुई है क्योंकि उन्होंने अन्य देशों से कथित रूप से बहुत उच्च कीमतों पर आयात किया है। अतः कीमत को एक प्रमुख कारक के रूप में नहीं देखा जाता है। कोई कीमत कटौती नहीं हुई है। कोई कारणात्मक संबंध नहीं है बल्कि आवेदकों ने जांच अवधि में क्षति तथा जांच अवधि के दौरान निष्पादन में सुधार को माना है। अन्य देशों से आयातों की मात्रा में घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि की तुलना में अधिक बढ़ोत्तरी हुई है और न्यूनतम से कम को बाहर किए जाने का परिहार करने के लिए संचयी अवसीमा से संचयी रूप से अधिक है। कुछ अन्य देशों की निर्यात कीमतें जांच अवधि में संबद्ध देशों की निर्यात कीमतों की रेंज में हैं। किसी भी मामले में, संबद्ध देशों सहित आयात कीमतों में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि हुई। प्राधिकारी ने क्षति संबंधी मापदण्डों के संबंध में तुलना आंकड़ों/सूचना के आधार पर घरेलू उद्योग को क्षति का आकलन किया है जो अनुचित है और संबंधित कंपनियों की वार्षिक रिपोर्ट में दिए गए के



अनसार एनएफवाई धारक के संबंध में याचिकाकर्ता के वास्तविक निष्पादन के विपरीत है। इस प्रयोजनार्थ सूचना एकत्र करने का मुख्य स्रोत संबंधित कंपनियों का वित्तीय रिकॉर्ड है। अतः निष्पादन एवं वार्षिक रिपोर्टों में विरोधाभास युक्तिसंगत नहीं है। क्षमता उपयोग के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा किए गए विश्लेषण जे सी टी एवं मोदीपॉन द्वारा वार्षिक रिपोर्टों में दर्शाए गए के विपरीत है। प्राधिकारी द्वारा इसकी पुनः जांच की जानी चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी के अनुसार घरेलू उद्योग के पी बी सी की जो स्थिति है, वह जे सी टी और मोदीपॉन की वार्षिक रिपोर्टों के विपरीत है। यह एक माना हुआ तथ्य है कि आवेदकों की कोई आदर्श क्षमता नहीं है और वे भारत में उत्पाद की मांग को पूरा कर पाने में असफल रहे हैं। यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग की कीमतों पर कोई दबाव नहीं है क्योंकि पूरी जांच अवधि के दौरान कीमतों में वृद्धि होती रही है।

## च. 2 घरेलू उद्योग के विचार

44. यह निवेदन किया गया है कि अनुबंध II में मात्रात्मक क्षति या कीमत संबंधी क्षति या दोनों का प्रावधान है। यह भी कहा गया है कि घरेलू उद्योग को मात्रात्मक एवं कीमत संबंधी क्षति दोनों का सामना करना पड़ा है। आयात केवल 4000 मी.ट. से बढ़कर 16,000 मी.ट. हो गए हैं, परिणामतः घरेलू उद्योग में अपनी बिक्रियां और बाजार हिस्सा गंवाया है। भारत में उत्पाद की मांग में बहुत अधिक सकारात्मक वृद्धि हुई है तथापि घरेलू उद्योग अपना बाजार हिस्सा बनाए रखने में असमर्थ रहा है। मांग में वृद्धि और घरेलू उद्योग की बिक्रियों में कम वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को उत्पादन का घाटा हुआ। घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता बढ़ाई है जो मांग में वृद्धि के अनुमान पर था। मांग में क्षमता में वृद्धि से अधिक वृद्धि हुई, तथापि बाजार में पाटित संबद्ध वस्तुओं की उपलब्धता के कारण घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पाया है। यह भी निवेदन किया गया है कि पूर्व में, जब पाटित आयातों की मात्रा कम थी और कीमत अपेक्षाकृत अधिक थी (कच्चे माल की कीमत की तुलना में) तब घरेलू उद्योग के घटक अधिक उत्पादन कर पाए थे। तथापि, मांग में वृद्धि के साथ आयात में मांग से भी अधिक वृद्धि हुई, वह भी पाटित कीमतों पर, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई। इष्टतम उपयोग की स्थिति में घरेलू उद्योग के घटकों को उत्पादन 36785 मी. टन होता, अतः भारत में पाटित आयातों में तीव्र वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग ने काफी मात्रा गंवाई है। ऐसी कीमतों पर जिनसे कच्चे माल की लागत की भी प्रतिपूर्ति नहीं होती है, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को अत्यधिक कीमत क्षति हुई है। यह भी तर्क दिया गया है कि देश में उत्पाद की मांग में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है और क्षति अवधि में उसमें 75% वृद्धि हुई। यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री में 30% वृद्धि हुई तथापि, बिक्री में वृद्धि देश में उत्पाद की मांग में वृद्धि की तुलना में बहुत कम है, जिसका परिणाम घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 63.47% से 47.86% तक गिरावट के रूप में हुआ। इसके अतिरिक्त

आयातों ने बाजार के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है, आयातों का बाजार हिस्सा 12.49% से बढ़कर 28.02% हो गया है। इस तथ्य के बावजूद कि कच्चे माल की कीमत में 49% वृद्धि हुई, पिछले चार वर्षों से उत्पाद की निर्यात कीमत कमोवेश एक समान बनी रही है (वस्तुतः कच्चे माल की कीमत की तुलना में उसने गिरावट आई है)। कच्चे माल की कीमत में वृद्धि का परिणाम निर्यात कीमत में वृद्धि के रूप में होना चाहिए था परन्तु निर्यात कीमत में समानुपातिक वृद्धि नहीं हुई है जिसके परिणामस्वरूप आधार वर्ष में 4078 मी. टन की तुलना में 290% वृद्धि के साथ आयात बढ़ कर जांच अवधि के दौरान 15900 मी. टन हो गए। पाटन की जांच के लिए कैप्रोलैक्टम की कीमतों का तथ्य अधिक संगत है। घरेलू उद्योग के घटकों में से एक में 0 गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कंपनी लि० कैप्रोलैक्टम के उत्पादक हैं और उन्होंने संबद्ध देशों को कैप्रोलैक्टम का निर्यात किया है। जिस कीमत पर संबद्ध देशों को कैप्रोलैक्टम का निर्यात किया गया है, वह उस कीमत से भी अधिक है जिस पर इन देशों से भारत में संबद्ध वस्तु का निर्यात किया जा रहा है जो यह दर्शाता है कि निर्यातकों को अपने कच्चे माल की लागत की भी प्रतिपूर्ति नहीं हो रही है। यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है। इसी के साथ, भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में लगातार वृद्धि हुई है। जहां बिक्री में वृद्धि देश के भीतर नई उत्पादन लाइन के पी एफ वाई से एन एफ वाई में स्थानांतरण को दर्शाती है जिसकी उद्योग से उम्मीद की जा रही थी और उद्योग ने अपनी पी एफ वाई क्षमता को एन एफ वाई में स्थानांतरित कर दिया है, तथापि उद्योग इस बढ़ी हुई मांग का लाभ नहीं उठा सका है क्योंकि बहुत बड़े बाजार हिस्से पर पाटित आयातों का कब्जा है। घरेलू उद्योग ने अत्यधिक बाजार हिस्सा भी गंवाया है। यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग का निष्पादन जिसमें वर्ष 2003-04 तक सुधार हो रहा था, में जांच अवधि में फिर गिरावट आई जो कि सीधे तौर पर भारत में आयात में अत्यधिक वृद्धि के कारण है।

45. घरेलू उद्योग को आधार वर्ष में घाटा हुआ है जो कि गुजरात, जो विचाराधीन उत्पाद के लिए प्रमुख खपत क्षेत्र हैं, में तूफान/बाढ़ के कारण हो सकता है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उसके प्रभाव से उबर रहा है। तथापि संबद्ध देशों से पाटित कीमतों पर आयात प्रारंभ हो गए, फलस्वरूप जांच अवधि में घरेलू उद्योग को अत्यधिक घाटा हुआ। घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हो रही है तथापि बढ़ी हुई उत्पादकता से घरेलू उद्योग को लाभप्रदता के रूप में कोई सहायता नहीं मिली क्योंकि लाभप्रदता, जिसमें सुधार हो रहा था, में पाटित कीमतों पर आयात में तीव्र वृद्धि के कारण जांच अवधि में पुनः गिरावट आई। निवेश पर आय (ब्याज पूर्व लाभ) में लाभ, क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग के समान ही प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। प्रत्येक संबद्ध देश से आयातित उत्पाद का पंधुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से बहुत कम था जिससे भारतीय बाजार में अत्यधिक कीमत कटौती हुई। घरेलू उद्योग कच्चे माल की लागत में वृद्धि के अनुरूप कीमत में वृद्धि नहीं कर सका है जो कि इस तथ्य के कारण है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है। प्रत्येक संबद्ध

देश से पाटन मार्जिन बहुत अधिक है। घरेलू उद्योग अपने उत्पादन को रोकने और अपनी कीमतों को कम करने के लिए बाध्य हुआ है अतः कमी के बाद जांच अवधि में घरेलू उद्योग के घाटों में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर कमोवेश एक समान बना रहा। घरेलू उद्योग के वेतनों में सापेक्ष रूप से वृद्धि हुई है। इसी के साथ, घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप वेतन प्रति इकाई उत्पादन में गिरावट आई है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग और न कि "भारतीय उद्योग" को क्षति का निर्धारण किया जाना अपेक्षित है। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता कंपनियों द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया है। इसके अतिरिक्त, पेशेवर लागत लेखाकारों ने भी इन सूचनाओं को प्रमाणित किया है।

46. विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के यह तर्क हैं कि प्रारंभिक जांच परिणामों में प्रकट की गई घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत उसकी गैर क्षतिकारक कीमत के बहुत निकट है। घरेलू उद्योग द्वारा यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का वांछित सीमा तक सत्यापन किया गया है। क्षति विश्लेषण के लिए घरेलू उद्योग ने लाभ सहित समस्त आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराई हैं। सूचना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि घरेलू उद्योग को घाटा हुआ है। गैर क्षतिकारक कीमत और बिक्री कीमत में कम अंतर के बारे में घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्धारित गैर क्षतिकारक कीमत निम्नतर स्तर पर है और उस पर पुनः विचार किए जाने आवश्यकता है। घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारक कीमत को बढ़ाने के लिए उसमें सुधार किए जाने की आवश्यकता है। सेंचुरी एंका को हो रहे लाभ के बारे में घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि विरोध हितबद्ध पक्षकारों द्वारा लगाए गए आरोप गलत हैं क्योंकि तीन संगत अवधियों में सेंचुरी एंका ने इष्टतम से कम लाभ कमाया है। कंपनी ने तब से इस बारे में प्राधिकारी को संगत सूचना उपलब्ध कराई है। घरेलू उद्योग ने समस्त स्रोतों से एन एफ वाई के आयातों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है। यह देखा जा सकता है कि संबद्ध देशों से इतर देशों से आयात या तो नगण्य हैं या उनकी निर्यात कीमत अधिक है। याचिकाकर्ता ने सभी स्रोतों से आयातों का विस्तृत अध्ययन किया है जो यह दर्शाता है कि अन्य देशों से भी सामग्री का आयात किया जा रहा है। तथापि, उसकी मात्रा न्यूनतम है। अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि अन्य देशों के आयातों से भी घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। विचाराधीन उत्पाद की मांग में पर्याप्त सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। अतः मांग में संभावित गिरावट से घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति नहीं हुई है। प्रौद्योगिकी के संबंध में यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी विश्व भर के अन्य विनिर्माताओं द्वारा प्रयोग की जा रही प्रौद्योगिकी के साथ तुलनीय है। विनिर्माण प्रक्रिया में बहुत अधिक अंतर नहीं है। वस्तुतः उत्पादन हेतु प्रयुक्त प्रौद्योगिकी किसी प्रौद्योगिकी नवीनता एवं विकास के बिना परिवक्व, स्थिरीकृत तथा मानकीकृत है। पाटन के अतिरिक्त इस क्षति का और कोई कारक नहीं है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

47. कई हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि पाटन एवं क्षति के निर्धारण में विचाराधीन उत्पाद की गुणवत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राधिकारी का यह विचार है कि गुणवत्ता संबंधी यह दावा कुछ ओर नहीं बल्कि विभिन्न श्रेणियों में वस्तु का श्रेणीकरण है जो वस्तु के उत्पादन के पश्चात् किया जाता है। उत्पाद की विशिष्ट विशिष्टताएं वही रहती हैं और भिन्न-भिन्न गुणवत्ता वाले उत्पादों का प्रयोग समान कार्यों एवं प्रयोगों के लिए किया जाता है। इस विषय में कोई मतभेद नहीं है कि भिन्न-भिन्न गुणवत्ताओं वाले उत्पाद की उत्पादन की संबंधित लागत वही रहती है। वस्तुतः, गुणवत्ता कीमत निर्धारण का एक मुद्दा है और एक कंपनी से दूसरी कंपनी में उसमें अंतर होता है। पाटन के संबंध में, जैसा कि पहले कहा गया, प्राधिकारी ने समान गुणवत्ता वाले उत्पादों के संबंध में घरेलू बाजार में कीमत पर विचार किया है। तथापि, उन परिस्थितियों में जहां समान गुणवत्ता वाले उत्पाद उपलब्ध नहीं हैं, प्राधिकारी द्वारा सर्वाधिक निकट उत्पाद गुणावगुणों वाले किसी अन्य उत्पाद पर विचार करना उपेक्षित है। अतः प्राधिकारी द्वारा गुणवत्ता में भिन्नता वाले किसी अन्य उत्पाद की कीमत पर विचार करना उपेक्षित है। गुणवत्ता में भिन्नता के संबंध में निर्यातकों द्वारा परिणाम निर्धारित कीमत समायोजनों का दावा किया जा सकता था, जो नहीं किया गया है। इन मामलों में उत्पादन लागत पर विचार करना उचित नहीं होगा क्योंकि उत्पादन लागत पर केवल तभी विचार किया जा सकता है जब घरेलू बाजार में समान उत्पाद की कीमत उपलब्ध न हो। तदनुसार, प्राधिकारी ने सर्वाधिक दायनीय गुणवत्ता वाले उत्पाद की कीमत पर विचार किया है और निर्यातकों से किसी दावे की अनुपस्थिति में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर गुणवत्ता में अंतर हेतु छूट प्रदान की है।
48. क्षति निर्धारण के संबंध में प्राधिकारी यह मानते हैं कि नियमावली के अनुसार समान वस्तु के उत्पादक घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण किया जाना अपेक्षित है। इस संबंध में कोई विवाद नहीं है कि एकमात्र गुणवत्ता में अंतर के साथ आयातित उत्पाद और घरेलू उत्पाद समान वस्तुएं हैं। अधिक से अधिक, परिमाण निर्धारण संबंधी दावों के आधार पर गुणवत्ता में अंतर के लिए छूट देने के पश्चात् तुलना की जा सकती थी। यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण भिन्न-भिन्न उत्पाद प्रकारों के लिए अलग-अलग किया जाना चाहिए। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमावली में घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण किया जाना अपेक्षित है। घरेलू उद्योग को समान वस्तु के समग्र रूप से या उसके एक बड़े हिस्से के उत्पादन में शामिल उत्पादक के रूप में परिभाषित किया गया है। इसके अतिरिक्त, समान वस्तु को आयातित उत्पाद के समान अथवा उसके निकटतम उत्पाद के रूप में परिभाषित किया गया है। इन विभिन्न प्रावधानों पर विचार करते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि समग्र रूप से समान वस्तु और न कि समान वस्तु का भाग बनने वाले विभिन्न प्रकारों के रूप में घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण किया जाना अपेक्षित है। प्राधिकारी ने

अंतिम जांच परिणामों के दौरान प्रकटन पश्चात् की गई टिप्पणियों सहित क्षति के अन्य पहलुओं पर निष्कर्ष निकालने का प्रस्ताव किया था।

49. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में इन आयातों को ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होगी। नियमावली में आगे यह प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री में वास्तविक तथा संभावित गिरावट, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, भण्डार सूचियों पर वास्तविक तथा संभावित नकारात्मक प्रभाव, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजीगत निवेश प्राप्त करने की योग्यता सहित उद्योग की स्थिति को दर्शाने वाले सभी प्रासंगिक आर्थिक कारकों तथा संकेतकों का वस्तुनिष्ठ तथा पक्षपात रहित मूल्यांकन शामिल होना चाहिए।
50. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियमावली के अनुसार निम्नलिखित चर्चा किए गए विभिन्न आर्थिक मापदंडों तथा संकेतकों की जांच की है :-

**नियमावली के अनुबंध 11 (iv) में उल्लिखित है कि :-**

- (iv) पाटित आयातों के प्रभाव का आकलन समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंध में तब किया जाएगा जब उपलब्ध आंकड़े उस उत्पादन की उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादक बिक्री तथा लाभ जैसे मानदंडों के आधार पर पृथक अभिज्ञान की अनुमति दे। यदि उस उत्पादन का ऐसा पृथक अभिज्ञान संभव नहीं है तो पाटित आयातों के प्रभाव का आकलन उत्पादों के छोटे से छोटे समूह अथवा रेंज जिसमें समान उत्पाद शामिल हैं, जिसके लिए आवश्यक सूचना प्रदान की जा सकती है के उत्पादन की जांच करके किया जाएगा।
51. घरेलू उद्योग द्वारा व्यवहार्य तथा पृथक रूप से उपलब्ध रहने की सीमा तक समान वस्तु के संबंध में क्षति संबंधी सूचना प्रदान की गई है। तथापि यदि समान वस्तु के संबंध में कोई विशेष पृथक रूप से उपलब्ध नहीं है क्योंकि उस सूचना का पृथक अभिज्ञान व्यवहार्य न हो तो उत्पादों के छोटे से छोटे समूह अथवा रेंज, जिसमें समान वस्तु शामिल है तथा जिनके लिए आवश्यक सूचना उपलब्ध थी, के संबंध में सूचना पर निर्भर रहा गया है।
52. यह स्मरण किया जाता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को, घरेलू उद्योग को हुई क्षति के विभिन्न कारकों की वस्तुनिष्ठ जांच के लिए क्षति संबंधी विस्तृत सूचना प्रदान करने के लिए कहा था। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने वर्ष 2001-2002, 2002-2003, 2003-2004 तथा जांच अवधि के लिए सूचना की मांग की थी। जांच के दौरान तथा रिकार्डों के सत्यापन तथा मौके पर

सत्यापन के पश्चात् यह नोट किया गया था कि घरेलू उद्योग को क्षति अवधि के पहले वर्ष में घाटा हो रहा था। यह दावा किया गया था कि पहले वर्ष में हुए घाटे का कारण गुजरात में आया बड़ा भूकंप था जिससे सूरत के बाजार, जो उत्पाद के लगभग 65-70% का उपभोग करता है, को मुख्य रूप से नुकसान हुआ था। इस संबंध में यह प्रस्तुत किया गया था कि वर्ष 2000-2001 के लिए श्री सिन्थेटिक्स के निदेशकों की रिपोर्ट में उल्लेख है कि :-

\* प्राकृतिक आपदा अर्थात् विनाशकारी भूकम्प से गुजरात, जो आपकी कंपनी के उत्पादों का प्रमुख उपभोक्ता राज्य है, का व्यापार नष्ट हो गया है क्योंकि सरकार द्वारा लगाए गए शुल्क से हड़ताल पर गए बुनकरों से मार्जिन पर असर पड़ा है।

53. इसके अलावा, मै0 मोडीपान के मामले में वर्ष 200-02001 के लिए निदेशकों की रिपोर्ट के अनुसार:-

(I) संश्लेषित तन्तु यार्न का सबसे बड़ा बाजार सूरत, विद्युत प्रशुल्क में वृद्धि तथा चैम्बर्स पर संयुक्त लेवी के बजाए फेब्रिक्स पर एड-वेलोरम दरें लागू करके उत्पाद शुल्क की संरचना में परिवर्तन करने के कारण बुनकरों तथा फैब्रिक्स व्यापारियों द्वारा हड़ताल/आंशिक बंद के द्वारा प्रतिकूलतः प्रभावित हुआ था।

(II) गुजरात में बड़े भूकम्प के कारण सूरत तथा इसके आस-पास व्यापारिक कार्यकलाप बुरी तरह प्रभावित हुए .....।

(III) संघीय बजट 2000-2001 में आयात शुल्क की संरचना में एक विसंगति हुई। एन एफ वाई तथा पी एफ वाई पर आयात शुल्क 20% कम किया गया जबकि केप्रोलेक्टम, डीएमटी, पीटीए तथा एमईजी (कच्चा माल) पर आयात शुल्क 27.5% निश्चित किया गया। आयात शुल्क संरचना में इस विसंगति के कारण एन एफ वाई तथा पी एफ वाई के पश्चवर्ती आयात इस अवधि के दौरान इंडोनेशिया, ताइवान, चीन आदि से किए गए थे।

54. अतः साक्ष्य के साथ यह दावा किया गया कि आधार वर्ष के दौरान घरेलू उद्योग के प्रतिकूल निष्पादन के लिए अनेक कारक जिम्मेदार थे तथा यह अनुरोध किया गया था कि पहले वर्ष को घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच से हटाया जाना चाहिए। तथापि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने क्षति की जांच से पहले वर्ष को केवल विद्यमान प्रथाओं के कारण नहीं हटाया है, बल्कि केवल इस कारण से हटाया कि घरेलू उद्योग अन्य स्वीकार्य कारणों से 2001-2002 में क्षति का सामना कर रहा था तथापि, यह पुनः दोहराया जाता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन बनाम आधार वर्ष में इसका निष्पादन महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि क्षति अवधि तथा जांच अवधि के दौरान विभिन्न संकेतकों की प्रवृत्ति

महत्वपूर्ण है। प्रकटन विवरण के जारी होने के बाद, विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि कीमत प्रभाव तथा संबद्ध देशों के आयात कीमत के विकास की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते समय प्राधिकारी को कैप्रोलेक्टम की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर विचार करना चाहिए। यह भी तर्क दिया गया है कि कैप्रोलेक्टम की कीमतों को माह-वार आधार पर अपनाया जाना चाहिए क्योंकि उसकी अंतर्राष्ट्रीय कीमतें परिवर्तित होती रहती हैं। मामले की जांच की गई है और यह स्पष्ट किया गया है कि प्राधिकारी ने किसी विशेष समय पर/की कैप्रोलेक्टम कीमतों पर विचार नहीं किया है। प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के लिए संबद्ध देश की आयात कीमत के विकास के विश्लेषण (और कीमत प्रभाव विश्लेषण) के प्रयोजनार्थ जांच अवधि के दौरान कैप्रोलेक्टम की भारित औसत कीमत पर विचार किया है। तथापि घरेलू उद्योग पर प्रभाव के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने सतत प्रक्रिया के अनुरूप वर्तमान जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग द्वारा भुगतान की गई कीमत पर विचार किया है। हितबद्ध पक्षकारों में से एक मै. हयोसुंग ने तर्क दिया है कि ये कीमत अवमूल्यन का कारण नहीं हैं। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि कीमत ह्रास/अवमूल्यन का निर्धारण संबद्ध देशों के लिए संघयी रूप से, न कि प्रत्येक देश के लिए अलग-अलग किया जाना अपेक्षित है। यह भी संकेत किया गया है कि हयोसुंग द्वारा किए गए निर्यातों के संबंध में कीमत कटौती सकारात्मक और अत्यधिक है। उपर्युक्त के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पाटित आयातों से भारतीय बाजार में कीमत अवमूल्यन हुआ है।

### आयात आंकड़े

55. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने आयात मात्राओं के निर्धारण हेतु आईबीआईएस आंकड़ों पर विचार किए जाने का विरोध किया। कई हितबद्ध पक्षकारों ने याधिकाओं द्वारा सार्वजनिक फाइल के जरिए उपलब्ध कराए गए आईबीआईएस सौदेगार आयात आंकड़ों को एकत्र किया। तथापि किसी भी पक्षकार ने ऐसा कोई प्रस्तुतीकरण नहीं किया जिससे यह स्थापित होता कि इस आधार पर आयात आंकड़ों का निर्धारण अनुचित था। इसके अतिरिक्त, न तो उत्तर देने वाली उपभोक्ता एसोसिएशनों ने और न ही अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने संबद्ध देशों से आयात मात्राओं के संबंध में कोई अन्य साक्ष्य प्रस्तुत किया।

प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों में डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों के आधार पर आयात मात्राओं पर विचार नहीं किया था क्योंकि आईबीआईएस साक्ष्य से प्रदर्शित हुआ था कि नीचे दी गई सूची (प्रारंभिक जांच परिणामों से) के अनुसार उत्पाद को सीमाशुल्क वर्गीकरण की बहुत सारी संख्याओं में स्पष्ट किया गया था:-

5402.39,	5402.59,	54020000,	54020200,	54020400,
54020900,	540210,	54021000,	54021001,	54021002,
54021003,	54021009,	54021010,	54021090,	54021100,
54021500,	54022000,	54022001,	54022010,	54022090,
54022400,	54022430,	54022900,	54023000,	54023001,
54023100,	54023200,	54023300,	54023900,	54023901,
54023909,	54023910,	54023920,	54023990,	54024000,
54024100,	54024101,	54024109,	54024200,	54024201,
54024210,	54024300,	54024900,	54024901,	54025100,
54025200,	54025400,	54025900,	54025901,	54025909,
54025910,	54025990,	54026000,	54026100,	54026200,
54026300,	54026900,	54026901,	54026901,	54026910,
54026920,	54026940,	54026950,	54026990,	54029000,
54029900				

56. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने अन्य सीमाशुल्क वर्गीकरणों, जिनमें आयात की सूचना दी गई थी, के लिए डीजीसीआईएंड एस से आयात संबंधी सूचना एकत्र की। डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रस्तुत सूचना से 54 अध्यायों की पूरे अध्याय वाली प्रविष्टियां प्रदर्शित हुई जिसमें 8800 से अधिक सौदे थे। तथापि, सूचना की जांच के पश्चात यह नोट किया गया था कि अधिकतर प्रविष्टियां खाली थीं या उत्पाद संबंधी सूचना अपूर्ण थी। अतः डीजीसीआईएस की सूचना से सूचना प्राप्त करना संभव नहीं था।

इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने यह जांच करने के लिए कि क्या उस सूचना में विचाराधीन उत्पाद से इतर उत्पादों के आयात भी शामिल थे, आईबीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए समग्र आयात आंकड़ों की समीक्षा की। यह पाया गया था कि आयातों के संचयन के लिए विचार किए गए आयात सौदे केवल विचाराधीन उत्पाद से संबंधित हैं। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालने का प्रस्ताव करते हैं कि आयात मात्राओं के निर्धारण के लिए आईबीआईएस की सूचना पर विश्वास करना अनुचित नहीं होगा।

इसलिए और आगे जांच को लंबित रखते हुए प्रारंभिक जांच परिणामों को द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त सूचना पर निर्भर रखना अधिक उचित माना गया है। द्वितीयक स्रोतों से चुने गए संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा तथा कीमत के आंकड़े सभी हितबद्ध पक्षों की सूचना के लिए सार्वजनिक फाइल में रखे गए थे। उनके प्रकटन प्रश्नात विवरणों में आयात आंकड़ों के अध्याय 54 के अन्य उत्पादों को शामिल करने के बारे में अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों के



संबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि क्षति आकलन के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने एनएफवाई के आयातों पर विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा के अनुरूप ही विचार किया है। अन्य उत्पादों के आयातों को अलग रखा गया है और उन्हें संबद्ध देशों के आयातों की मात्रा में शामिल नहीं किया गया है।

### संचयी आकलन:

57. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह प्रावधान है कि यदि उत्पाद का आयात एक से अधिक देशों से साथ-साथ चल रही पाटनरोधी जांच के अध्वधीन है तब निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेगा, यदि यह निर्धारित होता है कि:

क. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में यथाव्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है तथा प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयात का तीन प्रतिशत है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात तीन प्रतिशत से कम है वहां आयात संचयी रूप से समान वस्तु के आयात के सात प्रतिशत से अधिक बनता है, और;

ख. आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन आयातित वस्तु तथा समान घरेलू उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की शक्तों के आलोक में उचित है।

प्राधिकारी पाते हैं कि :

(i) प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन 2 प्रतिशत (न्यूनतम) से अधिक है जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में देखा जा सकता है;

(ii) प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा 3 प्रतिशत से अधिक है;

(iii) घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न डेनियरों का उत्पादन करता है तथा इन्हीं डेनियरों का भी संबद्ध देशों में भी उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जा रहा है। संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद तथा घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद में सापेक्षतः तथा तुलनात्मक रूप से तुलनीय विशेषताएं हैं। अतः घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु विभिन्न संबद्ध देशों द्वारा निर्यातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु है।

- (iv) यह नोट किया जाता है कि आयातित उत्पाद तथा घरेलू समान उत्पाद एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किए जा रहे हैं । विभिन्न पक्षकारों द्वारा आयात के साक्ष्य तथा घरेलू उद्योग की उपभोक्तावार बिक्री से इसके सह संबंध से यह स्पष्ट होता है कि अनेक पक्षकार ऐसे हैं जिन्होंने घरेलू उद्योग से खरीद की है तथा संबद्ध देशों से आयात किया है । आगे यह नोट किया जाता है कि विभिन्न देशों द्वारा निर्यातित संबद्ध वस्तुएं उसी बाजार में प्रतिस्पर्धा करती हैं;
- (v) विभिन्न संबद्ध देशों से विभिन्न उत्पादकों द्वारा आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तुओं का भारत में इसी अवधि के दौरान तुलनीय बिक्री माध्यमों के जरिए विपणन किया जा रहा है;
- (vi) संबद्ध देशों के संबंध में कीमत कटौती सकारात्मक तथा पर्याप्त है ;
- (vii) संबद्ध देशों में घरेलू उत्पादक तथा निर्यातक उपभोक्ताओं की समान श्रेणी को उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं ।

58. उपर्युक्त के मद्देनजर यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव का संघयी आकलन वर्तमान मामले में उपयुक्त होगा ।

#### मांग का आकलन

59. विचाराधीन उत्पाद की घरेलू खपत/मांग की गणना के लिए प्राधिकारी ने भारत के कुल आयातों में घरेलू उद्योग तथा अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को जोड़ा है । घरेलू उद्योग ने गौण स्रोतों अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सूचना सेवा से एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर आयात मात्रा एवं मूल्य का निर्धारण किया है । घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि द्वितीयक स्रोतों द्वारा प्रदत्त सूचना में अत्यधिक घयनित पत्तनों पर रिपोर्ट किए गए आयातों की सूचना शामिल है । इसके अतिरिक्त यह दावा किया गया है कि भारत में सभी पक्षों को शामिल करने वाली डीजीसीआईएंडएस एकमात्र ऐसी एजेंसी है । प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से उक्त सूचना को सौदेवार आधार पर उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था जिसे उन्होंने प्राप्त किया । प्राधिकारी ने सूचना की जांच की और पाया है कि आयात सौदों का पूर्ण विवरण न होने के कारण

डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना उपयोगी नहीं है और जिसकी अनुपस्थिति में संबद्ध वस्तु तथा अन्य वस्तुओं के आयातों को अलग-अलग करना संभव नहीं है। इसलिए प्राधिकारी ने अनंतिम जांच परिणामों की आगे और जांच के प्रयोजनार्थ संबद्ध वस्तुओं की मात्रा तथा कीमत के संबंध में आयात सांख्यिकी के उद्देश्य से आई बी आई एस के आंकड़ों पर विचार एवं विश्वास किया। प्राधिकारी द्वारा विचार किए गए आयात आंकड़ों की एक प्रति को भी सभी हितबद्ध पक्षों के लाभ के लिए सार्वजनिक फाइल में रखा गया है।

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	25,996	29,687	30,922	35,138
बिक्री-सूचीबद्ध	100.00	114.20	118.95	135.17
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्रियां	2,000	2,000	2,000	2,000
आबद्ध बिक्री	0	161	223	284
आयात-संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
आयात-संबद्ध देश-सूचीबद्ध	100.00	152.12	297.48	400.94
आयात-अन्य देश	588	1,280	2,560	3,262
मांग	32,662	39,332	47,836	57,035
मांग-सूचीबद्ध	100.00	120.42	146.46	174.62

उपर्युक्त सारणी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में संबद्ध वस्तु की मांग में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है तथा यह क्षति अवधि में बढ़कर 75 प्रतिशत हो गई है।

#### आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सा

60. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में यह जांच की गई है कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत के संबंध में पाटित आयातों में कोई अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (ii) में यह प्रावधान है कि :-

"पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी यह विचार करेगा कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत के संबंध में पाटित आयातों में कोई अत्यधिक वृद्धि हुई है ....."

61. आयात संबंधी आंकड़ों की जांच करने के पश्चात यह नोट किया है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में निरपेक्ष रूप से वृद्धि हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि आयातों की मात्रा में तीव्र वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई दी है। इसके अलावा, उत्पादन की तुलना में आयात तथा मांग में वृद्धि हुई जो कि निम्न सारणी से स्पष्ट है।

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
आयात				
चीन	944	1,020	1,890	2,254
इंडोनेशिया	1,016	1,495	4,515	4,563
मलेशिया	815	1,358	1,896	3,455
थाइलैंड	323	908	805	1,370
कोरिया	712	924	2,080	3,060
ताइवान	267	498	945	1,648
संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
अन्य देश	588	1,280	2,560	3,262
कुल आयात	4,666	7,484	14,692	19,612
आयात में बाजार हिस्सा				
चीन	20.24	13.64	12.86	12.91
इंडोनेशिया	21.78	19.98	30.73	21.91
मलेशिया	17.47	18.15	12.91	17.21
थाइलैंड	6.92	12.13	5.48	6.69
कोरिया	15.25	12.35	14.16	15.49
ताइवान	5.73	6.65	6.43	8.03
संबद्ध देश	87.39	82.89	82.57	82.24
अन्य देश	12.61	17.11	17.43	17.76
मांग	32,662	39,332	47,836	57,035
मांग में बाजार हिस्सा				
चीन	2.89	2.59	3.95	3.95
इंडोनेशिया	3.11	3.80	9.44	8.00
मलेशिया	2.50	3.45	3.96	6.06
थाइलैंड	0.99	2.31	1.68	2.40
कोरिया	2.18	2.35	4.35	5.37
ताइवान	0.82	1.27	1.98	2.89
संबद्ध देश	12.49	15.77	25.36	28.67
अन्य देश	1.80	3.25	5.35	5.72
घरेलू उद्योग	79.59	75.89	65.11	62.11
भारतीय उद्योग	85.71	80.97	69.29	65.61
घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन	26,019	30,159	31,303	36,100
घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में आयात				
चीन	3.63	3.38	6.04	6.24
इंडोनेशिया	3.91	4.96	14.42	12.64
मलेशिया	3.13	4.50	6.06	9.57
थाइलैंड	1.24	3.01	2.57	3.80
कोरिया	2.74	3.06	6.64	8.48
ताइवान	1.03	1.65	3.02	4.56
संबद्ध देश	15.67	20.57	38.75	45.29
अन्य देश	2.26	4.24	8.18	9.04

62. अतः यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि में आयात निरपेक्ष रूप से मात्र 4078 मी.टन से बढ़कर 16350 मी.टन हो गए तथा देश में उत्पाद की मांग के संबंध में आयात 12.49 प्रतिशत से बढ़कर 28.67 प्रतिशत हो गए तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद के उत्पादन के संबंध में आयात 19.46 प्रतिशत से बढ़कर 58.42 प्रतिशत हो गए । इसके अलावा जहां मांग में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा मात्र 12.49 प्रतिशत से बढ़कर 28.67 प्रतिशत हो गया, वहीं भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा 86% से घटकर 66% हो गया । उपर्युक्त को देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संबद्ध देशों के पाटित आयातों से प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव प्रदर्शित होता है ।

### आयातों की कीमत का प्रभाव

63. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंधों में यह जांच की गई है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव, अन्यथा अत्यधिक मात्रा तक कीमत ह्रास करने अथवा कीमत वृद्धि हो रोकने के लिए है जो कि अन्यथा अत्यधिक मात्रा पर पहुंच गई होती । घरेलू बाजार के आयात के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों का विश्लेषण किया गया । यह नोट किया गया कि संबद्ध देशों से निर्यातकों ने कच्चे माल की कीमतों में अंतर्राष्ट्रीय वृद्धि के कारण अपनी कीमतें नहीं बढ़ाई । आगे यह नोट किया जाता है कि नाइलोन फिलामेंट यार्न एक पेट्रोकेमिकल उत्पाद है तथा नाइलोन चिप्स से उत्पादित किया जाता है जो केप्रोलेक्टम से प्राप्त किया जाता है तथा केप्रोलेक्टम बेंजीन से उत्पादित किया जाता है जो कि एक अन्य पेट्रोकेमिकल उत्पाद है । केप्रोलेक्टम की कीमतों में पिछले दो वर्षों में अत्यधिक वृद्धि हुई । केप्रोलेक्टम की कीमतों में वृद्धि का कारण बेंजीन की कीमत में वृद्धि है जिसका कारण कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि है । कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि एक सुविख्यात अंतर्राष्ट्रीय घटना है इसलिए इस बात की संभावना यह प्रतीत नहीं होती कि संबद्ध देशों के उत्पादक केप्रोलेक्टम की कीमतों में वृद्धि के कारण प्रभावित नहीं हुए हैं । पिछले वर्षों में केप्रोलेक्टम की कीमतें निम्नानुसार सारणी में दी गई हैं :-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
केप्रोलेक्टम की कीमत	42.71	54.30	57.17	80.12
सूचीबद्ध	100.00	127.14	133.86	187.59
निर्यात कीमत				
चीन	72.55	86.85	82.43	82.79
इंडोनेशिया	61.02	70.97	82.78	77.71
मलेशिया	132.57	107.91	105.78	101.26

थाइलैंड	78.90	80.83	65.70	57.53
कोरिया	67.05	75.36	74.58	76.66
ताइवान	65.23	72.81	70.28	65.21
संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
सूचीबद्ध	100.00	103.94	102.56	99.38
कैप्रोलेक्टम की कीमत के % के रूप में आयात कीमतें				
चीन	169.86	159.94	144.18	103.34
इंडोनेशिया	142.87	130.71	144.80	96.99
मलेशिया	310.40	198.73	185.03	126.39
थाइलैंड	184.73	148.85	114.91	71.80
कोरिया	157.00	138.79	130.46	95.68
ताइवान	152.72	134.09	122.93	81.39
संबद्ध देश	189.04	154.54	144.85	100.15
आयात की पहुंच कीमत				
चीन	87.93	105.26	99.90	100.34
इंडोनेशिया	73.95	86.02	100.33	94.18
मलेशिया	160.68	130.79	128.21	122.73
थाइलैंड	95.62	97.96	79.62	69.72
कोरिया	81.27	91.34	90.40	92.91
ताइवान	79.05	88.25	85.18	79.03
संबद्ध देश	97.85	101.70	100.36	97.25

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि इन वर्षों के दौरान कैप्रोलेक्टम की कीमतों में 58% की वृद्धि हुई है, तथापि, भारत को उनके निर्यातों के संबंध में कैप्रोलेक्टम की कीमतों में वृद्धि होने से संबद्ध देशों से निर्यात कीमत में वृद्धि नहीं हुई है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कैप्रोलेक्टम कीमतों के % के रूप में आयात कीमतों की भी जांच की गई थी जिससे यह पाया गया था कि पहले निर्यात कीमत कैप्रोलेक्टम की कीमतों से 43% अधिक थी। जांच अवधि में इसमें अत्यधिक गिरावट आयी और कैप्रोलेक्टम की कीमत का मात्र 89% बन गई। अतः निर्यातकों की प्रभावी वसूली में भारत को उनके निर्यातों के संबंध में बड़ी गिरावट आयी है। इसके अलावा, सीआईएफ निर्यात कीमत में कमी का घरेलू उद्योग पर प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हुआ मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है कि

पहुंच कीमत में कमी का प्रत्युत्तर घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली पर करों और शुल्कों को छोड़कर बिक्री कीमत, और भाड़े तथा परिवहन के रूप में विचार किया गया है। घरेलू उद्योग की समूची बिक्री मात्राओं को गणनाओं में शामिल किया गया है। आयातों की पहुंच कीमत का निर्धारण 1% पतन प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क के साथ भारित औसत सीआईएफ कीमत पर विचार करके किया गया है।

64. संबंधित उत्पाद के लिए निर्यातित उत्पाद और व्यापार के समान स्तर पर असंबद्ध ग्राहकों को की गई बिक्रियों हेतु सभी छूटों और करों के घरेलू बाजार नेट के लिए घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के बीच तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की कीमतों का कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारण किया गया था। आयातों पर लागू शुल्कों के लिए संबंधित संबद्ध देश की सीआईएफ कीमतों को समायोजित किया गया था। इस तुलना से यह प्रदर्शित हुआ कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों में से प्रत्येक देश के मूल की संबद्ध वस्तुओं को भारतीय बाजार में ऐसी कीमतों पर बिक्री की गई थी जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई जब यह घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमतों के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त की जाए जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

65. यह देखा जाता है कि आयात कीमतें (मूल सीमाशुल्क को शामिल करने के पश्चात) घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से अत्यधिक कम रही है, अतः इसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती हुई है।

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
निर्यात कीमत				
चीन	72.55	86.85	82.43	82.79
इंडोनेशिया	61.02	70.97	82.78	77.71
मलेशिया	132.57	107.91	105.78	101.26
थाइलैंड	78.90	80.83	65.70	57.53
कोरिया	67.05	75.36	74.58	76.66
ताइवान	65.23	72.81	70.28	65.21
संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
पहुंच कीमत				
चीन	87.93	105.26	99.9	101.89
इंडोनेशिया	73.95	86.02	100.33	94.67
मलेशिया	160.68	130.79	128.21	121.86
थाइलैंड	95.62	97.96	79.62	71.81
कोरिया	81.27	91.34	90.4	95.28
ताइवान	79.05	88.25	85.18	80.32
संबद्ध देश	97.85	101.7	100.36	98.35
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	****	****	****	****

कीमत कटौती				
चीन				60-70
इंडोनेशिया				65-75
मलेशिया				40-50
थाईलैंड				90-100
कोरिया				65-75
ताइवान				80-90
संबद्ध देश				60-70

### उत्तरदाता निर्यातकों से कीमत कटौती

निर्यातक का नाम	सीआईएफ कीमत	पहुंच कीमत	निवल बिक्री कीमत (रु.)	निवल बिक्री कीमत (अम.डॉ)	कीमत कटौती	कीमत कटौती %	कीमत कटौती रेंज%
मे. जीनन जूडा, चीन जन.गण.	****	****	****	****	****	****	25-40%
मे. टीकेआई, कोरिया गणराज्य	****	****	****	****	****	****	8-20%
मे. योसंग, कोरिया गणराज्य	****	****	****	****	****	****	25-35%
मे. सस्टेक्स, चीनी ताईपेई	****	****	****	****	****	****	10-20%
मे. ली पेंग, चीन ताईपेई	****	****	****	****	****	****	15-26%
मे. थाई टफेटा, थाईलैंड	****	****	****	****	****	****	10-20%
मे. एशिया फाइबर्स, थाईलैंड	****	****	****	****	****	****	30-50%
मे. हुआलोन, मलेशिया	****	****	****	****	****	****	15-25%

### कीमत हास

66. अत्यधिक कीमत कटौती के साथ पाटित आयातों से भारतीय बाजार में बहुत अधिक कीमत हास हुआ है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन	-	7.01	11.74	11.72
निर्यात कीमत	80.74	83.91	82.81	80.24
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन	-	3.18	(1.11)	(2.57)
आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य	97.85	101.70	100.36	98.35
वर्ष दर वर्ष परिवर्तन	-	3.85	(1.34)	(2.01)
कैप्रोलेक्टम कीमत	42.71	54.30	57.17	80.12
सूचीबद्ध	100.00	127.14	133.86	187.59



54. यह नोट किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत के निर्धारण के लिए कैप्रोलेक्टम एक महत्वपूर्ण कारक है। कैप्रोलेक्टम की कीमत में किसी प्रकार के उतार-चढ़ाव से, भले ही वो सकारात्मक हो या नकारात्मक, विश्व भर में प्रत्येक उत्पादक पर प्रभाव पड़ता है। तदनुसार, कैप्रोलेक्टम की कीमतों में परिवर्तन के साथ उत्पाद की कीमतों में भी उसी अनुपात में परिवर्तन आना चाहिए। तथापि, जैसा कि उपर्युक्त तालिका से विदित है घरेलू उद्योग के साथ ऐसा नहीं हुआ प्रतीत होता है। यह देखा जा सकता है कि वर्ष 2002-03 में पिछले वर्ष की तुलना में कैप्रोलेक्टम की कीमत में 12.3% तक की वृद्धि हुई जबकि उसी अवधि में घरेलू उद्योग की कीमतों में 5.28% की वृद्धि हुई। इसी प्रकार वर्ष 2003-04 में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में कैप्रोलेक्टम की कीमत में पुनः 10.19% की वृद्धि हुई, तथापि उसी अवधि में घरेलू उद्योग की कीमतों में 8.10% की वृद्धि हुई। जांच अवधि में कैप्रोलेक्टम की कीमतों में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में पुनः 27.23% की वृद्धि हुई, जबकि उसी अवधि में घरेलू उद्योग की कीमतों में केवल 7.93% की वृद्धि हुई। उपर्युक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि घरेलू उद्योग, कच्ची सामग्री लागत में वृद्धि के अनुसार अपनी कीमत को बढ़ाने में असमर्थ रहा है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि संबद्ध देशों से पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

#### उत्पादन में संबद्ध देश का हिस्सा

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
विभिन्न स्रोतों से आयात मात्रा				
चीन	944	1,020	1,890	2,254
इंडोनेशिया	1,016	1,495	4,515	4,563
मलेशिया	815	1,358	1,896	3,455
थाइलैंड	323	908	805	1,370
कोरिया	712	924	2,080	3,060
ताइवान	267	498	945	1,648
संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
अन्य देश	588	1,280	2,560	3,262
विभिन्न स्रोतों का हिस्सा				
चीन	20.24	13.64	12.86	12.91
इंडोनेशिया	21.78	19.98	30.73	21.91
मलेशिया	17.47	18.15	12.91	17.21
थाइलैंड	6.92	12.13	5.48	6.69
कोरिया	15.25	12.35	14.16	15.49
ताइवान	5.73	6.65	6.43	8.03
संबद्ध देश	87.39	82.89	82.57	82.24
अन्य देश	12.61	17.11	17.43	17.76

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
विभिन्न स्रोतों से आयात मात्रा				
चीन	944	1,020	1,890	2,254
इंडोनेशिया	1,016	1,495	4,515	4,563
मलेशिया	815	1,358	1,896	3,455
थाइलैंड	323	908	805	1,370
कोरिया	712	924	2,080	3,060
ताइवान	267	498	945	1,648
संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
अन्य देश	588	1,280	2,560	3,262
घरेलू उद्योग का उत्पादन	26,019	30,159	31,303	36,100
उत्पादन की तुलना में आयात				
चीन	3.63	3.38	6.04	6.24
इंडोनेशिया	3.91	4.96	14.42	12.64
मलेशिया	3.13	4.50	6.06	9.57
थाइलैंड	1.24	3.01	2.57	3.80
कोरिया	2.74	3.06	6.64	8.48
ताइवान	1.03	1.65	3.02	4.56
संबद्ध देश	15.67	20.57	38.75	45.29
अन्य देश	2.26	4.24	8.18	9.04

67. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उत्पादन के संबंध में संबद्ध देशों से पाटित आयातों में वृद्धि हुई है ।

**मांग में बाजार हिस्सा:**

68. विद्याराधीन अवधि के दौरान भारत में मांग अथवा खपत के संबंध में संबद्ध देशों से पाटित आयातों का हिस्सा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
विभिन्न स्रोतों से आयात मात्रा				
चीन	944	1,020	1,890	2,254
इंडोनेशिया	1,016	1,495	4,515	4,563
मलेशिया	815	1,358	1,896	3,455
थाइलैंड	323	908	805	1,370
कोरिया	712	924	2,080	3,060
ताइवान	267	498	945	1,648
संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
अन्य देश	588	1,280	2,560	3,262
भारत में मांग/खपत	32,662	39,171	47,614	56,750
विभिन्न स्रोतों का हिस्सा				

चीन	2.89	2.61	3.97	3.97
इंडोनेशिया	3.11	3.82	9.48	8.04
मलेशिया	2.50	3.47	3.98	6.09
थाइलैंड	0.99			
		2.32	1.69	2.41
कोरिया	2.18	2.36	4.37	5.39
ताइवान	0.82	1.27	1.99	2.90
संबद्ध देश	12.49	15.84	25.48	28.81
अन्य देश	1.80	3.27	5.38	5.75

69. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों ने भारत में विचाराधीन उत्पाद की मांग में अत्यधिक बाजार हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

#### विचाराधीन अवधि के दौरान कीमत में वृद्धि

70. क्षति अवधि में संबद्ध देशों के मूल के आयातों की औसत सीआईएफ कीमतें निम्नानुसार रही हैं :-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
औसत निर्यात कीमत (रु.किग्रा.)				
चीन	72.55	86.85	82.43	82.79
सूचीबद्ध	100.00	119.71	113.62	114.12
इंडोनेशिया	61.02	70.97	82.78	77.71
सूचीबद्ध	100.00	116.32	135.67	127.35
मलेशिया	132.57	107.91	105.78	101.26
सूचीबद्ध	100.00	81.40	79.79	76.38
थाइलैंड	78.90	80.83	65.70	57.53
सूचीबद्ध	100.00	102.44	83.27	72.92
कोरिया	67.05	75.36	74.58	76.66
सूचीबद्ध	100.00	112.39	111.23	114.33
ताइवान	65.23	72.81	70.28	65.21
सूचीबद्ध	100.00	111.63	107.74	99.97
संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
सूचीबद्ध	100.00	103.94	102.56	99.38

केप्रोलेक्टम कीमत (रु./किग्रा.)	42.71	54.30	57.17	80.12
सूचीबद्ध	100.00	127.14	133.86	187.59
कच्ची सामग्री की कीमत के % के रूप में निर्यात कीमत				
चीन	169.86	159.94	144.18	103.34
इंडोनेशिया	142.87	130.71	144.80	96.99
मलेशिया	310.40	198.73	185.03	126.39
थाइलैंड	184.73	148.85	114.91	71.80
कोरिया	157.00	138.79	130.46	95.68
ताइवान	152.72	134.09	122.93	81.39
संबद्ध देश	189.04	154.54	144.85	100.15

71. यह नोट किया जाता है कि चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड, कोरिया और ताइवान से सीआईएफ निर्यात कीमत में कच्ची सामग्री की कीमतों के संबंध में गिरावट आयी है। संबद्ध देशों से निर्यात कीमत आधार वर्ष में कच्ची सामग्री की कीमतों का 142% थीं और यह जांच अवधि में घटकर मात्र 90% रह गई है।

### घरेलू उद्योग की स्थिति

#### घरेलू उद्योग की स्थिति

72. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमों के अनुबंध-II(iv) के अनुसार घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव खोलने वाले सूचकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि पर विचार किया है। यह नोट किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने हेतु आवेदन पत्र मोदीपॉन फाइबर्स, जेसीटी लि., गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स कंपनी लि. और श्री सिंथेटिक्स लि. द्वारा संयुक्त रूप से दाखिल किया गया है। ये उत्पादक सकल भारतीय उत्पादन के एक बड़े हिस्से का उत्पादन करते हैं। अतः आवेदन पत्र में इस शर्त को पूरा किया गया है और नियमों के अर्थ के भीतर याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है। इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति की जांच की है जैसा कि नियमावली के नियम 11 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट किया गया है।

**बिक्री मात्रा**

73. घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा निम्नानुसार रही है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्रियां (मी.टन)	25,996	29,687	30,922	35,138
सूचीबद्ध	100.00	114.20	118.95	135.17
संबद्ध देशों से आयात(मी.टन)	4,078	6,204	12,131	16,350
सूचीबद्ध	100.00	152.12	297.48	400.94
मांग	32,662	39,332	47,836	57,035
सूचीबद्ध	100.00	120.42	146.46	174.62
पीबीटी (लाख)	****	****	****	****
संबद्ध देशों से आयात	(100.00)	(44.33)	(14.61)	(41.93)
मांग में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा	12.49	15.77	25.36	28.67
मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	79.59	75.89	65.11	62.11
मांग में भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा	85.71	80.97	69.29	65.61

74. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है। इसके साथ-साथ भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग में निरंतर वृद्धि हुई है। बिक्रियों में यह वृद्धि एक नई उत्पादन लाइन की प्रतिबिम्ब भी हो सकती है जिसे देश के भीतर पीएफवाई से एनएफवाई को स्थानांतरित किया जा रहा है और तदनुसार उद्योग ने अपनी पीएफवाई क्षमता को एनएफवाई में अंतरण कर दिया है। तथापि, घरेलू उद्योग इस बढ़ी हुई मांग का लाभ प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है क्योंकि महत्वपूर्ण बाजार हिस्सा संबद्ध देशों से पाटित आयातों द्वारा ले लिया गया है। यह भी जांच की गई है कि क्या खोए हुए बाजार हिस्से पर पाटित आयातों द्वारा अधिकार कर लिया गया है और यह पाया गया है कि अन्य भारतीय उत्पादकों ने भी बाजार के पर्याप्त हिस्से को खो दिया है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
मांग में बाजार हिस्सा (%)				
घरेलू उद्योग	79.59	75.89	65.11	62.11
अन्य भारतीय उत्पाद	6.12	5.08	4.18	3.51
भारतीय उद्योग	85.71	80.97	69.29	65.61
संबद्ध देश	12.49	15.77	25.36	28.67
अन्य देश	1.80	3.25	5.35	5.72

**लाभ**

75. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति निम्नानुसार रही है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू बिक्री के संबंध में लाभ/हानि	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-44	-15	-42
ब्याज	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	124	115	121
ब्याज पूर्व घरेलू बिक्री के संबंध में लाभ/हानि	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-18	18	-16
आयात-संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
निर्यात कीमत संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
पहुंच कीमत संबद्ध देश	97.85	101.70	100.36	98.35
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	105	114	123
केप्रोलेक्टम मूल्य	56.65	63.62	70.10	89.19
सूचीबद्ध	100	112	124	157

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग के फार्म निष्पादन जिसमें वर्ष 2003-04 में सुधार हो रहा है, में जांच अवधि में फिर से गिरावट आ गई जो भारत में पाटित आयातों में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण है। घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष में घाटा उठाया है जो अनेक कारकों के कारण हो सकता है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ गुजरात जो विचाराधीन उत्पाद के लिए एक प्रमुख खपत क्षेत्र है, में आया तूफान और भूकम्प शामिल हैं। तथापि, तत्पश्चात घरेलू उद्योग में सुधार मालूम हुआ है। तथापि, संबद्ध देशों से आयात अत्यधिक पाटित कीमतों पर शुरू हुए थे और जिसके परिणामस्वरूप जांच अवधि में घरेलू उद्योग को अत्यधिक घाटा हुआ मालूम होता है।

**उत्पादकता**

77. घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नलिखित तालिका में दी गई है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू उद्योग का कारोबार	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	120	135	166

कर्मचारियों की संख्या	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	97	106	104
प्रति कर्मचारी कारोबार	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	123	127	160
उत्पादन	26,019.11	30,158.9	31,302.9	36,100.2
		4	7	5
सूचीबद्ध	100	116	120	139
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	7.79	9.28	8.81	10.42
सूचीबद्ध	100	119	113	134
दैनिक उत्पादन (350 दिन)	74.34	86.17	89.44	103.14
सूचीबद्ध	100	116	120	139
घरेलू बिक्री के संबंध में लाभ/हानि	***	***	***	***
सूचीबद्ध	-100	-44	-15	-42
ब्याज	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	124	115	121
ब्याज पूर्व घरेलू बिक्री के संबंध में लाभ/हानि	***	***	***	***
सूचीबद्ध	-100	-18	18	-16
आयात-संबद्ध देश	4,078.00	6,204.00	12,131.0	15,906.0
			0	0
आयात-संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
पहुंच कीमत संबद्ध देश	97.85	101.70	100.36	98.35
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	105	114	123
केप्रोलेक्टम कीमत	56.65	63.62	70.10	89.19
सूचीबद्ध	100	112	124	157

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि होती रही है ।

### निवेश पर आय

77. निवेशों पर आय (ब्याज पूर्व लाभ) से लाभों की प्रवृत्ति जैसी ही प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है :-

(इकाई लाख में)

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू बिक्री के संबंध में लाभ/हानि	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-44	-15	-42
ब्याज	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	124	115	121
ब्याज पूर्व घरेलू बिक्री के संबंध में लाभ/हानि	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-18	18	-16
घरेलू उद्योग का जीएफए	****	****	****	****

सूचीबद्ध	100	109	118	132
घरेलू उद्योग का एनएफए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	97	98	101
घरेलू उद्योग की कार्यशील पूंजी	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	107	111	120
लगाई गई पूंजी-जीएफए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	109	117	131
लगाई गई पूंजी-एनएफए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	100	102	105
लगाई गई पूंजी पर आय-जीएफए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-16	15	-12
लगाई गई पूंजी पर आय-एनएफए	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-18	18	-15
संबद्ध देशों से आयात	****	****	****	****
निर्यात कीमत-संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
पहुंच कीमत-संबद्ध देश	97.85	101.70	100.36	98.35
मांग	32,662	39,332	47,836	57,035

उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि लगाई गई पूंजी पर आय, जिसमें पहले सुधार हो रहा था, में जांच अवधि में गिरावट आयी है।

#### **क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग**

78. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहा है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
क्षमता	32,640	37,000	43,900	48,200
सूचीबद्ध	100.00	113.36	134.50	147.67
उत्पादन	26,019	30,159	31,303	36,100
सूचीबद्ध	100.00	115.91	120.31	138.75
क्षमता उपयोग	79.72	81.51	71.31	74.90
सूचीबद्ध	100.00	102.25	89.45	93.96
आयात-संबद्ध देश	4,078	6,204	12,131	16,350
सूचीबद्ध	100.00	152.12	297.48	400.94
बिक्री	25,996	29,687	30,922	35,138
सूचीबद्ध	100.00	114.20	118.95	135.17
मांग	32,662	39,332	47,836	57,035
सूचीबद्ध	100.00	120.42	146.46	174.62
निर्यात कीमत-संबद्ध देश रुपए/किग्रा.	80.74	83.91	82.81	80.24
पहुंच मूल्य-संबद्ध देश रुपए/किग्रा.	97.85	101.70	100.36	98.35
मांग में बाजार हिस्सा (%)				
घरेलू उद्योग	79.59	75.89	65.11	62.11
अन्य भारतीय उत्पाद	6.12	5.08	4.18	3.51
भारतीय उद्योग	85.71	80.97	69.29	65.61
संबद्ध देश	12.49	15.77	25.36	28.67



उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग ने भारत में उत्पाद की मांग की प्रत्याशा में पीएफवाई को एनएफवाई में परिवर्तित करके क्षमता में वृद्धि की है। प्रत्याशा के अनुसार उत्पाद की मांग में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। तथापि, ऐसा मालूम होता है कि घरेलू उद्योग को उत्पादन दम में कमी करने के लिए बाध्य किया गया है जिसके परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष रूप से आयातों में तीव्र वृद्धि के कारण क्षमता उपयोग में कमी आयी है।

### घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

79. भारतीय बाजार में संबद्ध देश से आयात, कीमतों में हुई कमी और कम कीमतों पर हुई बिक्री के परिणामस्वरूप हुए हैं। संबद्ध देशों से हुए आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी कम है। यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संबद्ध देशों के निर्यातकों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्ची सामग्री की कीमतों में वृद्धि होने के कारण अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं की है। आगे नोट किया गया है कि नायलॉन फिलामेंट यार्न एक पेट्रोरासायनिक उत्पाद है और इसका उत्पादन नायलॉन चिप्स से होता है जो कैप्रोलैक्टम से उत्पादित होता है और कैप्रोलैक्टम बेंजीन से उत्पादित होता है जो कि एक प्रकार का पेट्रोरासायनिक उत्पाद है कैप्रोलैक्टम की कीमतों में पिछले दो वर्षों में पर्याप्त वृद्धि हुई है जो कैप्रोलैक्टम की कीमतों में वृद्धि बेंजीन की कीमतों में हुई वृद्धि के कारण है और बेंजीन कीमतों में वृद्धि कूड आयल कीमतों के कारण हुई है। कूड ऑयल कीमत में हुई वृद्धि अंतर्राष्ट्रीय जगत में सुविख्यात है। इसलिए, संभवतः यह प्रतीत नहीं होता है कि संबद्ध देशों के आयातक कैप्रोलैक्टम कीमतों में हुई वृद्धि के कारण प्रभावित हुए हैं। कैप्रोलैक्टम कीमत के प्रतिशत के रूप में आयात कीमतों की निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है, जैसाकि पहले भी पाया गया था निर्यातित कीमत कैप्रोलैक्टम कीमत से 43% अधिक थी जो जांच अवधि के दौरान पर्याप्ततः घटकर कैप्रोलैक्टम कीमत के मात्र 89% हो गई है। इस प्रकार, भारत को निर्यातों के संबंध में निर्यातक को प्रभावी कीमत प्राप्ति में गिरावट का घरेलू उद्योग पर प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हुआ प्रतीत होता है और आयात की पहुंच कीमत में गिरावट से यह प्रतीत होता है कि इसका प्रति उत्तर घरेलू उद्योग ने कीमत कम करके दिया है जिससे बाजार हिस्सा कम हो गया है। यह नोट किया जाता है कि पाटित आयातों को छोड़कर किसी अन्य कारक से घरेलू उद्योगी की कीमत प्रभावित नहीं हुई प्रतीत होती है।

### पाटन मार्जिन की मात्रा

80. प्रत्येक संबद्ध देश के पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है और उसे पर्याप्त माना गया है।

### भंडार सूची

81. घरेलू उद्योग की भंडार सूची की स्थिति निम्नानुसार रही है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
भंडार सूची मी.टन	3,087.60	2,931.71	2,847.94	2,362.94
सूचीबद्ध	100.00	94.95	92.24	76.53
बिक्री मात्रा मी.टन	25,996	29,687	30,922	35,138
बिक्री के % के रूप में भंडार सूची	100.00	114.20	118.95	135.17
मांग मी.टन	32,662	39,332	47,836	57,035
सूचीबद्ध	100.00	120.42	146.46	174.62
उत्पादन मी.टन	26,019	30,159	31,303	36,100
सूचीबद्ध	100.00	115.91	120.31	138.75
संबद्ध देशों से आयात (मी.टन)	4,078	6,204	12,131	16,350
निर्यात कीमत-संबद्ध देश रु./किग्रा.	80.74	83.91	82.81	80.24
परिच कीमत-संबद्ध देश रु./किग्रा.	97.85	101.70	100.36	98.35
मांग में बाजार हिस्सा (5)				
घरेलू उद्योग	79.59	75.89	65.11	62.11
अन्य भारतीय उत्पादक	6.12	5.08	4.18	3.51
भारतीय उद्योग	85.71	80.97	69.29	65.61
संबद्ध देश	12.49	15.77	25.36	28.67

यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग मांग में वृद्धि के अनुरूप ही अपनी विक्रियों को बनाए रखने का प्रयास करते प्रतीत होते हैं जिससे भंडार सूची में वृद्धि हो रही है। प्रकटन के पश्चात मै. एफ.आई.ए.एस.डब्ल्यू.आई. ने तर्क दिया है कि वर्ष के अंत में सूचित की गई क्षमता में वृद्धि पर विचार किया गया होगा जबकि अवधि के दौरान प्रभावी क्षमता कम होगी। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि गैर-क्षतिकारक कीमत के प्रयोजनार्थ विचार किया गया घरेलू उद्योग मानकीकृत क्षमता उपयोग, क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किए गए क्षमता उपयोग से अधिक है। अतः यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को अप्रयुक्त क्षमता का सामना करना पड़ा है।

### नकदी प्रवाह और नकद लाभ

82. घरेलू उद्योग के सभी संबंधी संघटक बहु-उत्पाद कंपनियां हैं और इसलिए, समूची कंपनी के नकदी प्रवाह की जांच करना क्षति उद्देश्यों के लिए उपर्युक्त नहीं हो सकता है। इसलिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की नकदी लाभ स्थिति की जांच की है जो तालिका में दी गयी है।

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
पीबीटी	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-44	-15	-42
अवमूल्यन	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	90	104	122
नकद लाभ	****	****	****	****
सूचीबद्ध	-100	-4	65	30
संबद्ध देशों से आयात	4,078	6,204	12,131	16,350
निर्यात कीमत-संबद्ध देश	80.74	83.91	82.81	80.24
पहुंच कीमत-संबद्ध देश	97.85	101.70	100.36	98.35
मांग में बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	79.59	75.89	65.11	62.11
अन्य भारतीय उत्पादक	6.12	5.08	4.18	3.51
भारतीय उद्योग	85.71	80.97	69.29	65.61
संबद्ध देश	12.49	15.77	25.36	28.67

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की नकद लाभ स्थिति जो पहले सुधर रही थी, में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है।

### रोजगार

83. घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर निम्नानुसार रहा है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100.00	97.37	106.49	103.79
बिक्री (मी.टन)	25,996	29,687	30,922	35,138
बिक्री की प्रति इकाई पर कर्मचारी	0.13	0.11	0.11	0.10
उत्पादन (मी.टन)	26,019	30,159	31,303	36,100
प्रति इकाई उत्पादन पर कर्मचारी	0.13	0.11	0.11	0.10

उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर कमोबेश स्थिर रहा है।

### मजदूरी और पूंजी जुटाने की क्षमता

84. घरेलू उद्योग की मजदूरी निम्नानुसार है :

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
वेतन	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	109	114	127
उत्पादन	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	116	120	139
वेतन-उत्पादन की प्रति इकाई पर	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	106	106	110

उपर्युक्त से यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की मजदूरी में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। उसी समय, घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप प्रति इकाई उत्पादन पर मजदूरी में कमी आई है।

### वृद्धि

85. वृद्धि के विभिन्न मानदंडों की स्थिति नीचे तालिका में दी गई है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
मांग की तुलना में बिक्री				
बिक्री	100.00	114.20	118.95	135.17
मांग	100.00	120.42	146.46	174.62
मांग की तुलना में उत्पादन				
उत्पादन	100.00	111.69	114.48	128.06
मांग	100.00	120.42	146.46	174.62
मांग की तुलना में आयात				
आयात	100.00	152.12	297.48	400.94
मांग	100.00	120.42	146.46	174.62
निर्गत की तुलना में कच्ची सामग्री की कीमत				
निर्गत कीमत	100.00	103.94	102.56	99.38
केप्रीलेक्टम कीमत	100.00	112.30	123.74	157.44
आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत				
बिक्री कीमत	100.00	105.20	113.90	122.58
पहुंच कीमत	100.00	103.94	102.56	99.38
लाभों की तुलना में कारोबार				
पीबीटी	(100.00)	(44.33)	(14.61)	(41.93)
बिक्री मूल्य	100.00	120.14	135.48	165.69
संबद्ध देशों के बाजार हिस्से की तुलना में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा				
मांग में भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा	79.59	75.89	65.11	62.11
मांग में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा	12.49	15.77	25.36	28.67
संबद्ध देशों के बाजार हिस्से की तुलना में भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा				
मांग में भारतीय उद्योग का बाजार हिस्सा	85.71	80.97	69.29	65.61
मांग में संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा	12.49	15.77	25.36	28.67
लाभों की तुलना में उत्पादकता				
उत्पादकता	100.00	119.04	112.98	133.67
लाभ	(100.00)	(44.33)	(14.61)	(41.93)

उपर्युक्त तालिका से यह प्रदर्शित होता है कि क्षति अवधि के दौरान अधिकांश क्षति मानदंडों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और उनमें नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हो रही है ।

### अन्य हितबद्ध पार्टियों के तर्क और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच

86. (i) मैसर्स एफआईएसडब्ल्यूआई एवं अन्य द्वारा दिए गए तर्कों के संबंध में यह नोट किया गया है कि नियम 6 के तहत उपभोक्ताओं की एसोसिएशन को इस बात की स्वीकृति दी गयी है कि वे उन सूचनाओं को मुहैया कराएं जो पाटन, क्षति और कारणात्मकता से संबंधित जांच के संगत हो । यद्यपि यह नोट किया गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने संबंधी विरोधी तर्कों को छोड़कर एसोसिएशन ने कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है जो पाटन भारी और कारणात्मकता से संबंधित जांच के लिए संगत हों न ही एसोसिएशन के सदस्यों ने संगत सूचना दायर की है । पाटनरोधी शुल्क न लगाने के संबंध में किए गए अधिकांश अनुरोध केवल ऐसे वक्तव्य हैं जो संगत साक्ष्य के साथ मेल नहीं खाते हैं । परिणामस्वरूप, प्राधिकारी एसोसिएशन द्वारा किए गए दावों/अनुरोधों की सत्यता की जांच करने में असफल रहे हैं ।

(ii) आवेदनकों द्वारा दावा की गई गोपनीयता के संबंध में यह नोट किया गया है कि याचिकाकर्ताओं ने सूचना की गोपनीयता रखने वाले दावों के लिए विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया है । प्राधिकारी याचिकाकर्ता द्वारा किए गए गोपनीयता के दावों की जांच करते हैं और इससे सहमत हुए हैं ।

(iii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि आईबीआईएस सूचना याचिकाकर्ताओं को चुनिंदा रूप से उपलब्ध नहीं है । यद्यपि आईबीआईएस ने गोपनीय आधार पर याचिकाकर्ताओं को सूचना उपलब्ध कराई है । तथापि, एसोसिएशन के लिए आईबीआईएस से सूचना स्वतंत्र रूप से प्राप्त करने और अपने तर्क देने की छूट थी । आयातों की मात्रा के संबंध में याचिकाकर्ताओं के दावे का खंडन करते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि एसोसिएशन ने एसएफए द्वारा प्रकाशित सूचना पर भरोसा करने को तरजीह दी है जबकि एसोसिएशन को यह छूट थी कि वह प्राधिकारी को संगत सूचना उपलब्ध कराने के लिए अपने सदस्यों को निर्देश देकर सूचना एकत्र करें । किसी भी स्थिति में अनंतिम जांच परिणामों में विचार किए गए सौदेवार-आयात के विवरणों को सभी हितबद्ध पार्टियों के लाभार्थ सार्वजनिक फाइल में रखा गया है ।

## क्षति के बारे में निष्कर्ष

87. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से और भारत में संबद्ध वस्तु की कुल मांग की तुलना में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है। इन आयातों में 2001-02 से जांच अवधि तक पर्याप्त वृद्धि हुई है और इनका पाटित आयातों के कारण कीमत पर भारी प्रभाव पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप कीमत ह्रास एवं कीमत कटौती हुई है। वस्तुतः घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुआ है। जांच अवधि के लिए संबद्ध देशों से कीमत कटौती के मार्जिन का निर्धारण किया गया है जिसे काफी अधिक माना गया है। यद्यपि क्षति अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में समग्र रूप में वृद्धि हुई है तथापि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है। जांच अवधि में मापदंडों अर्थात् उत्पादन (मांग की तुलना में 34 % की कमी), बिक्री मात्रा (मांग की तुलना में 39 % की कमी), क्षमता उपयोग (इष्टतम से 6 % से कम) सतत वित्तीय घाटे (जांच अवधि में घाटे में पुनः वृद्धि), वित्तीय घाटों में आगे और कमी, मांग में बाजार हिस्से में गिरावट (16.11 %), सकारात्मक कीमत कटौती, लगाई गई पूंजी पर नकारात्मक आय, अत्यधिक पाटन मार्जिन के संबंध में इष्टतम से कम वृद्धि अनेक मापदंडों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि से क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारी गिरावट का पता चलता है। रोजगार एवं मजदूरी जैसे मापदंडों से क्षति का पता नहीं चलता है। तथापि, ऐसे याचिकाकर्ता को कंपनी की प्रकृति के संदर्भ में देखना होगा (याचिकाकर्ता द्वारा जनशक्ति को काम पर लगाना और उससे हमेशा काम लेना संभव नहीं हो सकता है)। तथापि, इस तथ्य को देखते हुए कि क्षति अवधि के दौरान अनेक मापदंडों से अत्यधिक प्रतिकूल प्रवृत्तियां प्रदर्शित हुई हैं, जिनके संचयन से जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय ह्रास का सामना करना पड़ा है, इसे संतोषजनक नहीं माना जा सकता। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

### ज. कारणात्मक संबंध

#### (क) प्रस्तावना

88. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण के संबंध में अपने निष्कर्ष पर पहुंचने और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 तथा यथा-संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के नियम 11 के अधीन अनुबंध-11 के पैरा (4) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव और उक्त उद्योग में स्थिति पर उनके परिणामों की जांच की। घरेलू उद्योग को उसी समय क्षति पहुंचा सकने वाले पाटित आयातों

से भिन्न ज्ञात कारकों की भी जांच की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन अन्य कारकों द्वारा हुई संभावित क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है ।

### (ख) पाटित आयातों का प्रभाव

(1) पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में पर्याप्त गिरावट आई है । संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई गिरावट से घरेलू उद्योग बाजार मांग में हुई वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्री नहीं बढ़ा सका है । परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग की बिक्रिया इतनी नहीं बढ़ी ताकि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का इष्टतम उपयोग कर सकें । परिणामतः घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में वृद्धि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई गिरावट के कारण बाधित हुई । यह नोट किया गया है कि पाटित आयातों को छोड़कर किसी भी अन्य कारक से घरेलू उद्योग के कीमत निर्धारण पर प्रभाव पड़ा प्रतीत नहीं होता है ।

(2) घरेलू उद्योग द्वारा कीमत में की गई अत्यधिक कटौती से घरेलू उद्योग निविष्टि लागत में हुई वृद्धि की सीमा तक अपनी कीमतें नहीं बढ़ा सका । परिणामतः लगातार सुधार प्रदर्शित करने के बाद घरेलू उद्योग के लाभ, नकदी प्रवाह तथा निवेश पर आय में कमी आ गई । यद्यपि घरेलू उद्योग 2000-01 और 2003-04 की अवधि के बीच अपनी कीमतों में पर्याप्त वृद्धि करने और पिछली क्षति से उभरने में समर्थ तथा तथापि, कीमत में वृद्धि करने में घरेलू उद्योग की असमर्थता के कारण 2003-04 की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग का निष्पादन पुनः खराब हो गया । अतः यह पाया गया है कि आयातों के कारण घरेलू उद्योग कीमत में विधि सम्मत वृद्धि करने में वंचित हुआ है ।

(3) कीमत में अत्यधिक कटौती और पाटित आयातों की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि से घरेलू उद्योग विगत में विभिन्न कारकों से हुई क्षति से उभरने में अक्षम रहा । वस्तुतः पर्याप्त सुधार होने के बाद लाभ, नकदी प्रवाह निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन पुनः खराब हो गया ।

### अन्य कारकों का प्रभाव

#### (ग) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन

89. विचाराधीन अवधि के दौरान याचिकाकर्ता के अलावा संबद्ध वस्तु के अन्य घरेलू उत्पादक थे । तथापि प्रारंभिक जांच परिणाम के पश्चात अन्य उत्पादक मै. सेंचुरी एंका ने अपेक्षित सूचना प्रस्तुत की है और प्राधिकारी ने उनकी उत्पादन लागत और क्षति आंकड़ों का सत्यापन किया है । अब, घरेलू उद्योग में मै. सेंचुरी एंका

भी शामिल हैं, जिनके सभी 15 मानदंडों में कार्य निष्पादन का विश्लेषण प्राधिकारी द्वारा पूर्ववर्ती पैराग्राफों में किया जा चुका है। इसके अलावा कुछेक छोटी कंपनियों के अलावा जिनका उत्पादन न्यूनतम है, कोई अन्य घरेलू उद्योग नहीं है।

**(घ) मांग में कमी अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन**

90. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में कोई कमी नहीं आई है। इसके विपरीत क्षति अवधि के दौरान समग्र मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह अनंतिम निष्कर्ष भी निकालते हैं कि खपत की पद्धति में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन नहीं हुआ है।

**(ङ) पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमत**

91. उपलब्ध सूचना के अनुसार संबद्ध देशों से भिन्न देशों के मूल के संबंधित उत्पाद के आयात की कुल मात्रा न्यूनतम से कम हैं और इसलिए उन्हें अनंतिम रूप से घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव न डालने वाला माना गया है।

**(च) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं प्रतिस्पर्धा**

92. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का एक मात्र ऐसा बाजार है जहां संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु के समान वाणिज्यिक ग्रेडों और विनिर्देशनों को पूरा करने के लिए की जाती है। आगे यह नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं और इन्हें एक समान अनुप्रयोगों/अंतिम प्रयोगों में उपयोग में लाया जाता है।

**(छ) घरेलू उद्योग के प्रौद्योगिकी, निर्यात निष्पादन और उत्पादकता में विकास**

93. याचिकाकर्ता के रिकार्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग की क्षति हुई प्रौद्योगिकी में सुधार संगत कारक नहीं रहा है।
94. घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निर्यातों में सुधार हुआ है तथापि ये घरेलू उद्योग की कुल बिक्री का अभी भी कोई खास हिस्सा नहीं है। आगे यह नोट किया जाता है कि विभिन्न आर्थिक संकेतकों के संबंध में अलग-अलग



निष्पादन का निर्धारण केवल घरेलू बिक्री के बारे में किया गया है । अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के कारण नहीं हो सकती है ।

95. जहां तक उत्पादकता में सुधार का संबंध है प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान नियोजित प्रति व्यक्ति के प्रति वर्ष उत्पादन जैसे उत्पादकता संबंधी उपायों में क्षति अवधि के दौरान हुआ है । जांच के आधार पर प्राधिकारी यह मानते हैं कि उत्पादकता के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है ।

#### (ज) कारणात्मक संबंध पर निष्कर्ष

96. पाटित आयातों की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के परिणाम हिस्से में गिरावट आई है । आगे यह देखा जाता है कि संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई गिरावट के कारण घरेलू उद्योग बाजार मांग के अनुरूप अपनी बिक्री नहीं बढ़ा सका । परिणामतः घरेलू उद्योग की बिक्री उतनी मात्रा तक नहीं बढ़ सकी जिससे कि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का इष्टतम उपयोग कर सके । परिणामतः घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में वृद्धि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट के कारण प्रभावित हुई । घरेलू उद्योग द्वारा कीमत में की गई अत्यधिक कटौती से घरेलू उद्योग निविष्टि लागत में हुई वृद्धि की सीमा तक अपनी कीमतें नहीं बढ़ सका । परिणामतः घरेलू उद्योग का लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर आय में लगातार सुधार प्रदर्शित करने के बाद कमी आ गई । अत्यधिक कीमत कटौती तथा पाटित आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि से घरेलू उद्योग का निष्पादन पर्याप्त सुधार प्रदर्शित करने के बाद पुनः कम हो गई अतः अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थ के भीतर संबद्ध देशों के मूल के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

#### (झ) भारतीय उद्योग का हित

97. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतियोगिता की पुनः स्थिति लाना है जोकि देश के सामान्य हित में है ।
98. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है । किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतियोगिता कम नहीं होगी । इसके विपरीत

पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का हास रूकेगा और उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

99. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता तब भी दो अथवा उससे अधिक आपूर्ति स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

### (21) निष्कर्ष

100. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :-

- (क) संबद्ध देशों से भारत का संबद्ध वस्तु का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;
- (ख) भारतीय उद्योग को इससे वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) तथापि, नॉयलोन फ्लेम रिटार्डेंट यार्न, एयर टेक्सचराइज्ड यार्न नायलोन 66 तथा नायलोन 11 यार्न, 170/24 तथा 280/14 डेनियर, जिनका प्रयोग हुक एवं लूप प्रकार के फास्टनर्स में किया जाता है, नायलोन 6 मोनोफिलामेंट, यूवी.ट्रेडेड यार्न के आयात, जहां भी पहुंच मूल्य 172 रु. प्रति किग्रा. से अधिक है, के संबंध में क्षति नहीं हुई है।

101. प्राधिकारी अंतिम निर्धारण होने तक संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर अनंतिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपरोक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर या उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कंपनी की क्षति रहित कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है। प्रारंभिक जांच परिणामों के चरण में प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के अलग-अलग प्रकारों के लिए एक बेंचमार्क की सिफारिश की है। यह तर्क दिया गया है कि यह तरीका उचित नहीं है और हितबद्ध पक्षकारों ने अलग-अलग बेंचमार्कों के लिए तर्क दिया है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कई एक अलग-अलग बेंचमार्कों की सिफारिश करना व्यवहार्य नहीं होगा क्योंकि सभी कंपनियों द्वारा सभी उत्पाद प्रकारों का निर्यात नहीं किया गया है। वस्तुतः कई निर्यातकों ने केवल कुछेक प्रकार के उत्पादों का निर्यात किया है जबकि विदेशी उत्पादकों द्वारा अपने घरेलू बाजार में तथा घरेलू उद्योग द्वारा भारतीय बाजार में उत्पादित और बेचे जाने वाले उत्पादों की संख्या काफी अधिक

है । अतः, भारत को निर्यात न किए गए प्रकारों के लिए बेंचमार्क निर्धारित करना संभव नहीं है । सभी संगत विचारों की जांच करने के बाद प्राधिकारी का मत यह है कि वर्तमान मामले के तथ्यों एवं परिस्थितियों में शुल्क का सबसे उचित रूप से पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित राशि है । तदनुसार प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित राशि की सिफारिश करना उचित समझते हैं ।

102. यदि छोड़ी गई संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत 172/रु.क.प्र.से अधिक हो तो नायलोन फ्लेम रिटार्डेंट यार्न, एयर टेक्सचराइज्ड यार्न, नायलोन 6 तथा नायलोन 11 यार्न, 170/24 तथा 280/14 डेनियर जिनका प्रयोग हुक तथा लूप प्रकार के फास्टनर्स में किया जाता है, नायलोन 6 मोनाफिलामेंट, यू.वी.ट्रेंडेड यार्न को छोड़कर संबद्ध देशों के मूल से या वहां से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 54 के अंतर्गत आने वाले नायलोन फिलामेंट यार्न के सभी प्रकारों पर पाटनरोधी शुल्क लागू करने के लिए केंद्र सरकार को सिफारिश करना उचित समझते हैं । इस प्रयोजन के लिए पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के तहत सीमाशुल्क तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनच्छेद 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क द्वारा किए गए निर्धारण के अनुसार आकलन योग्य मूल्य होगा । पाटनरोधी शुल्क की राशि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के लिए नीचे कॉलम 9 में उल्लिखित राशि होगी :-

तालिका										
क्र. सं.	उपशीर्ष अथवा टैरिफ मद	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	मात्रा	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	चीन जन.गण.	मै. जिनन जूडा	मै. जिनन जूडा	63	किग्रा.	अम. डॉ.
2	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	चीन जन.गण.	मै. जिनन जूडा के अलावा कोई भी	मै. जिनन जूडा के अलावा कोई भी	63	किग्रा.	अम. डॉ.
3	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	चीनी ताइपेई	सन्टैक्स फाइबर कंपनी लि.	सन्टैक्स फाइबर कंपनी लि.	8.99	किग्रा.	अम. डॉ.
4	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	चीनी ताइपेई	लाइपेंग इंटरप्राइजेज कं. लि.	लाइपेंग इंटरप्राइजेज कं. लि.	34.41	किग्रा.	अम. डॉ.

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
5	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	चीनी ताइपेई	मै. सन्टेक्स फाइबर कं. लि. और मै. लाइपेंग इंटरप्राइजेज कं. लि. के अलावा कोई भी	मै. सन्टेक्स फाइबर कं. लि. और मै. लाइपेंग इंटरप्राइजेज कं. लि. के अलावा कोई भी	41.43	किग्रा.	अम. डॉ.
6	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	इंडोनेशिया	कोई भी	कोई भी	77.99	किग्रा.	अम. डॉ.
7	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	मलेशिया	हुआलोन कार्पोरेशन	हुआलोन कार्पोरेशन	4.24	किग्रा.	अम. डॉ.
8	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	मलेशिया	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	34.80	किग्रा.	अम. डॉ.
9	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	थाइलैंड	एशिया फाइबर पब्लिक कंपनी लि.	एशिया फाइबर पब्लिक कंपनी लि.	25.77	किग्रा.	अम. डॉ.
10	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	थाइलैंड	मै. थाई टफेटा	मै. थाई टफेटा	22.40	किग्रा.	अम. डॉ.
11	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	थाइलैंड	मै. थाई टफेटा और मै. एशिया फाइबर के अलावा कोई अन्य	मै. थाई टफेटा और मै. एशिया फाइबर के अलावा कोई अन्य	32.03	किग्रा.	अम. डॉ.
12	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	कोरिया ग. रा.	टेकवांग इंडस्ट्रियल कं. लि.	टेकवांग इंडस्ट्रियल कं. लि.	23.74	किग्रा.	अम. डॉ.
13	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	कोरिया ग. रा.	हयोसंग कार्पोरेशन	हयोसंग कार्पोरेशन	44.96	किग्रा.	अम. डॉ.
14	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	कोई भी	कोरिया गणराज्य राज्य	मै. टेकवांग इंडस्ट्रियल कं. लि. और मै. हयोसंग कार्पोरेशन के अलावा कोई अन्य	मै. टेकवांग इंडस्ट्रियल कं. लि. और मै. हयोसंग कार्पोरेशन के अलावा कोई अन्य	51.94	किग्रा.	अम. डॉ.
15	54	नॉयलॉन फिलामेंट यार्न	*नीचे यथा उल्लिखित	चीन जन. गण. चीनी ताइपेई, मलेशिया, इंडोनेशि या, थाइलैंड और कोरिया गणराज्य के अतिरिक्त	चीन जन. गण., चीनी ताइपेई, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाइलैंड और कोरिया गणराज्य के अतिरिक्त	कोई भी	कोई भी	77.93	किग्रा.	अम. डॉ.

\* नायलॉन या अन्य पॉलीएमाइड्स के 67 डेसीटेक्स से कम के सिंथेटिक मोनो फिलामेंट जिसमें नायलॉन के फिशनेट सहित नायलॉन की उच्च अध्यवसाय यार्न के नायलॉन शामिल नहीं हैं और नायलोन फ्लेम रिटार्डेंट यार्न, एयर टेक्सचराइज्ड यार्न, नायलोन 66 तथा नायलोन 11 यार्न; 170/24 तथा 280/14 डेनियर, जिनका प्रयोग हुक तथा लूप प्रकार के फास्टनर्स में किया जाता है, नायलोन 6 मोनोफिलामेंट, यूबी क्रेडेड यार्न को छोड़कर सिंथेटिक फिलामेंट यार्न यदि शामिल न की गई संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत 172/रु.क.ग. से अधिक हो ।

103. केन्द्र सरकार के आदेश के विरुद्ध एक अपील, उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जाएगी ।
104. प्राधिकारी अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी की गई सार्वजनिक नोटिसों के अनुसार यहां की गई सिफारिशों के अनुसार निश्चयात्मक उपायों को जारी रखने, उनमें परिवर्तन करने अथवा समाप्त करने की आवश्यकता की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं । इस प्रकार की समीक्षा हेतु प्राधिकारी द्वारा कोई अनुरोध स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक कि कोई हितबद्ध पार्टी इस प्रयोजनार्थ तय समय-सीमा के भीतर उसे दायर नहीं करती है ।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, अपर सचिव और निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 3rd July, 2006

### FINAL FINDINGS

**Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Nylon Filament yarn originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP.**

**F.No. 14/5/2005-DGAD.**— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

#### A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:

(i) On 4<sup>th</sup> July 2005, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, announced a public notice (initiation notification) publicised in the Gazette of India, the initiation of an anti dumping investigation with regard to imports of Nylon filament yarn

originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP (Also referred to as subject countries hereinafter). The Anti dumping proceeding was initiated following an application received from M/s. Modipon Limited, Modinagar, JCT Limited, Hoshiarpur, Shree Synthetics Limited, Ujjain and Gujarat State Fertilizers Company Limited, Vadodara (the applicants) and supported by Century Enka Limited-Pune on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. Subsequent to the initiation, M/s Century Enka also submitted the required information, which was subsequently verified by the Authority. The application contained evidence of dumping of the said product and of material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

(ii) Before initiation, the Authority notified the Embassies of subject countries in India about the receipt of fully documented application made by the applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporting producers, importers, industry associations, embassies of the countries concerned and to the applicants and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iv) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to all the known exporters and Embassies of subject countries in India. According to sub-rule (4) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassies of subject countries in India and other interested parties. The Embassies of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time

(v) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from subject countries.

**Indonesia:**

P.T Kolon Ina.  
Indonesia  
PT GT Petrochem Industries TBK  
Jakarta Indonesia

P T Evershineetex  
INDONESIA 10250

PT. Gema Nusa Perkasa  
Indonesia  
P.T. Toray Industries Indonesia (TIN)  
61-62, Jakarta 12069,  
Indonesia  
Shinta Nylon Utama.,

Indonesia

## THAILAND

Siam Tyre Cord Co., Ltd.  
Thailand

Thai Baroda Industries Limited  
THAILAND

Asia Fiber Public Company Ltd.  
Bangkok  
Thailand

Thai Taffeta Company Ltd  
Bangkok , 10110 Thailand

## CHINA, PR

Kolon Corporation  
Beijing, China PR

Kolon Nanjing Co., Ltd.  
Jiangsu Province, China PR

Xiamen TongLun Industrial Co., Ltd.  
Xiamen, 361100  
China PR

Wu Jiang Heng Yu Textile Co., Ltd,  
Jiangsu province,  
China PR

Jinan Juda Fiber Co Ltd,  
Jinan Shandong, 250100-  
China PR

Guangdong Xinhui Meida Nylon Co. Ltd;  
Guangdong 529100  
CHINA PR

SHANDONG DACHENG  
CHEMICAL INDUSTRY GROUP  
CO., LTD

26 ZIBO SHANDONG  
CHINA PR

BASF-Huayuan Nylon Co., Ltd.  
China PR

Qingdao Zhongtai Group Company  
China PR

Gaoyao Huajin Group Co., Ltd  
Guangdong,  
China PR

## TAIWAN

FORMOSA Company Limited  
640 TAIWAN R.O.C

Acelon Chemicals & Fiber Corporation  
Taiwan

CHUNG SHING TEXTILE CO., LTD  
Taiwan

ZIG SHENG INDUSTRIAL CO., LTD  
TAIPEI , TAIWAN

FU-TA TEXTILE CO., LTD.  
Taichung Hsien Taiwan

## MALAYSIA

Hualon Corporation  
Malaysia 50200

## KOREA RP

Hyosung Corporation  
Seoul, 100-110, South Korea

Kohap Corporation  
Korea RP

Kolon Industries

## Korea RP

(vi) Eight exporters/producers have responded to the exporter's questionnaire in a substantial manner and notice of initiation:

1. M/s. Jinan Juda Fiber Co Ltd,  
Jinan Shandong, 250100-  
China PR
2. M/s. TKI, Korea RP
3. HYOSUNG Corporation, Korea RP.
4. Hualon Corporation  
Malaysia 50200
5. M/s. Suntex, Taiwan
6. M/s. Li Peng Enterprise Co., Taiwan
7. M/s. Asia Fibres  
Thailand
8. M/s. Thai Taffeta Company Ltd  
Bangkok ,10110 Thailand

In addition to above, M/s. Kolon Industries, Korea and M/s. Thai Synthetic Fiber Manufacturers Association, Thailand, have also submitted responses to the notice of initiation.

(vii) A copy of initiation notification along with the importers questionnaire were also sent to the various importers which were listed in the application. However, response in the form and manner of importers questionnaire has been received from M/s Sky Industries, Mumbai, M/s Doriwala industries, Surat, M/s Spica Elastic, Pune and others. However, very few importers have participated in the investigations despite repeated remainders to them.

(viii) The Authority notified Preliminary findings vide its Notification dated the 3rd February, 2006 with regard to Anti-Dumping



Investigations concerning imports of Nylon Filament Yarn originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication. The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the Preliminary Findings within forty days of the date of the letter. The Authority also forwarded a copy of the preliminary Findings to the Embassies/ of the subject countries/territory with a request to furnish their views on the Preliminary findings. None of the other importers have also responded to the importers questionnaire as per the details asked. However, a few importers and users association namely FIASWI, Gujarat, have responded to the initiation notification and they have submitted some comments, which have been taken into account subject to their being relevant to the investigation.

(ix) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(x) The Authority held a public hearing on 20<sup>th</sup> March 2006 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the Domestic Industry and other interested parties. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. Designated Authority in this finding has considered the written submissions thus received from interested parties. Arguments raised by interested parties before announcing of preliminary findings, which have been brought out in the Preliminary Findings notified earlier have not been repeated herein for sake of brevity. However, arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt with in the Final Findings. The Authority conducted on-the-spot verification of the domestic industry to the extent considered necessary. Additional details regarding injury were sought from the applicants, which were also received. The Authority also conducted on spot verification of the information submitted by exporters from subject countries except M/s Jinan Juda from China PR after getting additional information and their concurrence. It may be noted that M/s Jinan withdrew its offer for verification of the information submitted when the authority had asked all exporters to offer their willingness for the verification of the data submitted by them. Later on, they again reversed their decision and requested the Authority to verify the data but then it was too late considering the fact that anti dumping investigations are time bound in nature.

(xi) \*\*\*\* In this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings was disclosed to known interested parties on 15<sup>th</sup> June 2006 and comments received on the same are being considered in Final Findings. The investigation of dumping and injury covered the period from 1<sup>st</sup> January 2004 to 31<sup>st</sup> December 2004 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1<sup>st</sup> April 2001 to the end of period of investigation. (Also called Injury period).

(xii) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of Final determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the best cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

(xiii) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

#### **B. Product under Consideration.**

2. The product under consideration in the present investigation is Synthetic Filament Yarn of Nylon also known as Polyamide Yarns. Nylon Filament Yarn is a synthetic filament yarn produced by polymerization of organic monomers.

3. Federation of Indian Art Silk Weaving Industry (FIASWI), Mumbai have submitted that Application contains scant information with regards to product information, price Effect, Dumping Margins and Injury Margins. It has been further submitted that high Tenacity Yarn of Nylon classified under Customs sub-heading 5402.10 and all man made filaments yarns not having Nylon Polyamides should not be included within the scope of the product under consideration and their import data should not be included within the volume and value of the imported goods. It has been submitted that the domestic industry does not manufacture all types of NFY Imports of NFY includes imports of Nylon 66, which is not produced in the country. It has been submitted that Nylon is synthesized in mainly two different ways using two

different methods namely – using hexamethylene diamine and adipic acid to produce Nylon 66 and by self condensation of a single constituent e.g. amino acid producing Nylon 6 and physical and chemical characteristics of Nylon 6 and Nylon 66 are different. It has also been submitted that in India only Nylon 6 is produced, whereas in USA and other developed countries Nylon – 66 is produced. Since Nylon 66 is not manufactured in India, it is being imported and therefore, this should be segregated from imports of NFY. Nylon 6 and 66 can not be used interchangeably in all aspects, as there are some difference in these two types, which depends upon the eventual product to be produced. It is therefore, appropriate to limit the investigation for Nylon 6. It has also been added that NFY used to manufacture Hook and Loop tape (Velcro Tapes) should not fall under PUC as domestic industry does not produce the same. It has also been added that prices of Nylon 66 is higher than Nylon 6, which would lead to distortion of cost of production, normal value, export price and also dumping margin. Even if it is not separated as entirely unlike article, it may be excluded for the purpose of dumping margin and injury determination. The Designated Authority should consider seconds quality either as joint product or co-product. Clubbing of denier is wrong and distorting since there is considerable difference in weight in different denier counts indicating different raw material requirements and different conversion ratios.

4. On the other hand, the domestic industry has submitted that The product under consideration in the present investigation is Synthetic Filament Yarn of Nylon also known as Polyamide Yarns. Nylon Filament Yarn is a synthetic filament yarn produced by polymerization of organic monomers. Generic chemical name of Filament Yarn of Nylon is polyamide yarn. Product is widely known as polyamide yarn also. It is called Nylon Filament Yarn in India and in trade practice/practice. Nylon yarn description is used because it was invented in New York and commercialized in LONDON. The product under consideration claimed by the domestic industry includes all kinds of synthetic filament yarns of Nylon or Polyamides, other than sewing thread, such as flat yarn - twisted and/or untwisted, fully drawn yarn (FDY), spin drawn yarn (SDY), fully oriented yarn (FOY), high oriented yarn (HOY), partially oriented yarn (POY), textured yarn – twisted and/or untwisted, and dyed yarn, single, double, multiple, folded or cabled, classifiable within Chapter 54 under customs subheading no. 5402, but excludes high tenacity yarn of nylon or other polyamides.

5. The domestic industry has contended that different types of NFY are produced from the same production technology, manufacturing process, raw materials, plant & equipment and perform the same general purpose.

There is a great amount of substitutability between different types of NFY. It has been submitted that mere value addition does not result in significant change in the product properties. Essential product properties remain the same as that of simple Nylon filament yarn. Nylon Filament Yarn is produced in different luster such as bright, Semi dull and Full dull. It can be in Grey form or colored form. There is no significant difference in product properties in respect of NFY with different luster, even though physical appearance and associated costs & prices vary with luster. The domestic industry has further represented that Nylon 6 and Nylon 66 are one like product in view similar physical and chemical characteristics. In fact, encyclopedia of chemical technology by Kirk Othmer has defined the same physical and chemical properties in respect of NFY. It is further added that both nylon 6 and 66 are "polyamides" and are manufactured as continuous filament. It is further added that Nylon 6 is obtained from Caprolactam, whereas nylon 66 is obtained from Hexamethylenediamine and adipic acid and mere difference in raw materials does not render two as dislike products. They both have similar function and uses with nylon 66 having a greater use than Nylon 6. It is also represented that pricing of nylon 6 and 66 is in a close band. Whereas, sometime nylon 66 is costlier (such as in 2004), nylon 6 can also be costlier than nylon 66 (such as in 2005). However, over a longer period of 10 – 15 years, prices of nylon 6 and 66 have remained in a common band. The domestic industry has placed reliance upon various decisions of Designated Authority as also other investigating authorities in this regard. Difference in raw material or manufacturing process does not render two products dislike. It has been added by the domestic industry that so long as the two products have overlapping applications, there is enough jurisprudence that these should be treated as one like product. Different end applications of Polyester Films, BOPP films are referred to and relied upon. With regard to the quality difference, it has been submitted that Quality difference can be claimed and allowed by the Designated Authority only if substantiated. Designated Authority earlier provided adjustment on account of quality difference after substantiation by interested parties. Difference in quality does not mean different and unlike article. Reliance is being placed upon decision of CESTAT in the matter concerning EPDM. Domestic industry submits that physical and chemical characteristics of Nylon 6 and 66 are same or similar.

6. The Authority has considered the views of the various interested parties. In its examination, the Authority considers that different types of NFY are produced from the same production technology, manufacturing process, raw materials, plant & equipment and perform the same general purpose. There is a great amount of substitutability between different types of NFY. Even though the product has been grouped in discrete types according to denier, filaments, luster, color, orientation etc., these

specific characteristics merely differentiate various types of NFY. However, different types contains the same basic characteristics of NFY. With regards to inclusion of Nylon 66 as a foreign like product and under the purview of the product under consideration, it is noted that both Nylon 6 and Nylon 66 have essentially the same or similar physical and chemical characteristics and both nylon 6 and 66 are "polyamides" and are manufactured as continuous filament. Further, essentially, all polyamides are melt spun and to such an extent, the manufacturing process and technology for nylon 6 and nylon 66 should be treated as the same. With regards to the functions and uses, at best, it can be said that nylon 66 has some additional end applications. However, existence of some additional end applications cannot render two products as dislike. With regards to the customs classification, it could be said that both nylon 6 and 66 have been classified under the same classification as "Synthetic Filament Yarn of Nylon". After detailed examination, the Authority concludes that the product under consideration in the present investigation is Synthetic Filament Yarn of Nylon also known as Polyamide Yarns (also described as Nylon Filament Yarn and also referred to as subject goods). Nylon Filament Yarn is a synthetic filament yarn produced by polymerization of organic monomers. The product under consideration includes all kinds of synthetic filament yarns of Nylon or Polyamides, other than sewing thread, such as flat yarn - twisted and/or untwisted, fully drawn yarn (FDY), spin drawn yarn (SDY), fully oriented yarn (FOY), high oriented yarn (HOY), partially oriented yarn (POY), textured yarn - twisted and/or untwisted, and dyed yarn, single, double, multiple, folded or cabled, classifiable within Chapter 54 under customs subheading no. 5402, but excludes high tenacity yarn of nylon or other polyamides. The product includes all variants of Nylon Filament Yarn or Polyamide Yarns such as flat/textured/ twisted/ untwisted, bright/semi-dull/ full-dull (or variants thereof), Grey/ colored/ dyed (or variants thereof), single/ double/ multiple/ folded/ cabled (or variants thereof), whether or not sized, but excludes high tenacity yarn of nylon classifiable under customs sub-heading 5402.10. The Authority considers it appropriate to exclude fishnet yarn, classifiable under customs classification no. 5402.10 beyond the scope of the subject goods, as they are high tenacity yarns. Accordingly, all types of high tenacity nylon filament yarn, classifiable under customs classification no. 5402.10 are beyond the scope of present investigations. The Customs classification, however, is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation. With regard to the claim of the association (FIASWI) that some type of yarns are not produced in India, the Authority notes that all yarns of high tenacity as such are beyond the scope of the product under consideration. It was argued that the some of the product types are not produced in India and must be excluded from the scope of the product under consideration. Some of the product types cited in this regard included Nylon flame retardant yarn, air texturised yarn etc. The matter was examined and it was noted that JCT website [www.jctsfed.com](http://www.jctsfed.com) reads

on front page that they are manufacturing Flame Retardant Yarns. It was also noted that UV stabilized yarn can be easily produced by any of the manufacturer by simply adding UV stabilizer in production. Further, these yarns are offered by M/s century Enka. It was also noted that air textured yarn are just another way of texturising and it was informed that that even JCT is not able to fully utilize the texturising due to poor demand. Therefore, the Authority does not exclude any of these types from the purview of the product under consideration.

7. Nylon filament yarn has vast applications in textiles applications, which includes saree, dupatta, women's dress material / fashion wear, fancy causal knit wear, stockings and stocks, intimate wear and foundation wear, lingerie and night wear, briefs, panties, slips, kids wear, sports wear and active wear, swim wear and beach wear, outer wear, wind wear, fashion accessories, elastic tapes, show/footwear linings, laces/fancy tapes, tie/scarves, feather yarn, ribbons/satin ribbons, etc. With regards to the observations made by some of the interested parties not to take into account of Nylon filament Yarn made from Nylon 66 because of its allegedly different characteristics, the Authority has considered all relevant information made available by interested parties with regard to whether or not nylon 6 and nylon 66 are one like products and notes that nylon 66 has been rightly included within the scope of product under consideration. The Authority holds nylon 6 and 66 as one like product, considering parameters such as physical and chemical properties, technology, manufacturing process, raw materials, functions and uses, tariff classifications etc. Nylon 66 is therefore, considered within the scope of present investigations.

C. Like Article.

8. The petitioners have claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. There is no significant difference in the subject goods produced by the petitioners and those exported from subject countries. The domestic industry submits that subject goods produced in India and subject goods originating in or exported from subject countries are like articles. It has been submitted by various interested parties opposing the application that Nylon 6 manufactured by the domestic industry are not domestic like product to the Nylon 66 manufactured and exported from the subject countries to India because of the different physical, chemical features and uses as described above. It has also been submitted that domestic industry does not manufacture the Nylon 66 and hence, the NFY manufactured and sold by the domestic industry is not domestic like product to the Nylon 66

produced and exported from subject countries. Also, it has been submitted that like product examination should be based on the product denier, luster, color, orientation etc. On other hand, the domestic industry has contended that there is no significant difference in the subject goods produced by the Indian industry in general and domestic industry in particular and those exported from subject countries. The Authority has examined all the submissions made by various interested parties and considers that rule 2 (d) specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been examined. It has been found that subject goods produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those imported from subject countries and to those sold in the market of exporting countries. Therefore, the two are like articles in accordance to the Rules. It is also noted that different types of NFY are produced from the same production technology, manufacturing process, raw materials, plant & equipment and perform the same general purpose. There is a great amount of substitutability between different types of NFY. Even though the product can be grouped in discrete types according to denier, filaments, luster, color, orientation etc., these specific characteristics merely differentiate various types of NFY. However, different types contain the same basic characteristics of NFY. Opposing interested parties have claimed that certain types of yarns are not produced in India. In this regard, after examination, it is noted that domestic Industry is required to produce like article in the absence of identical article, which is being exported from subject countries. After detailed examination, it is noted that subject goods produced and sold by the domestic industry in the domestic market are like product to the subject goods produced and sold to India from subject countries.

#### D. Domestic Industry

9. The application has been jointly filed by M/s. Modipon Limited, Modinagar, JCT Limited, Hoshiarpur, Shree Synthetics Limited, Ujjain and Gujarat State Fertilizers Company Limited, Vadodara. These producers have provided information relevant to the present investigations and have consented to participate in the proposed investigations.

10. It has been submitted by various interested parties opposing the application that the applicants takes domestic industry in keeping with the

requirements of Rule 2(b). It has also been submitted that the import of subject goods may and not shall exclude the importers/producer from the scope of domestic industry. The Authority, therefore, must first decide whether it will include or exclude producers that may also be importers from the scope of the domestic industry. Only after this examination/decision, standing of the applicants may be determined. It has also been claimed that there is no material in the public file to show that this exercise has been done for determination of standing of the domestic industry. It has also been submitted that the Authority may also seek, obtain and analyze the COP and performance data of Century Enka and Baroda Rayon with non confidential summaries both of such data and also the Authority's workings on the same and any difference between these companies respective performance in POI and the applicants performance. This will be required for both meaningful injury determination as well as for causal link determination.

11. On the other hand, the domestic industry has argued that the application has been jointly filed by M/s. Modipon Limited, Modinagar, JCT Limited, Hoshiarpur, Shree Synthetics Limited, Ujjain and Gujarat State Fertilizers Company Limited, Vadodara and these producers have provided information relevant to the present investigations and have consented to participate in the proposed investigations. The production of these applicant companies constitutes more than 50 % of total Indian production. In addition M/s Century Enka and M/s Baroda Rayon Corporation Ltd. are other producers of the subject goods/like article. M/s Century Enka has supported the present application. Production of the four petitioner companies constitute a major proportion in Indian production;

12. The Authority has examined the contention of various interested parties and after examination, it is noted that the application has been filed by M/s. Modipon Limited, Modinagar, JCT Limited, Hoshiarpur, Shree Synthetics Limited, Ujjain and Gujarat State Fertilizers Company Limited, Vadodara – jointly. These producers have provided all the information desired by the Designated Authority for the present investigations and offered verification of the information to the Designated Authority. It was argued by some of the interested parties that the non participation by Century Enka in the investigation is due to the fact that there is no injury to the company. Subsequently, the company (M/s Century Enka) has submitted the complete information relevant for the investigation, which has been verified by the Designated Authority. The production of these applicant companies including supporting company Century Enka constitutes more than 50 % of total Indian production. M/s Baroda Rayon Corporation Ltd. are other producers of the like article. The Authority has therefore, determined that (a) production of the four petitioner companies



constitute a major proportion in Indian production; (b) domestic producers expressly supporting the application account for more than 50 per cent of total production of the like product produced by the domestic industry; and (c) the application has been made by or on behalf of the domestic industry.

13. Thus, it is noted that the applicants constitute domestic Industry within the meaning of the rule 2(b) read with 2(d) and the application satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 of the Rules supra.

E. Dumping.

14. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)";

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

15. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). The following exporters from subject countries have responded to the Authority.

1. M/s Jinan Juda Fiber Co. Ltd (Jinan), China PR

2. Taekwang Industrial Co Ltd ( TKI), Korea RP
3. HYOSUNG Corporation (Hyosung), Korea RP
4. Hualon Corporation (Hualon), Malaysia
5. Suntex Fiber Co Ltd.(Suntex), Chinese Taipei
6. LIPENG Enterprise Co., Ltd (Lipeng), Chinese Taipei
7. Asia Fiber Public Company Ltd (Asia fiber), Thailand
8. Thai Taffeta Co., Ltd (Thai taffeta), Thailand

16. The applicants had identified denier, luster, filaments, category, Colour, cross section, packing and grade as different parameters of the subject goods. The exporters have also identified the some of above parameters in their responses. Additionally, some of the exporters have identified a few other parameters also. The Authority recalls that during the preliminary findings, it had considered denier, lustre category (Textured, Partially oriented yarn, Draw Twisted, Fully oriented yarn, Fully drawn yarn) as essential product parameters for the purpose of comparison between the normal value and export price, pending further investigations. This was done as none of the exporters had submitted the information in the form and manner of the exporters questionnaire by giving the information PCN wise in terms of denier, luster, filaments, grade, packing, types, categories, dyeing etc. Some of the exporters did submit detailed information with regards to large number of parameters after the initiation, these were not submitted in the format prescribed by the Authority and the Authority could not analyse the data and determine the dumping the dumping margin based on all the parameters. However, after the preliminary findings and subsequent verification, the cooperating exporters submitted the required information in the form and manner of the format prescribed by the Authority ( and which could be analysed by the Authority).

#### E (1) China PR

##### Normal value determination for China

17. China PR, one of the subject countries under present investigation in the present proceedings, is a Non-Market Economy Country and therefore their normal value has to be determined in accordance with the Para 7 and 8 of Annexure I of the Anti Dumping Rules.

##### Legal provisions in India

*Para 7 of Annexure I under the Rules, which has been inserted by notification no. 44/99– Cus (NT) dated 15<sup>th</sup> July, 1999. Para 7 of Annexure-I states as under:*

"7. In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin.

**Market Economy Treatment (MET)**

**"Para 8 of Annexure 1- Amended on 04.01.2002**

(1) The term "non market economy country" means any country which the Designated Authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph (3)

(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as a non-market economy country for the purpose of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three-year period preceding the investigation is a non-market economy country.

Provided, however, that a non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the Designated Authority that establishes that such country is not a non market economy country on the basis of criteria specified in sub-paragraph (3)

(3) The Designated Authority shall consider in each case the following criteria as to whether:

(a) the decision of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

(b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market

*economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;*

*(c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and*

*(d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate;*

*Provided, however, that where it is shown by sufficient evidence in writing on the basis of the criteria specified in this paragraph that market conditions prevail for one or more such firms subject to anti-dumping investigations, the Designated Authority may apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 instead of the principles set out in this paragraph.*

The Rules were further amended vide notification dated 10<sup>th</sup> March, 2003, which states as under:

- (4) *"Notwithstanding anything contained in sub-paragraph (2), the designated authority may treat such country as market economy country which, on basis of the latest detailed evaluation of relevant criteria, which includes the criteria specified in sub paragraph (3), has been, by publication of such evaluation in a public document, treated or determined to be treated as a market economy country for the purposes of anti-dumping investigations, by a country which is a Member of the "World Trade Organization"*

18. Except one exporter/producer from China, none of the exporters/producers have responded to the Questionnaire sent by the Authority. The applicants had proposed the USA as the appropriate surrogate country for the purpose of calculating normal value in China and had furnished some evidence with regard to price of the subject goods in USA during the period of Jan-Dec 2004. Following the initiation notification, China chamber of commerce for import and export of Textiles opposed the choice of USA as analogue country and requested instead to choose China PR or other Asian countries as they had many things in common. Further, none of the party except China chambers of commerce and industry from China or elsewhere has objected to selection of USA as the appropriate surrogate country nor has suggested any other appropriate country or has furnished any other reliable evidence for the purpose of calculation of Normal Value for China. It was also noted that no interested parties submitted any other comments as well as names of the producers/exporters in those analogue country who would be willing to submit the data to the

Designated Authority in spite of the letter sent to all interested parties in this respect. Thereafter, the Authority requested producers of subject goods in the USA who were made known in the application by domestic industry and asked them to submit the details regarding selling prices of the subject goods in their country and requested them to submit the required data to the Designated Authority. However, no producer in the chosen analogue country also submitted any response till date.

(a) Cooperation

19. One Chinese producer/exporter namely M/s Jinan Juda, has made themselves known during the process of investigation and they have responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to Questionnaire pertaining to market economy status and also various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. However, after the preliminary findings, they did not accept the Authority request for verification of the information submitted by them. Twice, the exporter informed the Authority that they would not be able to offer any verification of the information submitted by them. In view of that the Authority treats the exporter as non cooperative. It is noted that the said exporter did offer verification when the verification team had already verified or was in the process of verifying the information pertaining to exporters from other countries after reviving necessary approval from competent authority. However, the offer from the exporter was considered late by the Authority due to the time bound nature of the investigation and the revised late offer was not accepted by the Authority.

(b) Normal Value & Export Price:

20. With regards to the responses filed by M/s Jinan Juda, it is noted that the cooperating exporters have significant state share holding. Again, it is noted that no substantive evidences have been submitted in their responses along with the relevant facts with which they want to rebut the presumptions as mentioned in para 8 of annexure 1 of the Anti dumping rules and Non market Questionnaire sent to them with regards to grant of market economy status to their company. In view of the above fact, the Authority has constructed the normal value on the basis of para 7 of the Annexure 1 of the Anti dumping rules. With regards to their export prices, it was noted that their export prices very significantly with the prices mentioned in the official statistics even when their quantities

and dates of exports match with the exporters data. As there is a significant discrepancy in the import prices of the exporter and official statistics, the Authority for the purpose of the provisional findings did not take into account the exporters price for determination of dumping margin and price undercutting. Instead, the Authority took into account the price reported in the official statistics for the purpose of determination of dumping margin. After the detailed investigation (after getting the information from concerned customs ports in terms of volume and price where these imported subject goods have been assessed), it is noted that value of the subject goods exported by M/s Jinan juda varies significantly from unit values reported from and verified from the Customs port data where these goods landed and got assessed. In view of the above, the Authority has taken the unit prices of the subject goods of the cooperating exporter adjusted to the information received from the port data.

21. The Authority notes that petitioner had provided an evidence of price or constructed value in a market economy third country (USA in this investigation). While disputing the claim of the domestic industry to treat Chinese producers as non market economy, the Chinese producers, or importers or any other interested party made no substantiated claim nor advanced any substantiated evidence either with regard to price or constructed value in a market economy third country. There has been no response from the producers/exporters from USA either in response to the exporters questionnaire sent by the Authority. Under the circumstances, the Authority has determined that another option available is to determine normal value considering price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin. Price actually paid in India has not been considered for the reason that the same has been suppressed. Thus, the Authority has constructed the normal value by taking into account cost of production in India, duly adjusted, to reflect international raw material prices and optimum conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit. It was noted in the preliminary findings that as the investigation proceeds further, the Authority would continue to examine on the appropriateness of any market economy third country for the purpose of determination of normal value as per para 7 of Annexure 1 of the Anti dumping rules should information about their appropriateness along with the information about their price or constructed value is received by the authority. As no relevant information has been received, the Authority has determined the normal value for the responding exporter as cost of production in India, duly adjusted, to reflect international raw material prices and optimum conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit.

F (2) Other producers/exporters from China PR

22. None of the other producers/exporters after the initiation, has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to market economy questionnaire and various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. As no information has been received from any exporter/producer from other than M/s Jinan Juda from China PR, the Authority has constructed the normal value on the basis of facts available as mentioned in the para 7 of the Annexure 1 of the Anti dumping rules. In this regard, it is noted that no information has been provided to the Authority with regards to the price or constructed value in the market economy third country (analogue country being the USA in this case) or the price from such a third country to other countries. As no information as mentioned above has been received, the Authority has constructed the normal value on the basis of normal value considering cost of production in India, duly adjusted including selling, general and administrative overheads and reasonable profit. The export price has been determined based on the transaction wise data of imports culled out from information provided by official statistics for subject goods.

### E.3 Normal value in case of Market Economy Countries

#### Methodology for working out dumping margin for responding exporters

23. It was first determined that whether the total domestic sales of the subject goods with regard to their PCN (Product control nomenclature) by the producers/exporters in the subject country was representative when compared to their total sales of the subject goods ( for the same PCN) concerned sold in the exporting country. Thereafter, it was examined whether their sales (PCN wise) are under ordinary course of trade in terms of Rule 2 of the annexure I to the anti dumping rules. The exporters have provided transaction wise details of sales made in home market. The information has been relied upon to determine separate weighted average selling price for each type of NFY, considering denier, category, cross-section, dyeing, packing, grade and luster of the NFY sold in the home market. In case sales volume in the domestic market of a particular type of NFY is more than 5% of exports to India, the domestic price has been considered. In other cases, the cost of production determined by the Authority on the basis of the exporter data as per appendix 8 have been used to work out normal value, after adding reasonable profit margin. The cost of production claimed by the exporters have been admitted after suitable modification ( after preliminary findings and during the verification tour). It may be added that separate costs of manufacturing of the subject goods solely in terms of the grade were not accepted by the Authority and the exporter have since revised the information in terms of the

Appendix 8. Also, wherever, the separate cost of the production has not been submitted by the responding exporter, the Authority has used the costs of production of the nearest denier/grade/type/filament. The Authority worked out the profit margin of the profitable sales of the various PCN's and these have been added to the cost of the production of the those sales which were not made in the domestic market (corresponding to the sales made to India with regard to same PCN) to work out the constructed normal value for those corresponding PCN (to those exported to India) which were not sold in the domestic market.

24. The selling price of each PCN has been compared with the cost of production of same PCN. In cases where such prices were below cost of production PCN wise, then cost of production, with reasonable addition for profit (as mentioned above) has been considered for determination of normal value. Wherever such selling prices were above cost of production of corresponding PCN, such selling prices have been considered for determination of normal value.

25. For the determination of the ordinary course of trade test, the cost of production of the product concerned was examined with reference to the records maintained by the producer. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the cost of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Thus only the profitable transactions have been taken into consideration for the determination of normal value for the cooperating exporter where sales below costs exceed 20%. With regards to comments made by various interested parties post disclosure, it is clarified that product types not exported to India have not been included for determination of dumping margin. These have however been included for the purpose of determination of profits made by the company from the production and sales of the product under consideration in the domestic market. Further, the arguments by some of the interested parties to exclude PCN wherever their dumping margin is de minimus has not been accepted by the Authority as the Authority has determined one weighted average dumping margin for the product under consideration without zeroing.

#### Chinese Taipei

#### E. 4 M/s Suntex Fibers:

#### Normal value

26. During the provisional findings, the Authority had not accepted the cost of production data for the responding exporter as the required data was not in the format sent by the Authority to the exporter and also the fact that the data submitted by the exporter was incomplete. After the preliminary findings and during the verification, the exporter submitted the domestic sales data and cost of production of Nylon-66



also. The cost of production data was also revised accordingly. It is recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing). With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. Thereafter, 80-20 test was carried out to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Following this, the entire domestic sales for the given PCN was accepted for the purpose of domestic sales price wherever more than 80% sales by quantity were more than the cost of production of the same PCN. Wherever the profitable sales were between 10% and 80% of the total quantity sold, only the profitable sales and not the total sales quantity and prices were taken into account for working out the domestic sales price for the corresponding PCN. Wherever the cost of production for the PCNs were not given, the authority has adopted the cost of production of the nearest denier wise cost of production submitted by the responding exporter. Thus, the normal value is was determined PCN wise for the responding exporter.

#### EXPORT PRICE

27. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of adjustments like freight, insurance, warranty which were verified by the Authority. For the export sales to India, the authority verified the export sales in terms of various documents like shipping information, bill of lading, payment realization and invoices. The average PCN wise export sales to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and verified by the Authority), were compared to the average PCN wise domestic sales to determine the dumping margin. Wherever, the domestic sales price of the corresponding PCN exported to India were not available, the authority worked out the constructed normal value for these PCNs by taking into account the cost of production and a suitable profit margin. The profit margin was worked out by taking into account the profit of profitable sales transaction divided by total profitable sales transactions. These dumping margin for individual PCN were weighted averaged for determination of a single dumping margin for the responding exporter. After the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 8%.

#### E. 5 M/s Li Peng

##### Normal value

28. The Normal value has been determined as per methodology mentioned in the earlier paragraphs based on the domestic selling price of the subject goods of the exporter in the Chinese Taipei. It is

recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing). With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. Thereafter, 80-20 test was carried out to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Following this, the entire domestic sales for the given PCN was accepted for the purpose of domestic sales price wherever more than 80% sales by quantity were more than the cost of production of the same PCN. Wherever the profitable sales were between 10% and 80% of the total quantity sold, only the profitable sales and not the total sales quantity and prices were taken into account for working out the domestic sales price for the corresponding PCN. Wherever the cost of production for the PCNs were not given, the authority has adopted the cost of production of the nearest denier wise cost of production submitted by the responding exporter. Thus, the normal value was determined PCN wise for the responding exporter.

#### Export price

29. M/s Li Peng has exported \*\*\*\* Kg of subject goods at a price of \*\*\*\*NTD to India during the POI. These exports match the official statistics with regards to the Quantity and names of the importers along with the dates. However, The prices charged by them very a great deal and as against a price of NTD \*\*\*\* during the POI as per their appendix 2, the weighted average CIF price as price as per the official statistics is only NTD \*\*\*\*. Thus, there is a huge difference between price reported by the responding exporter and the price actually reported to Customs.

30. During the verification, the exporter confirmed that it had raised the commercial invoice for a lower amount as the balance amount was already paid by the importer through the TT payment. It was informed to the exporter that the export price recorded by the Indian customs pertain to the prices actually invoiced and shipped by the exporter to the Indian importer and hence, the only price evidenced by the commercial invoice and the payment realisation by L/C payment for the value given in the commercial invoice were taken into account for the purpose of determining the export price. The Adjustments on account of inland freight, commission, overseas freight, marine insurance, and other charges claimed by the exporter has been allowed after verifications. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of adjustments like freight, insurance, warranty. For the

export sales to India, the authority verified the export sales in terms of various documents like shipping information, bill of lading, payment realization and invoices. The average PCN wise export sales to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and verified by the Authority), were compared to the average PCN wise domestic sales to determine the dumping margin. Wherever, the domestic sales price of the corresponding PCN exported to India were not available, the authority worked out the constructed normal value for these PCNs by taking into account the cost of production and a suitable profit margin. The profit margin was worked out by taking into account the profit of profitable sales transaction divided by total profitable sales transactions. These dumping margin for individual PCN were weighted averaged for determination of a single dumping margin for the responding exporter. Post disclosure, the Authority has corrected the minor errors in the computation of dumping margin following comments made by the exporter. During the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 35.50%.

### South Korea

#### E.6 M/s Hyosung -Korea RP,

#### Normal value

31. The Normal value has been determined as per methodology mentioned in the earlier paragraphs based on the domestic selling price of the subject goods of the exporter in the Korea RP. During the provisional findings, the Authority had not accepted the cost of production data for the responding exporter as the required data was not in the format sent by the Authority to the exporter and also the fact that the data submitted by the exporter was incomplete. After the preliminary findings and during the verification, the Authority verified the domestic sales data with the records kept by the exporter. It is recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing. However, subsequent to the preliminary finding and during the verification, the exporter submitted the revised appendices in terms of the PCNs revised by the authority. With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. Thereafter, 80-20 test was carried out to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Following this, the entire domestic sales for the given PCN was accepted for the purpose of domestic sales price wherever more than 80% sales by quantity were more than the cost of production of the same PCN.

Wherever the profitable sales were between 10% and 80% of the total quantity sold, only the profitable sales and not the total sales quantity and prices were taken into account for working out the domestic sales price for the corresponding PCN. Wherever the cost of production for the PCNs were not given, the authority has adopted the cost of production of the nearest denier wise cost of production submitted by the responding exporter. Thus, the normal value was determined PCN wise for the responding exporter.

### Export price

32. It is recalled that the authority had accepted the export price of the responding exporter during the preliminary finding pending detailed examination and verification of the information by the authority. Subsequent to the preliminary findings, it was noted that the exporter has been exporting to India directly and also through various traders. For indirect exports, the exporter was raising the invoice on another trader who was allegedly and subsequently exporting to India. However, no evidence of any export price or payment by the importer or commission by the trader were submitted to the authority during the verification. During the filing of response, these traders had not submitted information to the authority in terms of the prices and customers in India. During the verification process, it was submitted that the subject goods had shipped directly to India, however, the exporters of the subject goods did not provide any information with regard to the prices and various adjustments in their export to Indian customers. Though M/s. Hyosung did provide some fax copies of the shipment made to India by these traders, it could not substantiate along with the evidence that these subject goods had been shipped to India at a given price. Thereafter, the authority has taken into account only direct exports made to Indian customers by M/s. Hyosung for working out the export price to India. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of adjustments like freight, insurance, warranty. For the export sales to India, the authority verified the export sales in terms of various documents like shipping information, bill of lading, payment realization and invoices. The average PCN wise export sales to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and verified by the Authority), were compared to the average PCN wise domestic sales to determine the dumping margin. Wherever, the domestic sales price of the corresponding PCN exported to India were not available, the authority worked out the constructed normal value for these PCNs by taking into account the cost of production and a suitable profit margin. The profit margin was worked out by taking into account the profit of profitable sales transaction divided by total profitable sales transactions. These dumping margin for

individual PCN were weighted averaged for determination of a single dumping margin for the responding exporter. During the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 47.47%.

#### E.7 M/s Taekwang (TKI) -Korea.

##### Normal value

33. Substantial sales in the domestic market have been claimed as that of non-prime material and the cost of production of non-prime grade was claimed substantially lower than that of prime product. However, the authority had not accepted the lower cost of production for the non-prime grade and has taken it same as that of prime grade. After the preliminary findings and during the verification, the Authority verified the domestic sales data with the records kept by the exporter. It is recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing. However, subsequent to the preliminary finding and during the verification, the exporter submitted the revised appendices in terms of the PCNs revised by the authority. With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. Thereafter, 80-20 test was carried out to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Following this, the entire domestic sales for the given PCN was accepted for the purpose of domestic sales price wherever more than 80% sales by quantity were more than the cost of production of the same PCN. Wherever the profitable sales were between 10% and 80% of the total quantity sold, only the profitable sales and not the total sales quantity and prices were taken into account for working out the domestic sales price for the corresponding PCN. Wherever the cost of production for the PCNs were not given, the authority has adopted the cost of production of the nearest denier wise cost of production submitted by the responding exporter. Thus, the normal value was determined PCN wise for the responding exporter.

##### Export Price

34. During the verification, the exporter confirmed that it had raised the commercial invoice for an amount which it received the payment through T-T and balance L/C payment. It was also submitted by the exporters that they have realised the full payments against the shipments made to India for the said invoice. However,

the information made available by the DGCIS (by correlating to the its customers tin India) revealed that importers have filed bills of entries for a lesser value for the same quantity thereby the landed price for the subject transactions was much less than claimed by the exporter. In fact, in a few cases, the transaction amount as per DGCIS data tallied with the amount paid through L/C by Indian importers. During the verification process, it was informed to the exporter that the export price recorded by the Indian customs pertain to the prices actually invoiced and shipped by the exporter to the Indian importer and hence, the only price evidenced by the commercial invoice and the payment realisation by L/C payment or payment made by Indian importer for the value given in the commercial invoice were taken into account for the purpose of determining the export price. For this purpose, the Authority has taken into account the export price as claimed by the exporter adjusted to the price reported in the DGCIS/port data for given transactions wherever, it showed a divergence. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of inland freight, insurance, credit costs, duty drawback etc which were verified by the Authority. For the export sales to India, the authority verified the export sales in terms of various documents like shipping information, bill of lading, payment realization and invoices. The average PCN wise export sales to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and verified by the Authority), were compared to the average PCN wise domestic sales to determine the dumping margin. Wherever, the domestic sales price of the corresponding PCN exported to India were not available, the authority worked out the constructed normal value for these PCNs by taking into account the cost of production and a suitable profit margin. The profit margin was worked out by taking into account the profit of profitable sales transaction divided by total profitable sales prices. These dumping margin for individual PCN were weighted averaged for determination of a single dumping margin for the responding exporter. During the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 49.9%.

#### Malaysia

##### E.8 M/s Hualon Corporation

#### Normal value

35. During the preliminary findings, it was noted that the exporter had not provided separate cost of production for different deniers and other parameters PCN wise. However, subsequent to the preliminary findings and during verification, the responding exporter submitted the required information in the form and manner of the exporters questionnaire letter and PCN wise. After the preliminary findings and

during the verification, the Authority verified the domestic sales data with the records kept by the exporter. It is recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing. However, subsequent to the preliminary finding and during the verification, the exporter submitted the revised appendices in terms of the PCNs revised by the authority. With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. Thereafter, 80-20 test was carried out to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Following this, the entire domestic sales for the given PCN was accepted for the purpose of domestic sales price wherever more than 80% sales by quantity were more than the cost of production of the same PCN. Wherever the profitable sales were between 10% and 80% of the total quantity sold, only the profitable sales and not the total sales quantity and prices were taken into account for working out the domestic sales price for the corresponding PCN. Thus, the normal value was determined PCN wise for the responding exporter.

#### Export Price

36. It is recalled that the authority had accepted the export price of the responding exporter during the preliminary finding pending detailed examination and verification of the information by the authority. Subsequent to the preliminary findings, it was noted that the exporter has been exporting to India directly and also through various traders. For indirect exports, the exporter was raising the invoice on another trader who was allegedly and subsequently exporting to India. However, no evidence of any export price or payment by the importer or commission by the trader were submitted to the authority during the verification. During the filing of response, these traders had not submitted information to the authority in terms of the prices and customers in India. During the verification process, it was submitted that the subject goods had shipped directly to India, however, the exporters of the subject goods did not provide any information with regard to the prices and various adjustments in their export to Indian customers. M/s Hualon could not substantiate along with the evidence that these subject goods had been shipped to India at a given price. Thereafter, the authority has taken into account only direct exports made to Indian customers by M/s. Hualon for working out the export price to India. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of adjustments like freight, insurance, warranty. For the export sales to India, the authority verified the export sales in terms of various documents

like shipping information, bill of lading, payment realization and invoices. The average PCN wise export sales to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and verified by the Authority), were compared to the average PCN wise domestic sales to determine the dumping margin. Wherever, the domestic sales price of the corresponding PCN exported to India were not available, the authority worked out the constructed normal value for these PCNs by taking into account the cost of production and a suitable profit margin. The profit margin was worked out by taking into account the profit of profitable sales transaction divided by total profitable sales prices. These dumping margin for individual PCN were weighted averaged for determination of a single dumping margin for the responding exporter. During the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 3.9%.

### Thailand

#### E.9 M/s Thai Taffeta:

37. During the preliminary findings, it was noted that exporter had not submitted the complete information with regards to various appendices of the exporters questionnaire and therefore. During the preliminary findings, it was also noted that the exporter had not provided separate cost of production for different deniers and other parameters PCN wise in the prescribed format. However, subsequent to the preliminary findings and during verification, the responding exporter submitted the required information in the form and manner of the exporters questionnaire letter and PCN wise. After the preliminary findings and during the verification, the Authority verified the domestic sales data with the records kept by the exporter. It is recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing. However, subsequent to the preliminary finding and during the verification, the exporter submitted the revised appendices in terms of the PCNs revised by the authority. With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. Thereafter, 80-20 test was carried out to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Following this, the entire domestic sales for the given PCN was accepted for the purpose of domestic sales price wherever more than 80% sales by quantity were more than the cost of



production of the same PCN. Wherever the profitable sales were between 10% and 80% of the total quantity sold, only the profitable sales and not the total sales quantity and prices were taken into account for working out the domestic sales price for the corresponding PCN. Thus, the normal value was determined PCN wise for the responding exporter.

### Export price

38. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of freight, insurance, credit costs, customs clearances, packings etc., which have been verified. During the verification, the exporter confirmed that it had raised the commercial invoice for an amount which it received the payment through T-T and balance L/C payment. It was also submitted by the exporters that they have realised the full payments against the shipments made to India for the said invoice. However, the information made available by the DGCIS (by correlating to the its customers in India), revealed that importers have filed bills of entries for a lesser value for the same quantity thereby the landed price for the subject transactions was much less than claimed by the exporter. In fact, in a few cases, the transaction amount as per DGCIS data tallied with the amount paid through L/C by Indian importers. During the verification process, it was informed to the exporter that the export price recorded by the Indian customs pertain to the prices actually invoiced and shipped by the exporter to the Indian importer and hence, the only price evidenced by the commercial invoice and the payment realisation by L/C payment or payment made by Indian importer for the value given in the commercial invoice were taken into account for the purpose of determining the export price. For this purpose, the Authority has taken into account the export price as claimed by the exporter adjusted to the price reported in the DGCIS/port data for given transactions wherever, it showed a divergence. The Adjustments on account of inland freight, commission, overseas freight, marine insurance, and other charges claimed by the exporter has been allowed after verifications. Separate weighted average export price to India has been determined for each type of NFY, as explained above. Price adjustments have been claimed on account of adjustments like freight, insurance, warranty. For the export sales to India, the authority verified the export sales in terms of various documents like shipping information, bill of lading, payment realization and invoices. The average PCN wise export sales to

India (net of all the adjustments claimed by the exporter and verified by the Authority), were compared to the average PCN wise domestic sales to determine the dumping margin. Wherever, the domestic sales price of the corresponding PCN exported to India were not available, the authority worked out the constructed normal value for these PCNs by taking into account the cost of production and a suitable profit margin. The profit margin was worked out by taking into account the profit of profitable sales transaction divided by total profitable sales price. These dumping margin for individual PCN were weighted averaged for determination of a single dumping margin for the responding exporter. During the analysis of the exporter's data, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 25.74%.

#### E.10 M/s Asia Fibre

##### Normal value

39. With regard to the determination of normal value, during preliminary findings, it was noted that the exporter had given the costing of only one product which is exported to India and also sold in the domestic market. However, subsequent to the preliminary findings and during verification, the responding exporter submitted the required information in the form and manner of the exporters questionnaire letter and PCN wise. After the preliminary findings and during the verification, the Authority verified the domestic sales data with the records kept by the exporter. It is recalled that the Authority had taken into account only three parameters for the purpose of dumping margin determinations for all the exporters as the exporters had not submitted the entire information for the product control number (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing. However, subsequent to the preliminary finding and during the verification, the exporter submitted the revised appendices in terms of the PCNs revised by the authority. With the revised data, the sufficiency test was done PCN wise to determine whether the domestic sales were in sufficient quantity as compared to export sales to India for the corresponding PCN. The said transaction was more in sufficient quantity. Thereafter, the normal value was worked out by taking into account the domestic sales price of the same PCN sold in the domestic market which was exporter to India.

##### Export Price

40. M/s. Asia Fibre has exported 9504 Kg quantity of India with a gross sales price per kg at the CIF level of US \$ 1.85/kg. For the purpose of final finding and after verification in this matter, the adjustment claim by the responding exporter on account of packing, inland freight, overseas freight, overseas insurance and shipping charges have been allowed as claimed. After the analysis of the exporter's data, the dumping margin is proposed to work out as US\$ \*\*\*\* or 31%.

Indonesia

41. As there was no cooperation from any of the producers/exporters from Indonesia, the normal value has been constructed using the best facts available. The weighted average export price has been determined by taking the IBIS data. After examination, the dumping margin is worked out as US\$ \*\*\*\* or 118%.

(c) Comparison and Dumping Margin

42. For the purpose of a fair comparison between the normal value or (constructed normal value) as mentioned in the relevant paragraphs and export price at an ex factory level, due allowance in the form of adjustments was made for differences which affect prices and price comparability subject to their being verified after the provisional determination. For other producers and exporters from subject countries who have not responded to the initiation notification and those who have not submitted their exporters questionnaire, Normal value has been determined as per the facts available while the export price has been determined as per the price available in the official statistics. The Authority has worked out a Dumping margin for each of the different PCN (PCN or Product Description taking into account the denier, the filament, the cross section, the lustre, the grades, the colour and packing by making a comparison between the normal values and export price of the different PCN at ex factory level. This comparison was based on the weighted average selling price of each PCN of the subject goods manufactured by the producers/exporters and exported to India during the POI for which a comparable type of the subject goods could be found. Thus, weighted average overall dumping margin was determined by computing the dumping found on each type without zeroing negative dumping found on individual types. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporters during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined.

Country	Producers/Exporters	DM US \$	DM%
China PR	M/s Jinan Juda Fiber Co. Ltd	****	83
	Others	****	83
Korea RP	Taekwang Industrial Co Ltd	****	49.9
	HYOSUNG Corporation	****	47.47
	Others	****	74
Malaysia	Hualon Corporation	****	3.9
	Others	****	53.7
Chinese Taipei	Suntex Fiber Co Ltd.	****	8
	Lipeng Enterprise Co., Ltd	****	35.5
	Others	****	68
Thailand	Asia Fiber Public Company Ltd	****	31
	Thai Taffeta Co., Ltd	****	25.74
	Others	****	59.45
Indonesia	All producers/exporters	****	118

## F. INJURY AND CAUSAL LINK

### METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

#### F.1 VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS, USERS ETC

43. There is no injury to the domestic industry, injury if any, is not due to alleged dumping. The inter-se pricing and cost of the domestic producers has to be analyzed in order to determine whether some producers are making profit, whereas others are making losses and combined effect shows a loss to the domestic producers. It has also been submitted that there is neither volume injury nor price injury. Though dumping is denied, however, begs the question that if there was prior dumping for years how did the injury occur only during the POI, which indicates further that injury during the POI is attributable to causes other than dumping. Increased production of domestic industry shows attractiveness of the business of the domestic industry. It has also been submitted that the demand as also sales, imports increased. Since Century Enka have supported and Baroda Rayon have not opposed, the volume effect need be taken considering data of industry as a whole. Increase in sales of domestic industry shows absence of any adverse volume effect. The increase in sales, imports etc is with the increase in demand of product concern. Sales of other domestic producers has grown more substantially than domestic industry, prima facie, factors other than alleged dumping have inhibited the ability of the applicant to increase sales commensurate with the increase by the other producers. It has also been added that applicants were unable to meet the increased demand of product in India, resultantly consumers were forced to import. The change in imports volumes and prices alleged during the POI was less than the sudden alleged deterioration in the applicants employment levels. Applicants have admitted productivity gains. Authority may treat the allegation of the applicants with great circumspection and look at labour problems and compare performance of other domestic producers. Overall employment at all domestic producers, importers, and users have likely to have risen. There is no price undercutting, which is evident from the fact that the applicants net sales realization rose even though the landed price of imports from subject countries allegedly declined. The NSR of nearly Rs. 17/- has been virtually admitted by the Applicants and has not been denied. It has also been submitted that inventories have declined. Since other domestic producers have increased production, utilization and sales more substantially, the Applicants allegation may be treated as utmost circumspection. Domestic sales of Applicants and other domestic producers have also grown substantially as has imported from other countries allegedly much higher prices. Hence price is not seen as the main factor. There was no price undercutting. There is no causal link,

rather there is admission by the applicants for injury in POI and improvement in performance during POI. Volume of imports from other countries has higher growth than sales growth of applicants and cumulatively exceeds the cumulatively threshold to avoid de-minimus exclusion. Imports price from some of the other countries are in the range from the subject countries during POI. In any case imports prices including from subject countries risen substantially during POI. The Authority have evaluated injury of the domestic industry based on selective data/information with regard to the injury parameters, which is inconsistent and is in contradiction with the actual performance of the petitioner companies with regard to the NFY segment, as reported in the annual report of the respective companies. The primary source of compiling information for this purpose is financial records of the respective companies. Therefore contradiction in the performance and annual reports is not justified. Analysis of the Designated Authority regarding capacity utilization is in contrast with the depicted by the JCT and Modipon in annual reports. Authority should reexamine the same. PBT situation of the domestic industry as per Designated Authority is in contrast with the annual report of JCT and Modipon. It is admitted fact that there is no ideal capacity with the applicants and they are not able to meet the demand of product in India. It has been submitted that there has been no pressure upon prices of the domestic industry as prices has been increasing all along during the POI.

## F.2 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

44. It has been submitted that Annexure II prescribes for volume injury or price injury or both. It has been added that the domestic industry has faced both volume and price injury. Imports have increased from just 4000 MT to 16000 MT, resultantly domestic industry have lost sales and market share. Demand of product have shown significant positive growth in India, however, the domestic industry has not been able to maintain its market share. Increase in demand and lower increase in sales of the domestic industry resulted into loss of production by the domestic industry. Domestic industry has added its capacity, which was in anticipation of demand increase. Demand increased more than increase in capacity; however, due to availability of dumped subject goods in the market, domestic industry has not been able to utilize its capacity to fullest extent. It has also been submitted that earlier, while volume of dumped imports was lower and price was relatively higher (in relation to raw material price), constituents of domestic industry has been able to achieve higher production. However with the increase in demand, imports increased more than increase in demand i.e. also a dumped prices, resultantly, capacity utilization of the domestic industry declined. Production of constituents of the domestic industry in the optimum utilization would have been 36785

MT, therefore, the domestic industry have lost significant volume due to sharp increase in dumped imports in India. Sharp increase in dumped imports at a price, which do not permit recovery of even raw material cost resulted into severe price injury to the domestic industry. It has also been argued that the demand of the product in the country shows positive growth and increased by 75% in the injury period. Though, sales of the domestic industry increased by 30%, however, increase in sales is significantly below the increase in demand of the product in the country, resulting into decline in market share of domestic industry from 63.47% to 47.86%. Further, Imports have captured significant market share, market share of imports increased from 12.49% to 28.02%. Export price of the product since last four years remained more or less stable (in-fact declined when compared to raw material prices) despite the fact that the raw material prices have increase by 49%. Increase in raw material prices, should have resulted into increase in export prices but, there is no proportionate increase in export price, which resulted into increase in imports from just 4078 MT in base year to more than 15900 MT in period of investigation showing 290% increase. The fact of Caprolactam prices is more relevant for examination of dumping. One of the constituents of the domestic industry M/s. Gujarat State Fertilizers Company Limited is a producer of Caprolactam and have exported Caprolactam to subject country(ies). The price at which Caprolactam has been exported to subject country(ies) is even higher than price at which subject goods is being exported from these countries to India, which shows that the exporters are not even recovering their raw material cost. It is seen that the sales volume of the domestic industry increased. At the same time, there is a continuous increase in demand of subject goods in India. While the increase in sales is reflective of a new production line being shifted from PFY to NFY within the Country, which was well expected by the industry and industry has shifted its PFY capacity to NFY, however, the industry has not been able to get benefit of this increased demand as significant market share has been captured by the dumped imports. Domestic industry have also lost significant market share. It has also been argued that the performance of the domestic industry which has been improving till 2003-04 deteriorated again in period of investigation, which is directly due to severe increase in imports in India.

45. Domestic industry has made losses in base year, which could be due to storm/flood in Gujarat, which is one of the major consumption area for product under consideration. Subsequently, domestic industry has been improving itself from such effect. However, imports from subject countries started significantly at dumped prices, resulted into severe losses to the domestic industry in period of investigation. Productivity of the domestic industry, has been increasing, however increased productivity did not help the domestic industry in terms of profits as profitability which was improving again deteriorated in period of investigation due to sharp increase in imports at dumped prices. Return on investments (profit

before interest) shows the same trend as that of profits Capacity, Production and Capacity Utilization. Landed value of imported product from each of the subject countries was significantly lower than net sales realization of the domestic industry, causing severe price undercutting in the Indian market. The domestic industry has not been able to increase its price in line with the increase in raw material cost, which is due to the fact that dumped impost from subject countries have increased significantly. Dumping Margin from each of the subject countries is significant. Domestic industry has been forced to restrict its production and reduce its prices, therefore, losses of the domestic industry, after reduction increased in period of investigation. Employment level of the domestic industry remained more or less constant. Wages of the domestic industry in absolute term have increased. At the same time, production of the domestic industry has increased which resulted into reduction of wages per unit of production. The Designated Authority is required to determine injury to "domestic industry" and not "Indian industry". The Designated Authority has verified information filed by the petitioner companies. Further, practicing cost accountants have also certified these information.

46. There are argument of opposing interested parties that selling price of the domestic Industry disclosed in the preliminary finding is very near to non injurious price of the domestic Industry and NIP. It is submitted by the domestic industry that the data submitted by the domestic industry have been verified to the extent desired. Domestic Industry has provided all necessary information for the purpose of the injury analysis including profits. The information clearly shows that the domestic Industry have made losses. Regarding little difference in NIP and selling price, domestic Industry submits that the NIP determined by the Designated Authority is on lower side and require reconsideration. NIP of the domestic Industry need be revised upward. Regarding profits being made by Century Enka, domestic industry submits that the allegation made by the opposing interested parties is wrong as Century Enka has at best made a sub optimal profit in thee relevant period. The company since then has provided relevant information to the Authority in this regard. Domestic industry has furnished Imports of NFY from all sources. It may be seen that imports from other than subject countries are either negligible or the export price is higher. Petitioner has examined imports from all sources in detail, which shows that material is being exported from other countries also. However, volume is de-minimus. It can not, therefore, be said that the imports from other countries have also caused injury to the domestic industry. Demand of the product under consideration shows significant positive trend. Possible decline in the demand has not, therefore, caused material injury to the domestic industry. With regards to the technology, it is submitted that the technology adopted by domestic industry is

comparable to the technology adopted by other players' world-over. There is no significant difference in the manufacturing process. In fact technology for production is fairly matured, established and standardized, with little technological innovations and developments. There are no other factors for this injury but for the dumping.

#### Examination by the Authority

47. A number of interested parties have argued that the quality of the product under consideration plays an important role in determination of dumping & injury. The Authority considers that this quality claim is nothing but gradation of the product into various categories, which is done after the goods are produced. The product properties remains essentially remains the same and the products with different qualities are employed for similar functions & uses. There is no dispute that the associated cost of production of products with different qualities remains the same. In fact, quality is a matter of pricing and varies from company to company. As regards dumping, as stated earlier, the Authority has considered prices in the domestic market in respect of product of the same quality. However, in those situations where product of the same quality is not available, the Authority is required to consider another product with most closely resembling product characteristics. Therefore, the Authority is required to consider prices of another product with difference in quality. As regards the difference in quality, the exporters could have claimed a quantified price adjustments, which has not been done. It would not be appropriate to consider cost of production in these cases, as cost of production can be considered only when price of like article in the domestic market is not available. Accordingly, the Authority has considered prices of most comparable quality product and made allowance for the difference in quality on the basis of best information available in the absence of any claim from the exporters.

48. As regards injury determination, the Authority considers that the Rules require determination of injury to the domestic industry producing like article. There is no dispute that the imported product and domestic products with the sole difference in quality are like articles. At best, the comparison could have been done after making allowance for the difference in quality on the basis of quantified claim. It has been argued that the injury to the domestic industry should be determined separately for different product types. The Authority however notes that the Rules require determination of injury to the domestic industry. Domestic industry has been defined as producers as a whole (or a major proportion thereof) engaged in production of like article. Further, like article has been defined as a product which is identical or most closely resembling to the imported product. Considering these various



provisions, the Authority holds that injury to the domestic industry is required to be determined in terms of "like article as a whole" and not in terms of various types forming part of the like article.

49. Annexure II to the Anti dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

50. The Designated Authority in accordance to the Rules, have examined various economic parameters and indices as discussed hereunder:

Annexure II (iv) to the Rules states as under:-

- (iv) *the effect of the dumped imports shall be assessed in relation to the domestic production of the like article when available data permit the separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effects of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which the necessary information can be provided.*

51. Injury information has been provided by the domestic industry in respect of like article to the extent feasible and separately available. However, in case a particular information is not separately available in respect of the like article, because separate identification of that information is not feasible, information has been relied upon in respect of narrowest group/range of products, which includes the like article and for which the necessary information was available.

52. It is recalled that the Designated Authority had asked domestic industry to provide detailed injury information for objective examination of various factors of injury to the domestic industry. For

this purpose information for 2001-02, 2002-03, 2003-04 and period of investigation was sought by the Authority. During the examination and verification of the records and after onsite verification, it was noted that the domestic industry had been making losses in the first year of injury period. It was claimed that the losses in the first year was due to massive earthquake which had hit Gujarat, significantly disrupting the Surat market, which consumed about 65-70% of the product. In this regard, it was submitted that the directors report of the Shree Synthetics for the year 2000-01 mention that

*"The natural calamity i.e. devastating earthquake has disrupted the business in Gujarat, the major consuming state of the product of your company as strike resorted by weavers due to imposition of duty by Government has further bearing on the margins.*

53. Further, Directors Report for 2000-01 in case of M/s Modipon states that

- "(i) Surat, the largest market for Synthetic Filament Yarn, was adversely affected by strike / partial closure by Weavers and Fabric Traders on account of hike in power tariff as well as change in the Excise Duty structure on Fabric by bringing ad-volorem rates as against the compounded levy on chambers.*
- (ii) in view of major earthquake in Gujarat, the business activities in and around Surat were badly affected affected.....*
- (iii) In the Union Budget 2000-01, an anomaly was created in the import duty structure. The imports duty on NFY and PFY was lowered at 20%, whereas import duty on Caprolactum, DMT, PTA and MEG (Raw Materials) was fixed at 27.5%. Due to this anomaly in the import duty structure, substantial imports NFY and PFY were made during this period from Indonesia, Taiwan, China etc.*

54. It was thus claimed along with evidence that there were several factors responsible for the adverse performance of the domestic industry during the base year and the request was made that first year should be excluded from for examination of injury to the domestic industry. However, as a matter of consistent practice, the Designated Authority has not excluded the first year for examination of injury, however, merely because, domestic industry was facing injury in 2001-02 presumably due to other causes.

However, it is again reiterated that it is not the performance of the domestic industry during the POI vis a vis its performance in the base year that is material, rather, it is trend of the various indicators during the injury period and also during the POI that is important for concluding the injury to the domestic industry.

#### Import statistics

55. Some interested parties disputed consideration of IBIS data for determination of import volumes. A number of interested parties collected IBIS transaction wise import data made available by petitioners through public file. However, nothing of these parties made any submissions establishing that the determination of import volumes on this basis was inappropriate. Further, neither the responding consumer associations nor other interested parties brought any other evidence with regard to import volumes from the subject countries.

The Authority did not consider import volumes on the basis of DGCI&S data in the preliminary findings, as the IBIS evidence showed that the product was cleared in a very large number of customs classification, as listed below:- [from preliminary findings]

5402.39, 5402.59, 54020000, 54020200, 54020400, 54020900, 540210, 54021000, 54021001, 54021002, 54021003, 54021009, 54021010, 54021090, 54021100, 54021500, 54022000, 54022001, 54022010, 54022090, 54022400, 54022430, 54022900, 54023000, 54023001, 54023100, 54023200, 54023300, 54023900, 54023901, 54023909, 54023910, 54023920, 54023990, 54024000, 54024100, 54024101, 54024109, 54024200, 54024201, 54024210, 54024300, 54024900, 54024901, 54025100, 54025200, 54025400, 54025900, 54025901, 54025909, 54025910, 54025990, 54026000, 54026100, 54026200, 54026300, 54026900, 54026901, 54026901, 54026910, 54026920, 54026940, 54026950, 54026990, 54029000, 54029900

56. In view of arguments raised by the interested parties, the Authority further collected imports information from the DGCI&S for other customs classifications in which the imports were reported. The information submitted by DGCI&S showed full chapter entries of 54 chapter which run into more than 8800 transactions. However, after examination of the information, it was noted that many of the entries were blank or the product information is incomplete.

Therefore, it was not possible to cull out the information from DGCIS information.

Further, the Authority reviewed the entire import data provided by the IBIS to examine whether any imports of products other than product under consideration were included in that information. It was found that the imports transactions considered for cumulating imports indeed pertain to the product under consideration only. The Authority therefore concludes that it would not be inappropriate to rely upon IBIS information for determination of import volumes.

It is therefore considered more appropriate to base the Final findings on information compiled by secondary sources. The volume and price of imports of subject goods from subject countries as culled out from the secondary source data was kept in the public file for the information of all interested parties. With regards to arguments from the other interested parties about the inclusion of other products of chapter 54 in the imports statistics in their post disclosure statements, it is clarified that the Authority has considered imports of NFY as defined in the product under consideration only for the purpose of injury assessment. Imports of other products have been segregated and not included in volume of import from subject countries.

#### Cumulative assessment

57. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules provide that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:

- (a) the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
- (b) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

The Authority finds that

- i) the margins of dumping from each of the subject country are more than 2% (de-minimus) as may be seen from the earlier paragraphs;
- ii) the volume of imports from each of the subject countries is more than 3%;
- iii) The Domestic industry produces various deniers of product under consideration and the same deniers are also being produced by producers in subject countries also. The product manufactured by the producers from the subject countries inter-se and in comparison to the product manufactured by domestic industry has comparable properties. Thus, subject goods supplied by the domestic industry are like articles to the subject goods exported by various subject countries.
- iv) It is noted that imported products and domestic like products are being interchangeably used. Evidence of imports by various parties and correlation of the same with customer wise sales of the domestic industry makes it evident that there are a number of parties who have resorted to purchase from the domestic industry and imports from subject countries. It is further noted that subject goods exported by various countries compete in the same market;
- v) The subject goods supplied by various producers from different subject countries are being marketed in India during the same periods through comparable sales channels
- vi) Price undercutting is positive and significant in respect of subject countries.
- vii) The domestic producer and exporters in the subject countries are selling the product to the same category of consumers.

58. In view of the above, it is held that cumulative assessment of impact of imports on the domestic industry would be appropriate in the present case.

#### Assessment of demand

59. For the calculation of the Domestic consumption/demand of the product under consideration, the authority added the sales volume of the domestic industry and other Indian producers to the total imports into India. Domestic industry has determined import volume and value based on the data collected from secondary source i.e. International Business Information Services. Domestic industry has claimed that information provided by secondary source includes information of imports reported on very selected ports. It is further claimed that DGCI&S is the only agency in

India covering all ports. Designated Authority has requested DGCI&S to provide the said information on transaction to transaction basis, which was received by the Designated Authority. Designated Authority has examined the information and found that the information provided by the DGCI&S is not useful as it does not contain complete description of import transaction and in absence of which segregation of imports of subject goods and other goods is not possible. Therefore, Designated Authority has considered and therefore relied upon the data of the IBIS for the purpose of import statistics with regards to the quantity and price of the subject goods for the purpose of provisional findings further examination. A copy of the import data taken into account by the Authority is also kept in the public file for the benefit of all interested parties.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Sales of Domestic industry	25,996	29,687	30,922	35,138
Sales – Indexed	100.00	114.20	118.95	135.17
Sales of Other Indian Producers	2,000	2,000	2,000	2,000
Sales Captive	0	161	223	284
Imports – Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Imports – Subject Countries – Indexed	100.00	152.12	297.48	400.94
Imports – Other Countries	588	1,280	2,560	3,262
Demand	32,662	39,332	47,836	57,035
Demand – Indexed	100.00	120.42	146.46	174.62

From the above table, it may be concluded that the demand of the subject goods in the country shows positive growth and increased by 75% in the injury period.

#### Import volumes and market share

60. With regard to the volume of the dumped imports, it has been examined whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Annexure-II (ii) of the Anti-dumping rules provides as under :-

*“While examining the volume of dumped imports, the said authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India .....*”

61. After examination of the import data, it is noted that volume of dumped imports has increased in absolute terms from subject countries during the injury period. It is also noted that the volume of

imports shows sharply increasing trend. Further, the imports in relation to production and demand increased as is evident from the

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
<b>Imports</b>				
China	944	1,020	1,890	2,254
Indonesia	1,016	1,495	4,515	4,563
Malaysia	815	1,358	1,896	3,455
Thailand	323	908	805	1,370
Korea	712	924	2,080	3,060
Taiwan	267	498	945	1,648
Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Other Countries	588	1,280	2,560	3,262
<b>Total Imports</b>	<b>4,666</b>	<b>7,484</b>	<b>14,692</b>	<b>19,612</b>
<b>Market Share in Imports</b>				
China	20.24	13.64	12.86	12.91
Indonesia	21.78	19.98	30.73	21.91
Malaysia	17.47	18.15	12.91	17.21
Thailand	8.92	12.13	5.48	8.69
Korea	15.25	12.35	14.18	15.49
Taiwan	5.73	6.65	8.43	8.03
Subject Countries	87.39	82.89	82.57	82.24
Other Countries	12.61	17.11	17.43	17.78
<b>Demand</b>	<b>32,682</b>	<b>39,332</b>	<b>47,838</b>	<b>57,035</b>
<b>Market Share in Demand</b>				
China	2.89	2.59	3.95	3.95
Indonesia	3.11	3.80	9.44	8.00
Malaysia	2.50	3.45	3.98	6.06
Thailand	0.99	2.31	1.68	2.40
Korea	2.18	2.35	4.35	5.37
Taiwan	0.82	1.27	1.98	2.89
Subject Countries	12.49	15.77	25.38	28.67
Other Countries	1.80	3.25	5.35	5.72
Domestic industry	79.59	75.89	85.11	62.11
Indian Industry	85.71	80.97	69.29	65.61
<b>Production of Domestic industry</b>	<b>28,019</b>	<b>30,159</b>	<b>31,303</b>	<b>36,100</b>
<b>Imports in relation to production of domestic industry</b>				
China	3.83	3.38	8.04	6.24
Indonesia	3.91	4.98	14.42	12.64
Malaysia	3.13	4.50	6.06	9.57
Thailand	1.24	3.01	2.57	3.80
Korea	2.74	3.06	8.64	8.48
Taiwan	1.03	1.65	3.02	4.56
Subject Countries	15.67	20.57	38.75	45.29
Other Countries	2.26	4.24	8.18	9.04

table below.

62. It is thus noted that the Imports have increased in absolute term from just 4078 MT to 16350 MT and imports have increased in relation to demand of the product in the Country from 12.49% to 28.67% and imports have increased in relation to production of the product by the domestic industry from 19.46% of production to

58.42% in period of investigation. More over, while market share of the subject countries in demand have increased from just 12.49% to 28.67% that of the Indian industry has declined from 86% to 66%. In view of the above, it is concluded that the dumped imports from subject countries show adverse volume effect.

#### Price effect of imports

63.. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In order to assess the effect of imports on the domestic market an analysis of import prices over the injury period was made. It was noted that the exporters from subject countries have not increased their prices, due to increase in raw material price internationally. It is further noted that Nylon Filament Yarn is a petrochemical product and is produced from Nylon Chips, which is produced from Caprolactum and Caprolactam is produced from Benzene, which is another petrochemical product. Prices of Caprolactum have increased very significantly in the last two years. Increase in prices of Caprolactum is due to increase in Benzene prices, which is due to increase in crude oil prices. Increase in crude oil price is well known international phenomena. It therefore, does not appear likely that producers of subject countries have not got affected due to the increase in Caprolactum prices. Caprolactam prices over the years is given in the table below:-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Caprolactam Price	42.71	54.30	57.17	80.12
Indexed	100.00	127.14	133.86	187.59
Export Price				
China	72.55	86.85	82.43	82.79
Indonesia	61.02	70.97	82.78	77.71
Malaysia	132.57	107.91	105.78	101.26
Thailand	78.90	80.83	65.70	57.53
Korea	67.05	75.36	74.58	76.66
Taiwan	65.23	72.81	70.28	65.21
Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Indexed	100.00	103.94	102.56	99.38
Imports price as a % of Caprolactam Price				
China	169.86	159.94	144.18	103.34
Indonesia	142.87	130.71	144.80	96.99
Malaysia	310.40	198.73	185.03	126.39
Thailand	184.73	148.85	114.91	71.80
Korea	157.00	138.79	130.46	95.68
Taiwan	152.72	134.09	122.93	81.39
Subject Countries	189.04	154.54	144.85	100.15



Landed Price of Imports				
China	87.93	105.26	99.90	100.34
Indonesia	73.95	86.02	100.33	94.18
Malaysia	160.68	130.79	128.21	122.73
Thailand	95.62	97.96	79.62	69.72
Korea	81.27	91.34	90.40	92.91
Taiwan	79.05	88.25	85.18	79.03
Subject Countries	97.85	101.70	100.36	97.25

It is evident from the above that Caprolactum prices have increased significantly over the years, however, export price from subject countries have not increased with the increase in prices of Caprolactum in respect of their exports to India. Import prices as a % of Caprolactum price is also examined by the Designated Authority from which it was found that earlier, the export price was 89% higher than Caprolactam prices, declined significantly and became equal to caprolactam price in the period of investigation. Thus, there is a big fall in the effective realization of the exporters in respect of their exports to India. Further, decline in the CIF export price appears to have a direct adverse impact on the domestic industry and reduction in the landed price of import appears to have been responded by domestic industry by effecting price declines resulting in loss of market share. Net sales realization of Domestic Industry is considered as selling price, excluding of taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation. Entire sales volumes of the domestic industry have been included in the calculations. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges<sup>1</sup> and applicable basic customs duty.

64. A comparison for product concerned was made between the landed value of exported product and the average selling price of the domestic industry for domestic market net of all rebates and taxes for sales made to unrelated customers, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. The CIF prices of the subject country concerned were adjusted for post importation applicable duties. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in each of the subject countries were sold in the Indian market at prices which undercut the domestic industry's prices when expressed as a percentage of the domestic selling prices of the domestic industry as is evident from the table below.

65. It is seen that import prices (after including basic customs duties) has been significantly below the net sales realization of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting. It is evident from the above that the price effect of dumped imports on the domestic industry has been very significant and has adversely affected the domestic industry.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Export Price				
China	72.55	86.85	82.43	82.79
Indonesia	61.02	70.97	82.78	77.71
Malaysia	132.57	107.91	105.78	101.26
Thailand	78.90	80.83	65.70	57.53
Korea	67.05	75.36	74.58	76.66
Taiwan	65.23	72.81	70.28	65.21
Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Price				
China	87.93	105.26	99.9	101.89
Indonesia	73.95	86.02	100.33	94.67
Malaysia	160.68	130.79	128.21	121.86
Thailand	95.62	97.96	79.62	71.81
Korea	81.27	91.34	90.4	95.28
Taiwan	79.05	88.25	85.18	80.32
Subject Countries	97.85	101.7	100.36	98.35
Net Sales Realization of Domestic industry	****	****	****	****
Price undercutting				
China				60-70
Indonesia				65-75
Malaysia				40-50
Thailand				90-100
Korea				65-75
Taiwan				80-90
Subject Countries				60-70

#### Price Undercutting from responding exporters

Exporters name	CIF Price	Landed Price	Net Selling price Rs	Net selling price US\$	Price Undercutting	Price Undercutting %	Price Undercutting range %
M/s Jinan Juda, China PR	****	****	****	****	****	****	25-40%
M/sTKI, Korea RP	****	****	****	****	****	****	8-20%
M/s Hyosung, Korea RP	****	****	****	****	****	****	25-35%
M/s Suntex, Chinese taipei	****	****	****	****	****	****	10-20%
M/s Li Peng, Chinese taipei	****	****	****	****	****	****	15-26%
M/s Thai Taffeta, Thailand	****	****	****	****	****	****	10-20%
M/s Asia Fibers, Thailand	****	****	****	****	****	****	30-50%
M/s Hualon, Malaysia	****	****	****	****	****	****	15-25%

#### Price suppression

66. In addition to significant price undercutting, dumped imports have caused severe price suppression in the Indian market as is evident from the following table: -

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Net Sales Realization of the domestic industry	****	****	****	****
Year by year change	-	7.01	11.74	11.72
Export Price	80.74	83.91	82.81	80.24
Year by year change	-	3.18	(1.11)	(2.57)
Landed Value of imported material	97.85	101.70	100.36	98.35
Year by year change	-	3.85	(1.34)	(2.01)
Caprolactam Price	42.71	54.30	57.17	80.12
Indexed	100.00	127.14	133.86	187.59

54. It is noted that noted that Caprolactam is the critical factor for determination of cost of production of the product under consideration. Any movement in the price of Caprolacuum whether positive or negative make immediate impact to every producer worldover. Accordingly, with the change in Caprolactam prices, prices of product should also change with same ratio. However, this did not appear to have happened with the domestic industry as is evident from the above table. It may be seen that in 2002-03, Caprolactam price increase significantly over previous year, whereas prices of domestic industry increased by 5.28% in the same period. Similarly, in 2003-04, Caprolactam price again increase significantly over previous year, whereas prices of domestic industry increased by 8.10% in the same period and during the POI, Caprolactam price again increased significantly over previous year, whereas prices of domestic industry increased only by 7.93% in the same period. After the issuance of the disclosure statement, various interested parties have raised arguments that the authority should take international price of caprolactum into account while analysing the price effect and trends of the evolution of the import prices from subject countries. It has also been argued that prices of the caprolactum on a month wise basis should be adopted as its international prices vary a great deal. The matter has been examined and it is clarified that the Authority has not considered caprolactam price at/for one particular point of time. The Authority has considered weighted average price of caprolactam during POI for the purpose of analyzing evolution of import prices from subject country ( and price effect analysis) for the subject goods. However, for the purpose of the effect on the domestic industry, the Authority has taken into account price paid by the domestic industry during the period for the purpose of present findings as per its consistent practice. One of the interested party, M/s Hyosung argued that it has not caused price suppression. In this regard, the Authority notes that price suppression/depression is required to be determined cumulatively from the subject countries and not from individual countries.. It is

also pointed out that the price undercutting in respect of exports made by Hyosung was positive and significant. On the basis of the foregoing, it may be concluded that the domestic industry has not been able to increase its price in line with the increase in raw material cost, which is due to the fact that dumped imports from subject countries have increased significantly. On the basis of the above, it may be concluded that the dumped imports have caused price suppression in the Indian market.

Share of subject countries in Production:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Imports volume from various sources				
China	944	1,020	1,890	2,254
Indonesia	1,016	1,495	4,515	4,563
Malaysia	815	1,358	1,896	3,455
Thailand	323	908	805	1,370
Korea	712	924	2,080	3,060
Taiwan	267	498	945	1,648
Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Other Countries	588	1,280	2,560	3,262
Share of Various Sources				
China	20.24	13.64	12.86	12.91
Indonesia	21.78	19.98	30.73	21.91
Malaysia	17.47	18.15	12.91	17.21
Thailand	6.92	12.13	5.48	6.69
Korea	15.25	12.35	14.16	15.49
Taiwan	5.73	6.65	6.43	8.03
Subject Countries	87.39	82.89	82.57	82.24
Other Countries	12.61	17.11	17.43	17.76

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Imports volume from various sources				
China	944	1,020	1,890	2,254
Indonesia	1,016	1,495	4,515	4,563
Malaysia	815	1,358	1,896	3,455
Thailand	323	908	805	1,370
Korea	712	924	2,080	3,060
Taiwan	267	498	945	1,648
Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Other Countries	588	1,280	2,560	3,262
Production of Domestic industry	26,019	30,159	31,303	36,100
Imports in relation to production				
China	3.63	3.38	6.04	6.24
Indonesia	3.91	4.96	14.42	12.64
Malaysia	3.13	4.50	6.06	9.57
Thailand	1.24	3.01	2.57	3.80
Korea	2.74	3.06	6.64	8.48
Taiwan	1.03	1.65	3.02	4.56
Subject Countries	15.67	20.57	38.75	45.29
Other Countries	2.26	4.24	8.18	9.04

67. It is evident from the above, dumped imports from subject countries have increased in relation to production of the domestic industry.

Market share in Demand:

68. Over the period under consideration, the share of the dumped imports from the subject countries in relation to demand or consumption in India is given in the following table.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Imports volume from various sources				
China	944	1,020	1,890	2,254
Indonesia	1,016	1,495	4,515	4,563
Malaysia	815	1,358	1,896	3,455
Thailand	323	908	805	1,370
Korea	712	924	2,080	3,060
Taiwan	267	498	945	1,648
Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Other Countries	588	1,280	2,560	3,262
Demand / consumption in India	32,662	39,171	47,614	58,750
Share of Various Sources				
China	2.89	2.61	3.97	3.97
Indonesia	3.11	3.82	9.48	8.04
Malaysia	2.50	3.47	3.98	6.09
Thailand	0.99	2.32	1.69	2.41
Korea	2.18	2.36	4.37	5.39
Taiwan	0.82	1.27	1.99	2.90
Subject Countries	12.49	15.84	25.48	28.81
Other Countries	1.80	3.27	5.38	5.75

69. It is evident from the above, dumped imports from subject countries have captured significant market share in demand of product under consideration in India.

Evolution of Price over the period under consideration

70. In the injury period, average CIF prices of the imports originated in subject countries have been as under:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Average Export Price Rs/Kg				
China	72.55	86.85	82.43	82.79

Indexed	100.00	119.71	113.62	114.12
Indonesia	61.02	70.97	82.78	77.71
Indexed	100.00	116.32	135.67	127.35
Malaysia	132.57	107.91	105.78	101.26
Indexed	100.00	81.40	79.79	76.38
Thailand	78.90	80.83	65.70	57.53
Indexed	100.00	102.44	83.27	72.92
Korea	67.05	75.36	74.58	76.66
Indexed	100.00	112.39	111.23	114.33
Taiwan	65.23	72.81	70.28	65.21
Indexed	100.00	111.63	107.74	99.97
Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Indexed	100.00	103.94	102.56	99.38
Caprolactam Prices	42.71	54.30	57.17	80.12
Indexed	100.00	127.14	133.86	187.59
Export price as % of raw material price				
China	169.86	159.94	144.18	103.34
Indonesia	142.87	130.71	144.80	96.99
Malaysia	310.40	198.73	185.03	126.39
Thailand	184.73	148.85	114.91	71.80
Korea	157.00	138.79	130.46	95.68
Taiwan	152.72	134.09	122.93	81.39
Subject Countries	189.04	154.54	144.85	100.15

71. It is noted that the CIF export price from China, Indonesia, Malaysia, Thailand, Korea and Taiwan have declined in relation to the raw material prices. Export price from subject countries were 189 % of raw material prices in the base year declined to just 100% in period of investigation.

### SITUATION OF THE DOMESTIC INDUSTRY

#### Situation of the Domestic Industry

72. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production,

capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra. It is noted that application for imposition of anti dumping duty has been jointly filed by Modipon Fibers, JCT Limited, Gujarat State Fertilizers Company Limited and Shree Synthetics Limited. These producers account for major proportion of total Indian production. The application, therefore, satisfy the standing and petitioner constitutes domestic industry within the meaning of the Rules. The Designated Authority therefore, has examined injury to the domestic industry as prescribed under the Rule 11 of Rules.

### Sales Volume

73. Sales volume of the domestic industry has been as under:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Sales of Domestic industry MT	25,996	29,687	30,922	35,138
Indexed	100.00	114.20	118.95	135.17
Imports from Subject Countries MT	4,078	6,204	12,131	16,350
Indexed	100.00	152.12	297.48	400.94
Demand	32,662	39,332	47,836	57,035
Indexed	100.00	120.42	146.46	174.62
PBT Lakhs	****	****	****	****
Imports from subject countries	(100.00)	(44.33)	(14.61)	(41.93)
Market share of subject countries in demand	12.49	15.77	25.36	28.67
Market share of domestic industry in demand	79.59	75.89	65.11	62.11
Market share of Indian industry in demand	85.71	80.97	69.29	65.61

74. It is seen that the sales volume of the domestic industry has increased. At the same time, there is a continuous increase in demand of subject goods in India. The increase in sales could also be reflective of a new production line being shifted from PFY to NFY within the Country, and accordingly, the industry has shifted its PFY capacity to NFY. However, the domestic industry has not been able to get benefit of this increased demand as significant market share has been taken by the dumped imports from subject countries. It is also examined that whether lost market share is taken over by the dumped imports and it has been found that other Indian producers have also lost significant market share as is evident from following table:-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Market Share in Demand (%)				
Domestic Industry	79.59	75.89	65.11	62.11
Other Indian Producers	6.12	5.08	4.18	3.51
Indian Industry	85.71	80.97	69.29	65.61
Subject Countries	12.49	15.77	25.36	28.67
Other Countries	1.80	3.25	5.35	5.72

### Profits

75. Profitability position of the domestic industry has been as under:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Profit/Loss on Domestic sales	****	****	****	****
Indexed	-100	-44	-15	-42
Interest	****	****	****	****
Indexed	100	124	115	121
Profit/Loss on Domestic sales before interest	****	****	****	****
Indexed	-100	-18	18	-16
Imports - Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Export Price Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Price Subject Countries	97.85	101.70	100.36	98.35
Net Sales Realization of Domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100	105	114	123
Caprolactam Price	56.65	63.62	70.10	89.19
Indexed	100	112	124	157

It is evident from the above that performance of the domestic industry which has been improving till 2003-04 deteriorated again in period of investigation, which could be due to significant increase in dumped imports into India. The domestic industry has made losses in base year, which could be due to variety of factors which includes inter alia storm and earthquake in Gujarat, which is one of the major consumption area for product under consideration. However, subsequently, domestic industry appeared to be improving itself. However, imports from subject countries started



significantly at dumped prices and which appears to be resulted into significant losses to the domestic industry in period of investigation.

### Productivity

76. The productivity of the domestic industry is given in the table below.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Turnover of the domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100	120	135	166
Employees in No	****	****	****	****
Indexed	100	97	106	104
Turnover per Employee	****	****	****	****
Indexed	100	123	127	160
Production	26,019.11	30,158.94	31,302.97	36,100.25
Indexed	100	116	120	139
Productivity per Employee	7.79	9.28	8.81	10.42
Indexed	100	119	113	134
Per day production (350 days)	74.34	86.17	89.44	103.14
Indexed	100	116	120	139
Profit/Loss on Domestic sales	****	****	****	****
Indexed	-100	-44	-15	-42
Interest	****	****	****	****
Indexed	100	124	115	121
Profit/Loss on Domestic sales before interest	****	****	****	****
Indexed	-100	-18	18	-16
Imports - Subject Countries	4,078.00	6,204.00	12,131.00	15,906.00
Export Price Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Price Subject Countries	97.85	101.70	100.36	98.35
Net Sales Realization of Domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100	105	114	123
Caprolactam Price	56.65	63.62	70.10	89.19
Indexed	100	112	124	157

It is evident from the above, productivity of the domestic industry, has been increasing. Thus, this parameter is not a cause for injury to the domestic industry.

Return on Investment

77. Return on investments (profit before interest) shows the same trend as that of profits as is evident from the table below.

Unit: In lakhs

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Profit/Loss on Domestic sales	****	****	****	****
Indexed	-100	-44	-15	-42
Interest	****	****	****	****
Indexed	100	124	115	121
Profit/Loss on Domestic sales before interest	****	****	****	****
Indexed	-100	-18	18	-16
GFA of Domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100	109	118	132
NFA of Domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100	97	98	101
Working Capital of Domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100	107	111	120
Capital Employed - GFA	****	****	****	****
Indexed	100	109	117	131
Capital Employed - NFA	****	****	****	****
Indexed	100	100	102	105
Return on Capital Employed - GFA	****	****	****	****
Indexed	-100	-16	15	-12
Return on Capital Employed - NFA	****	****	****	****
Indexed	-100	-18	18	-15
Imports from Subject Countries	****	****	****	****
Export price - Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Price - Subject Countries	97.85	101.70	100.36	98.35
Demand	32,662	39,332	47,836	57,035

It is noted from the above that Return on capital employed, which has been improving earlier deteriorated in period of investigation.

Capacity, Production and Capacity Utilization

78. The Capacity, Production and Capacity Utilization of the domestic industry has been as under:

Unit: MT

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Capacity	32,640	37,000	43,900	48,200
Indexed	100.00	113.36	134.50	147.67

Production	26,019	30,159	31,303	36,100
Indexed	100.00	115.91	120.31	138.75
Capacity Utilization	79.72	81.51	71.31	74.90
Indexed	100.00	102.25	89.45	93.96
Imports - Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Indexed	100.00	152.12	297.48	400.94
Sales	25,996	29,687	30,922	35,138
Indexed	100.00	114.20	118.95	135.17
Demand	32,662	39,332	47,836	57,035
Indexed	100.00	120.42	146.46	174.62
Export price - Subject Countries Rs/Kg	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Value - Subject Countries Rs/Kg	97.85	101.70	100.36	98.35
Market Share in Demand (%)				
Domestic industry	79.59	75.89	65.11	62.11
Other Indian Producers	6.12	5.08	4.18	3.51
Indian Industry	85.71	80.97	69.29	65.61
Subject Countries	12.49	15.77	25.36	28.67

It is evident from the above, domestic industry has added capacity by converting from PFY to NFY in anticipation of demand of product in India. As per anticipation, demand of the product shows positive trend. However the domestic industry appears to have been forced to curtail the production, which has resulted in decline in capacity utilization apparently due to sharp increase in imports. Post disclosure, M/s FIASWI has argued that capacity additions reported at the year end might have been considered, whereas the effective capacity during the period would be lower. The Authority notes in this regard that the normatted capacity utilization for the domestic industry considered for the purpose of non injurious price is higher than capacity utilization achieved by the domestic industry throughout the injury period. Therefore, it is clear that the domestic industry was faced with unutilized capacity.

#### Factors affecting domestic prices

79. The imports from subject countries are resulting in price undercutting and price underselling in the Indian market. The landed price of imports from subject countries as a whole is significantly below the non injurious price of the domestic industry. It is noted that the exporters from subject countries have not increased their prices, due to increase in raw material price internationally. It is further noted that Nylon Filament Yarn is a petrochemical product and is produced from Nylon Chips, which is produced from Caprolactum and Caprolactam is produced from

Benzene, which is another petrochemical product. Prices of Caprolactum have increased very significantly in the last two years. Increase in prices of Caprolactum is due to increase in Benzene prices, which is due to increase in crude oil prices. Increase in crude oil price is well known international phenomena. It therefore, does not appear likely that producers of subject countries have not got affected due to the increase in Caprolactum prices. Import prices as a % of Caprolactum price is also examined by the Designated Authority from which it was found that earlier, the export price was 43% higher than Caprolactam prices, declined significantly and became just 89% of caprolactam price in the period of investigation. Thus, there is a big fall in the effective realization of the exporters in respect of their exports to India. Further, decline in the CIF export price appears to have a direct adverse impact on the domestic industry and reduction in the landed price of import appears to have been responded by domestic industry by effecting price declines resulting in loss of market share. It is noted that none of the other factors except dumped imports appears to have influenced the pricing of the domestic industry.

#### Magnitude of Dumping Margin

80. The dumping Margin from each of the subject countries has been determined and is considered significant.

#### Inventories

81. Inventories position with the domestic industry has been as under:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Inventories MT	3,087.60	2,931.71	2,847.94	2,362.94
Indexed	100.00	94.95	92.24	76.53
Sales volume MT	25,996	29,687	30,922	35,138
Inventories as % of sales	100.00	114.20	118.95	135.17
Demand MT	32,662	39,332	47,836	57,035
Indexed	100.00	120.42	146.46	174.62
Production MT	26,019	30,159	31,303	36,100
Indexed	100.00	115.91	120.31	138.75
Imports from Subject Countries MT	4,078	6,204	12,131	16,350
Export price - Subject Countries Rs/Kg	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Value - Subject Countries Rs/Kg	97.85	101.70	100.36	98.35

Market Share in Demand (5)				
Domestic industry	79.59	75.89	65.11	62.11
Other Indian Producers	6.12	5.08	4.18	3.51
Indian Industry	85.71	80.97	69.29	65.61
Subject Countries	12.49	15.77	25.36	28.67

It is noted that the sales volume of the domestic industry has increased. The domestic industry appears to have made continued efforts to maintain its sales in line with the increase in demand resulting into piling up of inventory.

#### Cash Flow and Cash Profit

82. All the constituents of the domestic industry are multi product companies; therefore, examination of cash flow of the entire company may not be appropriate for the Injury purposes. The Authority therefore, has examined cash profit situation of the domestic industry, which is given in the following table.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
PBT	****	****	****	****
Indexed	-100	-44	-15	-42
Depreciation	****	****	****	****
Indexed	100	90	104	122
Cash Profit	****	****	****	****
Indexed	-100	-4	65	30
Imports from Subject Countries	4,078	6,204	12,131	16,350
Export price - Subject Countries	80.74	83.91	82.81	80.24
Landed Value - Subject Countries	97.85	101.70	100.36	98.35
Market Share in Demand				
Domestic industry	79.59	75.89	65.11	62.11
Other Indian Producers	6.12	5.08	4.18	3.51
Indian Industry	85.71	80.97	69.29	65.61
Subject Countries	12.49	15.77	25.36	28.67

It is evident from the above that cash profit situation of domestic industry, which has been improving earlier deteriorated during the period of investigation.

#### Employment

83. . Employment level of the domestic industry has been as under:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
--	---------	---------	---------	-----

No. of Employees	****	****	****	****
Indexed	100.00	97.37	106.49	103.79
Sales (MT)	25,996	29,687	30,922	35,138
Employees per unit of Sales	0.13	0.11	0.11	0.10
Production (MT)	26,019	30,159	31,303	36,100
Employees per unit of Production	0.13	0.11	0.11	0.10

It is evident from the above employment level of the domestic industry remained more or less constant. It is however noted that the domestic industry are multi-product companies and therefore, employment levels of the company per se may not be a conclusive indicator of injury to the domestic industry.

#### Wages and Ability to raise capital

84. Wages of the domestic industry has been as under:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Wages	****	****	****	****
Indexed	100	109	114	127
Production	****	****	****	****
Indexed	100	116	120	139
Wages - per unit of production	****	****	****	****
Indexed	100	106	106	110

It is noted from the above that wages of the domestic industry in absolute term have increased. At the same time, production of the domestic industry have increased which resulted into reduction of wages per unit of production.

#### Growth

85. Status of various parameters of growth are given in the Following table.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Sales vis-à-vis demand				
Sales	100.00	114.20	118.95	135.17
Demand	100.00	120.42	146.46	174.62
Production vis-à-vis demand				

Production	100.00	111.69	114.48	128.06
Demand	100.00	120.42	146.46	174.62
Imports vis-à-vis demand				
Imports	100.00	152.12	297.48	400.94
Demand	100.00	120.42	146.46	174.62
Raw material price vis-à-vis export price				
Export Price	100.00	103.94	102.56	99.38
Caprolactam price	100.00	112.30	123.74	157.44
Selling price of domestic industry vis-à-vis landed price of imports				
Selling Price	100.00	105.20	113.90	122.58
Landed Price	100.00	103.94	102.56	99.38
Turnover vis-a-vis profits				
PBT	(100.00)	(44.33)	(14.61)	(41.93)
Sales Value	100.00	120.14	135.48	165.69
Market Share of domestic industry vis-à-vis Market share of subject countries				
Market Share of domestic industry in demand	79.59	75.89	65.11	62.11
Market share of subject countries in demand	12.49	15.77	25.36	28.67
Market Share of Indian industry vis-à-vis Market share of subject countries				
Market Share of Indian industry in demand	85.71	80.97	69.29	65.61
Market share of subject countries in demand	12.49	15.77	25.36	28.67
Productivity vis-à-vis profits				
Productivity	100.00	119.04	112.98	133.67
Profits	(100.00)	(44.33)	(14.61)	(41.93)

The table above shows that majority of the injury parameters have been adversely affected during the injury period and are showing negative growth.

Other Arguments of the other interested parties and their examination by the Authority

86. (i) With regards to the arguments made by M/s FIASWI and others, it is noted that under Rule 6, an association of consumers is permitted to provide information which is relevant to the investigation regarding dumping, injury and causality. It is however noted that barring arguments opposing imposition of anti dumping duties, the association has presented no information that is relevant to the investigation regarding dumping, injury and causality. Nor members of the association have filed relevant information. Most of the submissions with regard to non imposition of anti dumping duties are also mere statements unsubstantiated with relevant evidence. Resultantly, the Authority is unable to verify veracity of the claims/submissions made by the association.

(ii) With regards confidentiality claimed by the Applicants, it is noted that that the petitioners have provided detailed reasons for claiming information confidential. The Authority has examined the claim of confidentiality made by the petitioners and is satisfied with regard to same.

(iii) The Authority notes that IBIS information is not selectively accessible to the petitioners. While IBIS has provided information to the petitioners on confidential basis, it was open for the association to procure the information independently from the IBIS and advance its arguments. While disputing the claim of the petitioners with regard to volume of imports, the Authority notes that the association has preferred to rely upon information published by ASFI, while it was open to the association to consolidate the information by directing its members to provide relevant information to the Authority. In any case, the transaction wise import statements which have been taken into account in the findings had been placed in the public file for the benefit of all interested parties.

Conclusions on injury

87. There has been significant increase in the volume of dumped imports from subject countries at the absolute level and also in relation to total demand of subject goods into India. These imports have increased significantly from the 2001-02 to the POI and these had significant price effect on account of dumped imports resulting into price suppression and price undercutting. In fact, the



prices of the domestic industry have been suppressed on account of dumped imports from subject countries. The undercutting margin has been determined from the subject countries for the POI and are considered as significant. Though the sales volume has increased during the injury period in absolute terms, the domestic industry has suffered significant decline in market share. Sub-optimal increase in respect of a parameters in period of investigation, such as production (36% lower increase than demand), sales volumes (39% lower increase than demand), capacity utilization (6% decline during the injury period), continuous financial losses (losses increase again in POI), further deterioration in financial losses, decline in market share in demand (16.11%), positive price undercutting, negative return on capital employed, significant dumping margin, negative growth in respect of a number of parameters show significant deterioration in the performance of the domestic industry over the injury period. Some parameters such as employment and wages do not reflect injury to the domestic industry. On the basis of the above analysis, it is concluded that the domestic industry has suffered material injury.

#### H. Causal link

##### (a) Introduction

88. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

##### (a) Effect of dumped imports

Significant increase in the volume of dumped imports has resulted significant decline in market share of the domestic industry. Decline in market share of the domestic industry as a consequence of increase in the market share of the dumped imports from subject countries prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate with the increase in the demand in the market. As a result, the sales of the domestic industry did not increase to such an extent that the domestic industry could have optimally utilized its capacity. Consequently, growth in production, sales and

- capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of decline in the market share of the domestic industry.
2. Significant price undercutting caused by the domestic industry prevented the domestic industry from increasing its prices to the extent of increase in inputs costs. Resultantly, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated after showing consistent improvement. Whereas the domestic industry was able to increase its prices significantly and recover from past injuries between the period 2000-01 and 2003-04, the performance of the domestic industry once again deteriorated in the investigation period as compared to 2003-04 due to inability of the domestic industry to effect price increases. It is therefore found that the dumped imports prevented the domestic industry from effecting legitimate price increases.
  3. Significant price undercutting and substantial increase in volume of dumped imports prevented the domestic industry from recovering from past injuries suffered on account of different factors. In fact, performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, return on investment deteriorated once again after improving significantly.

#### Effect of Other factors

##### (a) Performance of Other Domestic producers:

89. There was other domestic producers of the subject goods during the period under consideration apart from the applicant. However, after the preliminary findings, the other producer M/s Century Enka submitted the required information and the Authority verified their cost of production and injury data. Now, the domestic industry includes M/s Century Enka also whose performance through all the 15 parameters have been analysed by the Authority in the earlier paragraphs. Apart from that there is no other domestic industry except for some small companies whose production is minimal.

##### (d) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

90. The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased significantly during the injury period. The Authority also concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(e) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

91. According to the available information, the total import volume of the product concerned originating in countries other than subject countries are de-minimis and therefore, they are considered not to have had any impact on the domestic industry.

(f) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

92. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. The authority further notes that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is further noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses.

(g) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

93. On the basis of the examination of the records of the petitioner, the authority holds that developments in technology, has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

94. With regard to the export performance of the domestic industry, the authority notes that though there has been improvement in the exports of the domestic industry during the period under consideration, it still forms a very not so significant part of the total sales of the domestic industry. It is further noted that the various performance with respect to various economic indicators have been determined with respect to domestic sales only. Hence, the authority holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

95. As regards improvement in productivity, the authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year has rather improved during the injury period. On the basis of the examination, the authority holds that the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

(h) Conclusion on causation

96. Significant increase in the volume of dumped imports has resulted significant decline in market share of the domestic industry. It is further seen that decline in market share of the domestic industry as a consequence of increase in the market share of the subject imports prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate with the increase in the demand in the market. As a result, the sales of the domestic industry did not increase to such an extent that the domestic industry could have optimally utilized its capacity. Consequently, growth in production, sales and capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of decline in the market share of the domestic industry. Significant price undercutting caused by the dumped imports prevented the domestic industry from increasing its prices to the extent of increase in inputs costs. Resultantly, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated after showing consistent improvement. Significant price undercutting and substantial increase in volume of dumped imports prevented the domestic industry from recovering from past injuries which the domestic industry suffered on account of different factors. In fact, performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, return on investment deteriorated once again after improving significantly. It is, therefore, concluded that the dumped imports originating in the subject countries have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

I. Indian Industry interest.

97. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

98. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.

99. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

**J. CONCLUSIONS:**

100. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value.
- B. The Domestic Industry has suffered material injury;
- C. However, no injury has been caused in respect of imports of Nylon flame retardant yarn, Nylon air texturised yarn, Nylon 66 and Nylon 11 yarn, Nylon 170/24 and 280/14 denier yarn used for hook and loop tape fasteners, Nylon 6 monofilament, U.V treated yarn wherever their landed price is higher than Rs 172.per Kg.
- D. The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from Subject Countries.

101. The Authority considers it necessary to impose definitive anti dumping duty on all imports of subject goods from subject countries in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation. At the stage of the preliminary findings, the Authority has recommended one benchmark for different types of product under consideration. It has been heavily argued that this was not proper and interested parties have argued for a number of different benchmarks. However, the Authority notes that it would not be feasible to recommend a number of different benchmarks for the reason that all types of products have not been exported by all the companies. In fact, a number of exporters have exported only few types of the product, whereas the number of products produced and sold by the Foreign Producers in their home market and domestic

industry in Indian market is fairly large. Therefore, it is not possible to determine benchmark for the types not exported to India. Having examined all relevant consideration, the Authority is of the view that the most appropriate form of duty in the facts & circumstances of the present case is fixed amount of anti dumping duty. Accordingly, the Authority considers it appropriate to recommend fixed form of anti dumping duties.

102. Accordingly, the Authority considers it appropriate to recommend to the central government for imposition of definitive anti dumping duties on all types of nylon filament yarns excluding Nylon flame retardant yarn, air texturised yarn, Nylon 66 and Nylon 11 yarn, 170/24 and 280/14 denier used for hook and loop tape fasteners, Nylon 6 monofilament, U.V treated yarn if the excluded subject goods landed price is above Rs 172/kg falling under Custom Heading 54 originating in or exported from subject countries. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975. The Anti-Dumping duty shall be the amount mentioned in column 9 for the subject goods originating in or exported from the countries mentioned below: -

TABLE										
S. No	Sub heading or Tariff Item	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	China PR	M/s Jinan Juda	M/s Jinan Juda	63	Kg	Indian rupees
2	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	China PR	Any except M/s Jinan Juda	Any except M/s Jinan Juda	63	Kg	Indian rupees
3	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Chinese Taipei	Suntex Fiber Co Ltd.	Suntex Fiber Co Ltd.	8.99	Kg	Indian rupees
4	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Chinese Taipei	LIPENG Enterprise Co., Ltd	LIPENG Enterprise Co., Ltd	34.41	Kg	Indian rupees
5	54	Nylon Filament	*as mentioned	Any	Chinese	Any except M/s Suntex	Any except	41.43	Kg	Indian rupees

		yarn	below		Taipei	Fiber Co Ltd. and M/s LIPENG Enterprise Co., Ltd	M/s Sutex Fiber Co Ltd. and M/s LIPENG Enterprise Co., Ltd			
6	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Indonesia	Any	Any	77.93	Kg	Indian rupees
7	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Malaysia	Hualon Corporation	Hualon Corporation	4.24	Kg	Indian rupees
8	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Malaysia	Any except above	Any except above	34.80	Kg	Indian rupees
9	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Thailand	Asia Fiber Public Company Ltd	Asia Fiber Public Company Ltd	25.77	Kg	Indian rupees
10	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Thailand	M/s Thai Taffeta	M/s Thai Taffeta	22.40	Kg	Indian rupees
11	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Thailand	Any except M/s Thai taffeta and M/s Asia Fiber	Any except M/s Thai taffeta and M/s Asia Fiber	32.03	Kg	Indian rupees
12	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Korea RP	Taekwang Industrial Co Ltd	Taekwang Industrial Co Ltd	23.74	Kg	Indian rupees
13	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Korea RP	HYOSUNG Corporation	HYOSUNG Corporation	44.96	Kg	Indian rupees
14	54	Nylon Filament yarn	*as mentioned below	Any	Korea RP	Any except M/s Taekwang Industrial Co Ltd and M/s HYOSUNG Corporation	Any except M/s Taekwang Industrial Co Ltd and M/s HYOSUNG Corporation	51.94	Kg	Indian rupees

15	54	Nylon Filament yam	*as mentioned below	China PR, China se Taipei Malay sia, Indon esia, Thaila nd and Korea RP	Any except China PR, Chines e Taipei, Malaysi a, Indone sia, Thailand and Korea RP	Any	Any	77.93	Kg	Indian rupees
----	----	--------------------------	---------------------------	--	--	-----	-----	-------	----	------------------

\* Synthetic filament yarn including synthetic monofilament of less than 67 decitex, of nylon or other polyamides, excluding all high tenacity yarn of nylon including fishnet yarn of nylon. No anti dumping duty shall be payable on imports of Nylon flame retardant yarn, Nylon air texturised yarn, Nylon 66 and Nylon 11 yarn, 170/24 and Nylon 280/14 denier yarn used for hook and loop tape fasteners, Nylon 6 monofilament, U.V treated yarn if their landed price is above Rs 172/Kg

103. An appeal against the order of the Central government shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the Act.

104. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measures, as recommended herein, from time to time, as per the relevant provisions of the Act, and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Addl. Secy. & Designated Authority